30.00

May 2012

मरयम

बाप की इजाज़त

शौहर-बीवी के आपसी हक़

ख़्वाबों की दुनिया

यह मर्ज़ मर्दों से ज़्यादा औरतों में आम है

फ़ार्म कैसे भरें

ब्रेस्ट-फ़ीडिंग

नए बच्चे नई परवरिश

झूठे दावे

Turn Page for Gift Coupon 41

मरयम

का एक साल पूरा होने के मौक़े पर हम अपने
सब्सक्राइबर्स के लिए लेकर आए हैं

ख़ुशियों की सौग़ात

और शुरू कर रहे हैं

एक स्कीम जिसमें हर महीने 5 ख़ुशनसीबों को मिलेंगे ख़ूबसूरत ज्वैलरी सैट, घर के इस्तेमाल के सामान और भी बहुत कुछ...

बस पढ़ती रहिए मरयम मैगज़ीन और इंतेज़ार कीजिए अपनी बारी का।

**इस महीने जिन 5 ख़ुशनसीबों को
मरयम की तरफ़ से ख़ूबसूरत तोहफ़े दिये जा रहे हैं
उनके नाम यह हैं:**

- Mr. Sitwat Husain, Lucknow
  A-00184
- Miss. Zahida, Kanpur
  A-00664
- Mr. Talib Husain Mazloom, Faizabad
  A-00604
- Mr. Bedar Husain, Godhra
  A-00512
- Mr. Kamran Hasnain, Muzaffar Nagar
  A-00744

فاطمة
كُلَّمَا اشتَقتُ إلى رائِحَةِ الجَنَّةِ
شَمَمْتُ رائِحَةَ ابنَتي فَاطِمَة

20
Jamadi-ul-Sani
Wiladat
Hazrat
FATIMA ZEHRA
a.s.

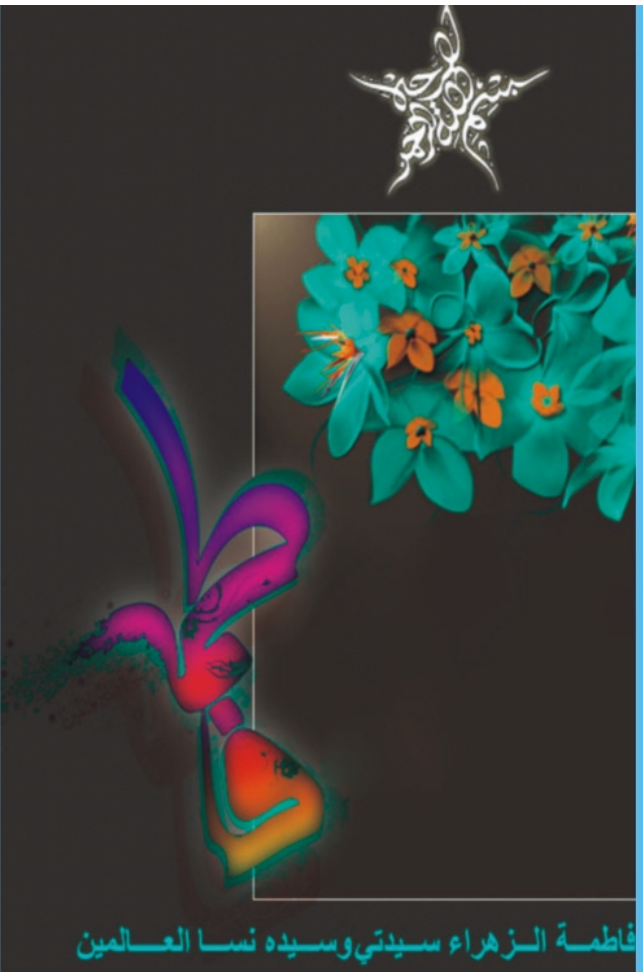

RNI No: Title Code: UPHIN41897

Monthly Magazine

मरयम

Vol:1 | Issue: 3 | May 2012

इस महीने आप पढ़ेंगी...

औरतों की आइडियल	5
पॉज़िटिव और निगेटिव थिंकिंग	8
क्लोनिंग	10
माहौल का असर	13
नूर और हिदायत	14
बरमूदा ट्राइंगिल	16
झूठ क्यों नहीं बोलना चाहिए	18
आयतुल कुर्सी	22
अगला क़दम	24
इमाम सज्जाद[अ0]	26
एहसान	27
शादी की रस्में	29
आदाबे ज़िंदगी	32
युनिवर्स और क्रिएटर	34
प्रेग्नेंसी के बीच	
मां की ज़िम्मेदारियां	36
कोफ़्ते (डिश)	38
रिश्ता (कहानी)	39

Editor
Mohammad Hasan Naqvi

Editorial Board
Nazar Abbas Rizvi
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Fasahat Husain

Assist. Exec. Editor
M. Aqeel Zaidi

Contributors
Imtiyaz Abbas Rizwan
Azmi Rizvi
Batool Azra Fatima
M. Mohsin Zaidi
Tauseef Qambar

Graphic Designer
imagine
Siraj Abidi
9839099435

Typist
S. Sufyan Ahmad

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprieter S. Mohammad Hasan Naqvi printed at Swastika Printwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and published from 234/22 Thavai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017 (Lucknow), +91-9892393414 (Mumbai)
Email: maryammonthly@gmail.com

3 Rajab
Shahadat:
IMAM
ALI NAQI A.S.

बाप की इजाज़त

■ शहीद मुर्तज़ा मुतह्हरी

बाप, लड़की का वली और ज़िम्मेदार होता है लेकिन सवाल यह पैदा होता है कि क्या वह लड़कियाँ जो पहली बार शादी करना चाहती हैं उन्हें अपने बाप की इजाज़त लेने की शर्त है या नहीं?

इस्लाम में कुछ बातें तय हैं

लड़का और लड़की अगर फ़ाइनेंशली सेल्फ़-डिपेंडेंट, बालिग़, आक़िल और रशीद भी हों यानी समाजी लिहाज़ से वह इतने समझदार हों कि जिसकी बुनियाद पर वह अपने माल की हिफाज़त व निगरानी कर सकें तो माँ या बाप, माँ या शौहर, भाई या किसी दूसरे आदमी को उन पर नज़र रखने और उनके मामलात में दख़्लअंदाज़ी का हक़ नहीं हो सकता।

दूसरी बात शादी के बारे में है। औलाद बालिग़ होने की उम्र पर पहुंच जाए और अक़्ल भी रखती हो तो अपने बारे में वह आज़ाद है, किसी को उसके मामलात में दख़्ल देने का हक़ नहीं है। लड़कियों का मामला यह है कि अगर कोई लड़की एक बार शौहर कर चुकी है और अब बेवा है तो वह भी लड़के की तरह आज़ाद है और किसी को उसके मामले में भी दख़्ल देने का हक़ नहीं है। हाँ! अगर ग़ैर शादीशुदा है और उसका पहला निकाह है तो...?

बाप को पूरा इख़्तियार नहीं है और वह लड़की की रज़ामंदी के बिना किसी के भी साथ उसकी शादी नहीं कर सकता। रसूल अल्लाह[स०] के बारे में हमने देखा कि जब एक बाप ने बेटी की राय के बिना उसका निकाह कर दिया तो आपने फ़रमाया, "पसंद नहीं तो दूसरे के साथ शादी कर सकती हो।" उलमा का इस बारे में इख़्तेलाफ़ है कि कुंवारी लड़कियाँ, बाप की रज़ामंदी के बिना शादी का हक़ रखती हैं या नहीं?

बहरहाल एक मसला तो तय है कि अगर बाप बिना किसी वजह के लड़की के निकाह को मना करें तो उनका हक़ (विलायत) ख़त्म हो जाता है। और सारे फ़क़ीह इस बात पर एक राय रखते हैं कि यहाँ लड़की अपने लिए शौहर को चुनने में पूरी तरह आज़ाद है।

रहा यह मसला कि क्या बाप की रज़ामंदी शर्त है, या नहीं? तो हमने बताया कि उलमा में इख़्तेलाफ़ है। शायद अक्सर उलमा ख़ासकर आख़िरी दौर के उलमा बाप की रज़ामंदी को शर्त नहीं मानते हैं, मगर उनमें भी कुछ उलमा इसको शर्त मानते हैं।

मर्दः शहवत का गुलाम

बिन बियाही लड़कियों के लिए कम से कम अच्छा ज़रूर है कि बाप की रज़ामंदी के बिना किसी मर्द से शादी न करें। इसका मतलब यह नहीं है कि लड़की को नाक़िस और समाजी लिहाज़ से उसकी समझ को मर्द से कम समझा गया है। अगर यही बात होती तो सोलह साल की बेवा और अठ्ठारह साल की बिन बियाही में फ़र्क़ क्या होगा, सोलह साल की उम्र वाली बेवा हो मगर बाप की रज़ामंदी की पाबंद न हो और अठ्ठारह साल की बिन बियाही बाप की रज़ामंदी की पाबंद हो। फिर यह बात भी देखिए! अगर लड़की इस्लाम की नज़र में अपने मामलात में कमज़ोर समझी जाती तो एक बालिग़ और समझदार लड़की अपने फ़ाइनेंशल मामलों और माल-दौलत के बारे में बाप, भाई और शौहर के राज़ी होने या उनकी इजाज़त लेने की पाबंद क्यों नहीं है? और उन्हें उसके मामलों में दख़्ल देने का हक़ क्यों नहीं है? उसके हर क़दम सही और वह सबसे बेनियाज़ क्यों है? दरअस्ल यहां एक दूसरी फ़्लासफ़ी है। इस फ़लसफ़े को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

बात औरत में किसी कमी या उसकी अक़्ल और उसकी समझ की नहीं है बल्कि इसका ताल्लुक़ मर्द व औरत की साइकॉलोजी से है। इसका ताल्लुक़ एक तरफ़ मर्द के शिकार पसंदी वाले नेचर और दूसरी तरफ़ औरत के हुस्ने ज़न से है क्योंकि वह मर्द की वफ़ा, सच्चाई और मुहब्बत पर बहुत जल्दी यक़ीन कर लेती है।

मर्द ख़्वाहिशात का गुलाम और औरत मुहब्बत की क़ैदी है। मर्द के पैर शहवत से लड़खड़ा जाते हैं मगर एक्सपर्टस के मुताबिक़ औरत सेक्चुअल

डिज़ायर्स के बारे में मर्द से ज़्यादा पेशंस रखती है। हां! औरत को क़ब्ज़े में करने वाली चीज़ मुहब्बत का इज़हार, वफ़ा और ख़ुलूस है। वह मर्द से यह बातें सुनकर लड़खड़ा जाती है। औरत की ख़ुशफ़हमी यहाँ खुलकर सामने आ जाती है। औरत जब तक बिन ब्याही है, जब तक उसको किसी मर्द का तजुर्बा नहीं हुआ है, उस वक़्त तक वह मर्द की मुहब्बत के नग़मों को बहुत जल्दी सुनती और मानने लगती है।

एक अमरीकन साइकॉलोजिस्ट प्रोफ़ेसर रेग का कहना है, ''औरत-मर्द के लिए दुनिया एक जैसी नहीं है।'' प्रोफ़ेसर लिखते हैं कि बेहतरीन बात जो एक मर्द किसी औरत से कह सकता है वह है, ''आई लव यू।'' फिर रेग ने लिखा कि, ''एक औरत के लिए सबसे बड़ी ख़ुशनसीबी, एक मर्द का दिल मोहना और उसकी ज़िंदगी भर देखभाल है।''

रसूले इस्लाम[स०] इस हक़ीक़त को चौदह सौ साल पहले ही बता चुके हैं। आपने फ़रमाया था, ''मैं तुम्हें चाहता हूँ'', ऐसा जुमला है जो औरत के दिल से नहीं निकलता।''

शिकारी मर्द, औरत की इस साइकॉलोजिकल कमज़ोरी से हमेशा फ़ायदा उठाते हैं। ''हम तो तुम्हारे इश्क़ में मर रहे हैं'' मर्दों के हथकंडों से नावाकिफ़ लड़कियों के लिए यह एक बेहतरीन जाल है।

यहाँ मैं एक वाक़िआ नक़ल कर रहा हूँ जिस से हमें अपने आर्टिकल को किलियर करने में बहुत मदद मिलेगी।

अफ़सर नामी एक औरत ख़ुदकशी करना चाहती है। जव्वाद ने उसको धोखा दे रखा था। बात कोर्ट तक पहुंची और मीडिया में आम हो जाती है। जव्वाद ने अफ़सर को अपना शिकार बनाने के लिए ऊपर वाले फ़ार्मूले से फ़ायदा उठाया। अफ़सर कहती है, ''मैंने उससे बात तो नहीं की मगर हर घड़ी और हर लम्हे उसे देखने को तड़पती थी। मैं तो आशिक़ नहीं थी मगर जिस इश्क़ का इज़हार वह करता था उसकी मेरी रूह को ज़रूरत ज़रूर थी।'' सारी औरतों का हाल यही है कि 'इश्क़' को पसंद करने से पहले 'आशिक़' पर फ़िदा हो जाती हैं। लड़कियों और औरतों की पैदाईश से पहले आशिक़ और उनके बाद इश्क़ पैदा होता है। यह क़ानून मेरे ऊपर भी लागू हो रहा था।''

तर्जुबेकार बेवा पर जब यह हालत छा गई तो ना तर्जुबेकार लड़कियों का हाल क्या होगा? इसीलिए ज़रूरी किया गया है कि मर्द बिन बियाही लड़की से शादी करने के लिए उसके बाप की रज़ामंदी बहेरहाल हासिल करे। बाप मर्दों के एहसासात, जज़बात व साइकॉलोजी को अच्छी तरह पहचानते हैं। इसलिए उनसे मशवेरा फ़ाएदेमंद और ज़रूरी है। ●

किसी का माल हड़प कर लेना

■ सै. कल्बे सिब्तैन नूरी
सेक्रेट्री वहदत पब्लिकेशन
लखनऊ

रसूले ख़ुदा[स०] ने फ़रमाया है, ''अगर कोई इन्सान किसी मोमिन का माल नाहक़ ग़स्ब (हड़प) कर ले तो अल्लाह की तवज्जो उससे हमेशा हटी रहेगी और वह उसके तमाम नेक आमाल से हमेशा नाराज़ रहेगा और जब तक वह तौबा करके उस माल को असल मालिक तक न पहुँचा दे, उस वक़्त तक उसकी किसी नेकी को नेकियों में नहीं लिखेगा।'' (1)

किसी इन्सान के माल या जायदाद को हड़पना वह गुनाह है जिसकी वजह से अल्लाह बंदे की नेकियों को क़ुबूल नहीं करता।

अगर किसी की हड़पी गई या नाहक़ छीनी गई ज़मीन पर हम इबादत करेंगे तो वह इबादत भी क़ुबूल नहीं होगी। वह लोग जो कुछ दिनों की दुनिया को बनाने के लिए दूसरों के माल और ज़मीन-जायदाद को हड़प लेते हैं, वह हक़ीक़त में अपनी आख़िरत को ख़राब करते हैं। ख़ुदा के इस हुक्म में सभी चीज़ें आ जाती हैं चाहे वह किसी का माल धोखे से हासिल कर लेना हो, किसी के मकान या ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेना हो, किसी मकान का किराया अदा न करना हो या फिर किसी की मज़दूरी या तन्ख़्वाह न देना हो।

अगर इन्सान चाहता है कि उसकी नेकियाँ अल्लाह क़ुबूल करे तो उसको हड़पा हुआ माल उसके असल मालिक को लौटाना ज़रूरी है। हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया है कि किसी घर की हलाकत के लिए इतना ही काफ़ी है कि उसमें ग़स्बी या हड़पी हुई एक ईंट लगी हो? ऐसा घर रहमतों और बरकतों से ख़ाली हो जाता है। ●

(1) मुस्तदरकुल वसाएल, जिल्द-3

स्कूल-कालेज एजुकेशनल सेंटर्स या...

■ उज़मा हुसैनी

इस से पहले वाले इशू में हम ने आप लोगों के सामने बच्चे की परवरिश के बारे में बात की थी कि किसी भी बच्चे की परवरिश कम से कम तीन जगहों पर होती है:

1- घर

2- स्कूल या कालेज

3- इसके अलावा वह समाज जिसमें वह ज़िंदगी गुज़ारता है, जैसे पड़ोसी या महल्ले वाले।

इस इशू में हम इस टॉपिक पर बात करेंगे कि किसी बच्चे की परवरिश में उसके स्कूल या कालेज का असर होता है कि नहीं और अगर होता है तो कितना, और किस तरह का।

अच्छा स्कूल

आज हर माँ-बाप को यही फ़िक्र है कि उनका बच्चा शहर के अच्छे से अच्छे स्कूल में पढ़े मगर सवाल यह है कि अच्छा स्कूल कहते किसे हैं?

जहाँ फ़ीस ज़्यादा हो, एडमिशन मुश्किल से होता हो, एडमिशन के लिए डोनेशन देना पड़े, जहाँ शहर के रईसज़ादे पढ़ते हों या उस स्कूल-कालेज का नाम बिकता हो।

मगर इन सब से हटकर पैरेंट्स यह क्यों नहीं सोचते कि क्या एक स्कूल वह सब कुछ जो उसे किसी बच्चे को देना चाहिए, दे रहा है कि नहीं? अगर हाँ तो वह वाक़ई अच्छा स्कूल है। नहीं तो "ऊँची दुकान, फीके पकवान" वाली बात होगी।

सबसे अहम बात यह है कि एक बच्चा जब स्कूल जाता है तो उसके ज़ेहन में यह बात होती है कि वह वहाँ सीखने या कुछ हासिल करने जा रहा है, यह सोच भी नहीं सकता कि वहाँ भी कुछ ग़लत हो सकता है और न ही उसमें इतनी सलाहियत होती है कि वह वहाँ अच्छे-बुरे को अलग कर सके।

बच्चे को स्कूल में जो सेलेबस पढ़ाया जाता है वह तो सबको दिखता है मगर इसके अलावा भी बच्चे को स्कूल से बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

वह तो बस यही जानता है कि स्कूल में जो भी हमें दिया जा रहा है सब सही और अच्छा है।

किसी भी बच्चे को स्कूल में सेलेबस की पढ़ाई के अलावा दो तरह के दूसरे माहोल को भी फ़ेस करना पड़ता है।

स्कूल की परवरिश

एक वह जो स्कूल की मैनेजमेंट की तरफ़ से टीचर्स के ज़रिए उसके लिए प्रोग्राम किया जाता है।

उस पर स्कूल और उसकी मैनेजिंग कमेटी का मक़सद, स्कूल में हावी मज़हब की झलक, टीचर्स और प्रिंसपल की एजुकेशन और उनकी डिग्रियाँ यहाँ तक कि टीचर्स के पर्सनल नेचर का भी असर पड़ता है।

यह वह पॉलीसी है जो स्कूल की तरफ़ से बच्चे के लिए तय की जाती है और ज़रूरी नहीं कि यह पूरी पॉलीसी पैरेंट्स को बता भी दी जाए। मगर हर हाल में बच्चे की ज़िंदगी पर उसका बहुत बड़ा असर पड़ता है।

जैसे आपका बच्चा घर में टी.वी. पर डाँस-इंडिया-डाँस देखता है तो आप बड़े प्यार से उसको यह समझाने की कोशिश करती हैं कि बेटा डाँस नहीं देखते, यह अच्छी चीज़ नहीं है, यह बुरी चीज़ है। इसी बात पर अगर बच्चे ने आप से यह सवाल कर लिया कि अगर बुरी चीज़ है तो स्कूल में क्यों सिखाई जाती है?

आप अपनी बच्ची को कपड़े के एतेबार से यह कल्चर देना चाहेंगी की वह फ़ुल शलवार और जम्पर जैसे इस तरह के कपड़े पहने जिस से उसका जिस्म ढका रहे, जबकि स्कूल-कालेज में उसको शार्ट स्कर्ट पहनना पड़ती है। इस तरह दो कल्चर्स का ज़बरदस्त टकराव बच्ची को कंफ़्यूज़ तो करता ही है साथ में फ़ुल कपड़े तब पहनती है जब घर में होती है और स्कूल जाते वक़्त वह स्कर्ट

पहनती है जहाँ फुल की ज़्यादा ज़रूरत है। इस तरह न सिर्फ़ यह कि उसकी हया और शर्म मर जाती है बल्कि बचपन से ही वह इस कल्चर को फ़ेस कर रही होती है इसलिए इस तरह की हया और शर्म उसमें पैदा ही नहीं हो पाती।

ऐसी बहुत सारी चीज़ें हैं जिसकी वजह से वह स्कूल कि जिसको एजुकेशन और तरबियत का सेंटर होना चाहिए वह बच्चे की घर की भी तरबियत को बर्बाद कर देता है।

माहौल का असर

दूसरा वह माहौल जो स्कूल में बच्चे को अपने दूसरे साथियों से मिलता है। यह माहौल छोटे बच्चों से ज़्यादा बड़ों को ख़राब करता है।

आपका बच्चा अगर ज़रा भी स्टैंडर्ड स्कूल में पढ़ता है तो जैसे ही वह थोड़ा सा बड़ा होगा उसकी डिमांड्स हर रोज़ बढ़ती जाएंगी, आज उसको इस मॉडल का मोबाइल चाहिए तो कल किसी मॉडल की बॉइक... अगर नहीं दिलाते तो बच्चा स्कूल या कालेज जाने से इन्कार कर देता है, क्योंकि वहां सब के पास है और उसके पास नहीं है इसलिए उसको वहाँ शर्मिंदगी फ़ेस करनी पड़ती है। आप अगर दिलाती हैं तो हर रोज़ पैरेंट्स पर ख़र्च का प्रेशर बढ़ता जाएगा क्योंकि यह डिमांड्स ख़त्म होने वाली नहीं हैं, लड़का या लड़की हर रोज़ एक नई चीज़ देखेगी और फ़ौरन उसको लेना चाहेगी।

इस से भी बड़ी चीज़ यह कि जिसकी वजह से बच्चे क़रीब-क़रीब बर्बाद हो जाते हैं वह बेलगाम रईसाज़ादों का माहौल है जिसमें ड्रिंक्स जैसी चीज़ भी आम होती है।

अब ऐसे में हर माँ-बाप को यक़ीनन यह फ़िक्र होगी कि ऐसे हालात और माहौल में कि जहाँ टी. वी., इंटरनेट, ग़लत मैग़्ज़ींस जैसी गुमराह करने वाली इतनी सारी चीज़ें हैं उनके बीच अगर स्कूल

या कालेज से भी कोई ख़ास उम्मीद न रह जाए बल्कि वहाँ भी बहकने के चांसेज़ हों तो अब बच्चे की सही परवरिश कितनी मुश्किल हो जाती है।

इसके अलावा बच्चे के पास इतना वक़्त ही नहीं बचता कि उसकी मज़हबी एजुकेशन के लिए कुछ इंतेज़ाम किया जाए या यह कि माँ-बाप की निगाह में दुनियावी एजुकेशन के सामने मज़हबी एजुकेशन की इतनी वैल्यू ही नहीं होती कि उसके बारे में भी सोचें क्योंकि दुनियावी एजुकेशन से कल को दाल-रोटी की उम्मीद है मगर दीनी एजुकेशन में कोई बहुत ज़्यादा ब्राईट फ़्युचर नज़र नहीं आता इसलिए उसके साथ सौतेलापन बरता जाता है और बहाना यह होता है सुबह से शाम तक स्कूल, ट्यूशन, होम-वर्क और ट्रेवलिंग से बच्चा इतना थक जाता है कि कुछ करने के लाएक़ ही नहीं रह पाता।

अब ऐसे में बच्चे की मज़हबी एजुकेशन और सही परवरिश का क्या होगा?

एक सवाल

वह इस्लाम कि जिसका वादा यह है कि हम तुमको हर काम और हर चीज़ में हिदायत करेंगे वह इस मसले में क्या कहता है? क्या उसके पास इस मुश्किल का कोई हल है और अगर है तो क्या आज के इस मार्डन ज़माने में उस पर अमल किया जा सकता है?

इस्लाम और शरीअत कि जिसका दावा यह है कि वह क़यामत तक के लिए काफ़ी है अगर उसके पास बच्चों की सही एजुकेशन और परवरिश का कोई सिस्टम है और वह आज कामयाब भी हो सकता है तो हम ने उसको क्यों भुला दिया और अगर नहीं है तो फिर हम यह कहना छोड़ दें कि इस्लाम हमेशा के लिए है और उसमें हर मुश्किल का हल मौजूद है।

ख़ुदा से बातचीत

एक दिन मैंने ख़्वाब में देखा कि ख़ुदा से बात कर रहा हूँ। ख़ुदा ने कहा क्या तुम मुझसे बात करना चाहते हो?

मैंने कहा, "अगर आपके पास वक़्त हो तो क्यों नहीं?"

ख़ुदा मुस्कुराकर बोला, "मेरे पास इतना वक़्त है कि हर काम को करने की क़ुदरत रखता हूँ। जो तुम्हारा सवाल है, पूछो।"

मैंने पूछा, "आपको इन्सान की किस बात से सबसे ज़्यादा ताज्जुब होता है?"

ख़ुदा ने कहा, "मुझे इन्सान की इस सोच पर बहुत ताज्जुब होता है कि जब वह बच्चा होता है तो अपने बचपने की वजह से थक कर चाहता है कि जल्दी से बड़ा हो जाए और जब बूढ़ा होने लगता है तो इस तमन्ना में रहता है कि बचपना दोबारा वापस आ जाए। यह इसी तरह है जैसे इन्सान अपनी सलामती को खोकर पैसा चाहता है और फिर पैसे को खोकर सलामती चाहता है। इस तरह के लोग अपने हाल और अपने फ़्युचर को बर्बाद कर देते हैं और उनके हाथ कुछ नहीं आता।"

(इम्तियाज़ अब्बास रिज़वान)

आप बिल्कुल परेशान न हों क्योंकि क़ुरआन का वादा भी सच्चा है और आपके पास आपके बच्चे की सही एजुकेशन और अच्छी परवरिश के लिए ऐसा सिस्टम भी है जो क़यामत तक के लिए काफ़ी है। बस ज़रूरत इस बात की है कि हम उसको अपनी लाईफ़ में शामिल कर लें और उसकी अहमियत को समझते हुए उस पर अमल करने की कोशिश करें, जिस से हमारा समाज एक अच्छे कल्चर का एजुकेटेड समाज बन सके।

इस्लाम और क़ुरआन क्या रास्ता बताता है इन्शाअल्लाह अगले इशू में इस पर ज़रूर बात करेंगे।

हम समझते कम,
समझाते ज़्यादा हैं।

इसलिए सुलझते कम,
उलझते ज़्यादा हैं।

जनाबे मरयम अ०

■ मोहम्मद अब्बास शारिब

इस्लामी हिस्ट्री और तफ़सीरों से पता चलता है कि इस्राईली क़बीले के एक शख़्स क़ोक़ाज़[1] के दो बेटियाँ थीं। एक का नाम हन्ना और दूसरी का नाम ईशा[2] या अश्याअ[3] था। हन्ना की शादी हज़रत इमरान बिन मासान से हुई और उनकी बहन का रिश्ता, हज़रत ज़करिया अ० से हुआ जो पैग़म्बरे ख़ुदा थे। हज़रत इमरान बनी इस्राईल क़बीले के एक नामवर और मशहूर शख़्स थे। आपका नसब हज़रत सुलेमान अ० के ज़रिए, हज़रत इब्राहीम अ० से मिलता है। हज़रत इमरान और हन्ना से जनाबे मरयम अ० इस दुनिया में आईं और हज़रत ज़करिया अ० से हज़रत यह्या अ० पैदा हुए और इस तरीक़े से हज़रत यह्या अ० और जनाबे मरयम अ० आपस में ख़ालाज़ाद भाई और बहन थे।

जनाबे हन्ना की नज़्र और जनाबे मरयम अ० की पैदाईश

सालों साल गुज़र चुके थे, जनाबे हन्ना के यहाँ किसी बच्चे की पैदाइश नहीं हो सकी थी। एक दिन वह एक पेड़ के नीचे बैठी थीं। देखा एक चिड़िया अपने बच्चों को दाने चुगा रही है। माँ की इस मोहब्बत को देखकर उनके दिल में औलाद की मोहब्बत की आग तेज़ हो गई। उसी वक़्त दिल से बारगाहे ख़ुदावंदी में औलाद की दुआ की। न जाने कैसे इश्क़ और ख़ुलूस के साथ आपने दुआ की थी कि दुआ क़ुबूल हो गई।

कुछ रिवायतों में मिलता है कि ख़ुदावंदे आलम ने हज़रत इमरान को 'वही' की कि मैं तुमको एक बेटा अता करूँगा जो नाबीनाओं को आँखों की रौशनी दिया करेगा, लाइलाज मरीज़ों को शिफ़ा बख़्शेगा, मुर्दों को ख़ुदा के हुक्म से ज़िंदा करेगा और उसको बनी इस्राईल के बीच नबी बनाकर भेजूँगा।

हज़रत इमरान ने इस बशारत को जनाबे हन्ना से बयान किया। फिर कुछ ही दिनों के बाद ख़ुदा की दी हुई बशारत प्रेग्नेंसी बनकर सामने आई।

प्रेग्नेंसी के दौरान जनाबे हन्ना ने सोचा कि पेट में पलने वाला, यह वही है जिसकी बशारत दी गई थी, हालांकि वह इस बात से बेख़बर थीं कि पेट में परवान चढ़ने वाला यह वह बेटा नहीं है जिसकी बशारत दी गई थी बल्कि उस बेटे की होने वाली माँ (मरयम अ०) है। यही वजह थी कि आपने मन्नत मानी कि उस बच्चे को ख़ुदा के घर यानी बैतुल मुक़द्दस का ख़िदमतगार बनाएंगी।

"उस वक़्त को याद करो जब इमरान की ज़ौजा ने कहा कि परवरदिगार मैंने अपने पेट के बच्चे को तेरे घर की ख़िदमत के लिए नज़्र कर दिया है। अब तू क़ुबूल कर ले कि तू हर एक की सुनने वाला और नियतों का जानने वाला है।" [5]

इस आयत से साफ़ होता है कि जनाबे मरयम अ० की माँ की मन्नत थी कि अगर ख़ानदान को कोई बेटा होगा तो उसे ख़ुदा के घर का ख़ादिम बनाएंगी और इसकी वजह जो तफ़सीर की किताबों में बयान की जाती है वह यही है कि चूँकि आप बांझ थीं और माँ बनने से मायूस हो चुकी थीं और हमेशा बच्चे के लिए दुआ करती थीं इसलिए उन्होंने मन्नत की कि जब अल्लाह उन्हें औलाद देगा तो उसे ख़ान-ए-ख़ुदा के लिए वक़्फ़ कर देंगी।[6]

जनाबे मरयम अ० की पैदाइश हुई। अब जब उनकी माँ ने देखा कि यह लड़की है तो फिर अपनी मानी नज़्र को याद करके परेशान हुईं कि अब क्या होगा। नज़्र कैसे पूरी होगी। बस ख़ुदा से कहती हैं, "ऐ ख़ुदा! यह तो लड़की है"[7] और फिर कहती हैं "लड़का, लड़की की तरह तो नहीं है।"[8] यानी लड़की तो लड़कों की तरह इबादतगाह की ख़िदमत नहीं कर सकती क्योंकि इबादतगाह और मस्जिद की कुछ डिमांड्स होती हैं और लड़की बल्कि औरतों के भी कुछ अपने मसले होते हैं। लेकिन इसके बावजूद आप ने कहा, "मैंने इसका नाम मरयम रखा है" यानी इबादत ख़ाने की ख़ादिमा, "और मैं इसे और इसकी औलाद को शैताने रजीम से तेरी पनाह में देती हूं।" [9]

आपका अपनी बेटी का नाम मरयम रखना, आपकी अच्छी नियत होने पर दलील है कि आप किस क़दर ख़ुलूसे नियत से अपनी औलाद को अल्लाह के घर का ख़ादिम बनाना चाहती थीं।

बहरहाल ख़ुदावंदे आलम ने आपकी नियत देखकर

जनाबे मरयम[अ॰] से औरतों की ख़ास आदतों को दूर किया ताकि आप बग़ैर किसी रुकावट के हमेशा बैतुलमुक़द्दस में रह सकें। "ख़ुदावंदे आलम ने उसे बहतरीन अंदाज़ से क़ुबूल कर लिया"[10] फिर उन्होंने जनाबे मरयम[अ॰] को बैतुलमुक़द्दस में पहुँचा दिया।

कुछ मुफ़स्सिरों का कहना है कि जनाबे मरयम[अ॰] का ख़ादिमा के तौर पर क़ुबूल होने की निशानी यह थी कि आप ने बालिग़ होने के बाद बैतुलमुक़द्दस की ख़िदमत के दौरान कभी भी पीरियड्स नहीं देखे।[11]

जनाबे मरयम[अ॰] बैतुलमुक़द्दस में

जब जनाबे मरयम[अ॰] बैतुलमुक़द्दस में आईं तो आपकी देख-भाल और परवरिश के सिलसिले से बहस शुरु हो गई क्योंकि आप बनी इस्राईल के एक मशहूर शख़्स की बेटी थीं। इसलिए हर कोई आपकी परवरिश अपने ज़िम्मे लेना चाहता था। जब कोई फ़ैसला नहीं हो पा रहा था तो बात क़ुरा-अंदाज़ी पर आ टिकी। क़ुरा-अंदाज़ी हुई और जनाबे ज़करिया का नाम निकला जो उस वक़्त इबादतगाह के सरपरस्त भी थे। जनाबे ज़करिया आपके सरपरस्त बन गए।

जनाबे मरयम[अ॰] का मुक़ाम

बैतुलमुक़द्दस की ख़िदमत के दौरान जब भी ज़करिया[अ॰] आपके पास जाते थे तो आपके पास तरह-तरह के खाने और रिज़्क़ को देखते थे तो पूछते थे कि मरयम! यह सब कहाँ से आया तो आप फ़रमाती थीं, "यह ख़ुदा की तरफ़ से है और वह जिसे चाहता है बेहिसाब अता करता है।"[12] इस बात से मालूम होता है कि आपका रुतबा इतना बुलंद था कि आपके लिए ख़ुदावंदे आलम की तरफ़ से रिज़्क़ नाज़िल होता था। इसके अलावा आप ही की ज़ात वह है जिसका नाम क़ुरआन मजीद में बीस से ज़्यादा बार आया है और आप ही वह पहली ख़ातून हैं जो बैतुलमुक़द्दस बल्कि ख़ान-ए-ख़ुदा की ख़िदमतगार बनीं।

आपके बारे में मिलता है कि आपको जन्नत में पैग़म्बरे इस्लाम की हमसरी का शरफ़ मिलेगा और आप भी दुनिया की उन कुछ औरतों में से हैं जिनसे फ़रिश्तों ने बात की है। आपके फ़ज़ाएल में से यह भी है कि आपकी परवरिश और तरबियत ख़ुदा ने की। आप जब इबादत के लिए खड़ी होती थीं तो आपके पैरों में वरम आ जाता था। नौ साल की उम्र से ही अपने ज़माने के सारे इबादत गुज़ारों से इबादत में और ज़ाहिदों से दुनिया को छोड़ने में आगे बढ़ चुकी थीं और इसलिए एक आबिदा और ज़ाहिदा के तौर पर मशहूर थीं। इस तरीक़े से इबादत करके आप ऐसे मुक़ाम पर पहुँच गईं थीं कि ख़ुदावंदे आलम ने आपका इंतेख़ाब किया और आपकी पाकीज़गी की बशारत दी और दुनिया की तमाम औरतों पर आपको बरतरी दी। "ख़ुदा ने तुम्हें चुन लिया है और पाकीज़ा बना दिया है और दुनिया की औरतों पर मन्तख़ब क़रार दे दिया है।"

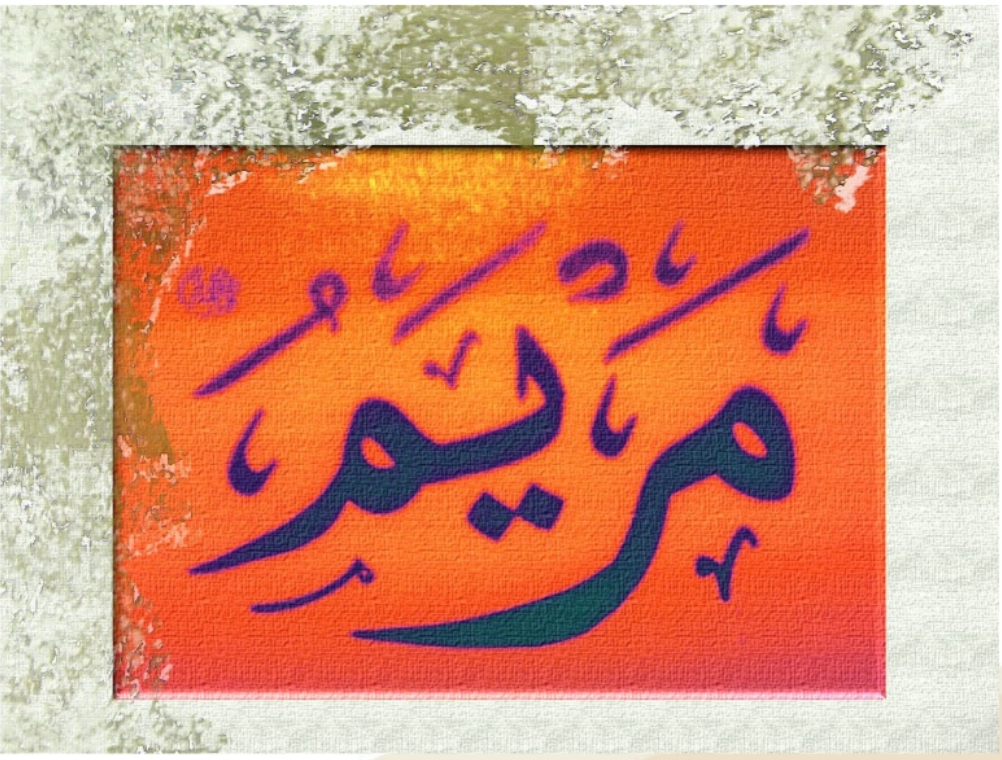

फिर उसी नेमत के शुकराने के लिए ख़ुदावंदे आलम ने आप से कहा, "ऐ मरयम! तुम अपने परवरदिगार की इताअत करो, सजदा करो और रुकू करने वालों के साथ रुकू करो।"[13]

बात सिर्फ़ यहीं पर ख़त्म नहीं होती बल्कि इसके अलावा ख़ुदावंदे आलम ने आपको एक और ख़ुसूसियत दी यानी आपको बग़ैर शौहर के एक नबी की माँ बनने का शरफ़ दिया। जिसके बारे में ख़ुदावंदे आलम ने फ़रमाया, "मैंने मरयम को इबादत की हालत में बशारत दी कि तुम माँ बनोगी जिस तरह से ज़करिया को मेहराब में बशारत दी कि तुम्हें एक फ़रज़ंदे सालेह नसीब होगा जिसका नाम यह्या होगा।"[14]

जनाबे मरयम[अ॰] हज़रत ईसा[अ॰] की माँ

यह बात तो तय है कि आप अल्लाह की तरफ़ से चुनी हुई थीं और यह भी साफ़ है कि ख़ुदावंदे आलम की आपके ऊपर एक ख़ास इनायत थी। इस ख़ास इनायत की वजह से आप दिन बदिन जिस तरह जिस्मानी लिहाज़ से बढ़ रही थीं उसी तरह रूहानी लिहाज़ से भी आगे बढ़ रही थीं।

बहरहाल आपने बैतुलमुक़द्दस के ऐसे गोशे को चुना जो हर लिहाज़ से दूसरों की नज़रों से दूर हो ताकि अपने परवरदिगार के साथ राज़ो नियाज़ कर सकें। क़ुरआन मजीद के मुताबिक़ आपने मस्जिद के पूरबी हिस्से को चुना था।[15] इसी बीच ख़ुदावंदे आलम ने अपनी रूह (जिबरईल) को इंसान की सूरत में भेजा ताकि वह आपको जनाबे ईसा[अ॰] के पैदा होने की बशारत दें।[16] आपने अपने पास एक इन्सान को देखकर डर गईं और ख़ुदा से पनाह माँगी।[17] आपकी यह हालत देखकर जिबराईल ने

अपना तआरुफ़ कराया और फिर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ़ से भेजा गया हूँ ताकि आपको एक पाकीज़ा बच्चे की बशारत दूँ।[18]

जनाबे मरयम[अ०] ने अपनी पाकीज़गी का ख़याल करते हुए कहा कि मैं तो कभी किसी बुरे के पास नहीं गई हूँ तो ऐसा कैसे हो सकता है कि जबकि मैं एक पाकदामन ख़ातून हूँ और कभी कोई ग़ैर अख़लाक़ी काम भी अंजाम नहीं दिया है।[19]

जिबराईल ने कहा कि आपका कहना बिल्कुल सही है लेकिन ख़ुदा के लिए ऐसा करना आसान है और वह चाहता है कि बग़ैर अस्बाब के आप कम करके लोगों के लिए निशानी क़रार दे।[20] और ख़ुदावंदे आलम तो जो चाहता है कि करे वह वुजूद में आ जाती है। फिर कहा देखो ख़ौफ़ज़दा होने की कोई ज़रूरत नहीं है और न ही लोगों (बनी इस्राईल) की बातों से डरने की ज़रूरत है। जब यह बच्चा पैदा होगा और लोग तुम्हारे पाकदामनी में मशकूक हों तो कहना कि मैंने ख़ामोशी का रोज़ा रखा है जो कुछ पूछना है इस बच्चे से पूछ लो।[21] जनाबे ईसा[अ०] की विलादत की दास्तान बहुत लम्बी है क़ुरआन में तफ़सील से बयान हुई है। ख़ुलासा यह कि जनाबे ईसा[अ०] की विलादत हुई। अंदेशे के मुताबिक़ बनी इस्राईल ने आप पर शक किया और तरह-तरह की बातें करना शुरु कीं[22] तो आप ने ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ अमल किया[23] और उस वक़्त जनाबे ईसा[अ०] ने ब-एजाज़ कलाम किया तो लोगों के दाँतों तले उंगली दबी रह गई।[24]

हज़रत मरयम[अ०] की वफ़ात

आप इस दुनिया में 63 साल तक ज़िंदा रहीं। कुछ किताबों में मिलता है कि हज़रत ईसा[अ०] अपनी माँ जनाबे मरयम[अ०] को लेकर कोहे लेबनान (लेबनान के पहाड़) की तरफ़ चले गए और वहाँ रात-दिन को इबादत में बसर करते थे और जो मिल जाता था उसी पर गुज़ारा करते थे।

एक दिन हज़रत ईसा[अ०] पहाड़ से नीचे उतरे। इतने में मौत का फ़रिश्ता, जनाबे मरयम[अ०] पर नाज़िल हुआ और कहा सलाम हो आप पर ऐ मरयम! जनाबे मरयम[अ०] डर गईं और ग़श खा गईं। जब होश में आईं तो मलकुल मौत ने अपने बारे में बताया और कहा कि मैं आपकी रूह क़ब्ज़ करने के लिए आया हूँ।

जनाबे मरयम[अ०] ने कहा, "इतनी छूट दोगे कि मेरा बेटा लौटकर आ जाए और मैं एक बार फिर उसकी ज़ियारत कर सकूँ।" मलकुल मौत ने कहा, "मुझे इसकी इजाज़त नहीं है। ख़ुदा का हुक्म है कि फ़ौरन आपकी रूह क़ब्ज़ करूँ। अब आप ख़ुदा से मुलाक़ात के लिए तैयार हो जाईए।"

जनाबे मरयम[अ०] ने फ़रमाया, "अपने परवरदिगार के हुक्म के आगे हाज़िर हूँ और फिर आप इस दुनिया से रुख़सत हो गईं।"[25]

(1) तर्जुमा व तफ़सीर काशिफ़ जनाब मुग़निया 2/88 (2) तर्जुमा व तफ़सीर काशिफ़, 2/88, ज़िंदगानी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] आयतुल्लाह दस्त ग़ैब/125 (3) तफ़सीरे नमूना, मकारिम शीराज़ी, 2/522, तफ़सीरे नूर, मोहसिन क़राएती, 2/49 (4) हयातुल क़ुलूब, 3/1063 (5) सूरए आले इमरान/35 (6) ज़िंदगानी फ़ातिमा ज़हरा/126 (7-8) सूरए आले इमरान/36 (9) सूरए आले इमरान/ 36 (10) सूरए आले इमरान/37 (11) तफ़सीरे नमूना, 2/527 (12) सूरए आले इमरान/42 (13) सूरए आले इमरान/43 (14) तफ़सीर मौज़ूई क़ुरआन करीम, आयतुल्लाह जवादी आमुली, 7/362 (15-24) मज़मून और मतलबे आयात 16- 17, 18- 19- 20- 21- 25- 28- 29- 30 (25) ज़िंदगानी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा स०, आयतुल्लाह दस्तग़ैब शीराज़ी/134

HK

KAZIM
Zari Art

All Kinds of
Sarees, Suits
& Lehanga Chunri

Hata Dhannu Beg
Kazmain Road Lucknow
Contact No.
0522-2264357, 9839126005
8687926005

الباقر محمد بن علی (ع)

1 RAJAB

WILADAT

IMAM
MOHAMMAD
BAQIR A.S.

السلام علیک یا

शौहर-बीवी के आपसी हक़

बीवी के हक़ शौहर पर

1- नफ़क़ा

नफ़क़ा, इनफ़ाक़ करने और किसी चीज़ के देने को कहते हैं। शरीअत में नफ़क़ा औरत की हैसियत के मुताबिक़ उसके लिए ख़ुराक, लिबास, घर, ज़ीनत व आराईश वग़ैरा के इन्तेज़ाम करने को कहते हैं। ख़ुदा क़ुरआने मजीद में फ़रमाता है, **"मर्द, औरतों के हाकिम और निगराँ हैं उन फ़ज़ीलतों की वजह से जो ख़ुदा ने कुछ को कुछ पर दी है और इस वजह से कि उन्होंने औरतों पर अपना माल ख़र्च किया है। इसलिए नेक औरतें वही हैं जो शौहरों की इताअत करने वाली और शौहर की पीठ पीछे उन चीज़ों की हिफ़ाज़त करने वाली हैं जिनकी ख़ुदा ने हिफ़ाज़त चाही है और जिन औरतों की नाफ़रमानी का ख़तरा है उन्हें मौएज़ा करो।"** (1)

इसी तरह एक और जगह पर है, **"और उनके (औरतों के) साथ नेक बर्ताव करो।"** (2)

एक दूसरी जगह पर है, **"बाप का फ़र्ज़ है कि माओं की रोटी और कपड़े का मुनासिब तरीक़े से इंतेज़ाम करे।"** (3)

नफ़क़ा देना शौहर पर वाजिब है। अगर किसी पर नफ़क़ा वाजिब हो और वह न दे तो शरअी हक़ उसकी गर्दन पर बाक़ी रहेगा। अगर कोई औरत अपनी मर्ज़ी से घर छोड़कर चली जाए तो उसका नफ़क़ा शौहर पर वाजिब नहीं है। मर्द को चाहिए कि वह औरत की हैसियत के मुताबिक़ उसके लिए ज़रूरी चीज़ों का इंतेज़ाम करे यानी जहाँ पर वह रहता है वहाँ जो चीज़ें आम हैं अगर वह ग़ैर शरअी न हों तो उनके ऐतबार से उसका नफ़क़ा देना चाहिए और उसमें ज़्यादा से ज़्यादा की उम्मीद नहीं करना चाहिए। इसी वजह से कहा गया है, "रूहानियत में दूसरों का मुक़ाबला करो, जो तुमसे बेहतर है उस पर नज़र रखो और दुनियावी चीज़ों में अपने से नीचे वाले लोगों को देखो।"

1- मुनासिब सोर्स ऑफ़ इंकम

शौहर को चाहिए कि बीवी और बच्चों के लिए ज़िन्दगी की ज़रूरी चीज़ों का मुनासिब इंतेज़ाम करे। रिवायत में है, "जो भी अपने बीवी-बच्चों की रोज़ी के लिए कोशिश करे तो वह ख़ुदा की राह में मुजाहिद की तरह है।" (4)

यह बात ठीक है कि अच्छे से अच्छे की कोशिश करना चाहिए लेकिन इतनी नहीं कि जब शौहर घर में वापस आए तो थकान की वजह से चूर-चूर हो और उसके पास अपने घर वालों से बात करने का वक़्त भी न हो।

कुछ घरों में शौहर या बाप के वक़्त और आराम को इतनी अहमियत नहीं दी जाती जितनी कि दौलत और ऐशो आराम को दी जाती है।

एक बच्चा जिसके बाप को एक घंटे के काम के 100 रुपये मिलते हैं एक दिन जब बाप काम से वापस आता है तो वह बच्चा अपने बाप से 50 रुपये माँगता है। बाप क्योंकि बहुत थककर आया था इसलिए बच्चे पर गुस्सा करने लगता है और सोचता है कि इस 50 रुपये से वह बच्चा कोई फ़िज़ूलख़र्ची करेगा लेकिन बाद में बच्चे के पास आता है और उसे 50 रुपये दे देता है और उससे पूछता है कि 50 रुपये का वह क्या करेगा? वह बच्चा मेज़पोश के नीचे से 50 रुपये और निकालकर बाप के 50 रुपये के साथ मिलाकर बाप को देता है और कहता है, "कल आप एक घंटे जल्दी काम से वापस आ जाइएगा और यह 100 रुपये उस एक घंटे का है।"

इमाम काज़िम[अ] फ़रमाते हैं, "मर्द को चाहिए अपने बीवी-बच्चो की ज़िन्दगी को बेहतर बनाए ताकि उसके घर वाले उसकी मौत की आरज़ू न करें।" (5)

इन्सान के पास जो हो सिर्फ़ उसी पर सेटिस्फ़ाईड नहीं हो जाना चाहिए बल्कि ज़िन्दगी को बेहतर बनाने के लिए कोशिश करना चाहिए ताकि अपने और अपने घर वालों के लिए अच्छी ज़िन्दगी का इंतेज़ाम कर सके।

2- सेक्स

इस्लाम में ताकीद है कि हर चार रात में से एक रात शौहर को बीवी के साथ गुज़ारना चाहिए। इसकी वजह सेक्चुअल

डिज़ाएर्स का पूरा करना है और दूसरी वजह इसके ज़रिए एक दूसरे को ज़ेहनी सुकून देना है।

3- दीनी मालूमात और अख़लाक़ी बातों की जानकारी देना

शौहर की यह भी ज़िम्मेदारी है कि वह अपनी बीवी को दीनी और अख़लाक़ी बातें भी बताए और उसके लिए ऐसे मौक़े पैदा करे कि वह इन चीज़ों को सीख सके। इस काम को करने के लिए कई रास्ते अपनाए जा सकते हैं।

किताबें ख़रीदना और पढ़ने के लिए शौक़ दिलाना। अगर बीवी एजुकेटेड हो तो ख़ाली वक़्त में दीनी स्टडी की आदत उसके लिए फ़ाएदेमंद होगी।

घर में ऐसा माहौल बनाना कि बीवी ज़रूरत पड़ने पर घर से बाहर जाकर तालीम हासिल कर सके।

शौहर के बीवी पर हक़

1- सेक्चुअल डिज़ायर्स को पूरा करना

बीवी के लिए ज़रूरी है कि अगर शौहर किसी भी वक़्त अपने सेक्चुअल डिज़ाएर्स को पूरा करना चाहे और उसमें कोई मुश्किल भी न हो तो उसको मना न करे।

यूँ तो आम तौर पर क़रीब सभी चीज़ों में (जिसमें ख़ुदा की नाफ़रमानी न हो रही हो) शौहर की इताअत बीवी पर ज़रूरी है लेकिन ख़ास तौर पर सेक्चुअल रिश्ते में इताअत पर बहुत ज़ोर दिया गया है। अकसर मर्द ज़्यादातर घर से बाहर रहते हैं इसलिए हराम और बुराईयों की तरफ़ जाना ज़्यादा आसान है इसलिए उनकी बीवियों से कहा गया है कि कभी भी शौहर की सेक्चुअल डिज़ाएर्स को पूरा करने में कमी न करें और जब भी वह इस डिज़ाएर को पूरा करने के लिए कहे तो उसे पूरा करें।

मगर कुछ ऐसे मौक़े भी हैं जिनमें शौहर को चाहिए कि वह अपनी इस ख़्वाहिश को पूरा करने के लिए बीवी से न कहे।

1- पीरियड्स में
2- माहे रमज़ान में दिन के वक़्त में जब सब रोज़ा रखे हुए हों।
3- ऐहराम की हालत में।
4- शदीद बीमारी की हालत में।
5- जब बीवी प्रेग्नेंट हो। प्रेग्नेंसी की आख़िरी दिनों में सेक्स हराम नही है लेकिन कभी-कभी बच्चे को नुक़सान पहुंचने का ख़तरा रहता है।
6- जब बीवी बहुत थकी हो।
7- अगर शौहर ने नफ़्क़ा अदा न किया हो।
8- उस वक़्त जब बीवी बहुत परेशान हो।

2- शौहर की इताअत

इस्लाम में बीवी पर शौहर का हुक्म मानना ज़रूरी है। रसूले अकरम[सo] के ज़माने में किसी ने आपसे मर्द के हक़ के बारे में सवाल किया कि मर्द का हक़ औरत पर क्या है? आपने फ़रमाया, "शौहर का हक़ बीवी पर यह है कि बीवी शौहर का हुक्म माने और उसकी बिल्कुल ना-फ़रमानी न करे।"

घर से निकलते वक़्त, लोगों से मिलने-जुलने में, सदक़ा देते वक़्त, घर का ख़र्च चलाते वक़्त, और मुस्तहब कामों को करने में बीवी को शौहर की इताअत करनी चाहिए। इस्लाम में इताअत की हद तय है। इसलिए कोई भी ऐसा काम जिसमें बे इफ़्फ़ती या ख़ुदा के हुक्म की ना-फ़रमानी हो उसमें इताअत करने से बिल्कुल मना किया गया है।

3- शौहर के माल और उसके राज़ों की हिफ़ाज़त

शौहर का माल और उसके राज़ों की हिफ़ाज़त औरतों के लिए बहुत ज़रूरी है। क़ुरआने करीम में है, **"(बीवियां शौहर की ग़ैर मौजूदगी में) उन चीज़ों की हिफ़ाज़त करने वाली हैं जिनकी ख़ुदा ने हिफ़ाज़त चाही है।"** (6)

इसलिए बीवी को चाहिए कि शौहर के माल से उसकी इजाज़त के बिना किसी को कुछ न दे वरना अगर शौहर राज़ी न हुआ तो यह गुनाह होगा और यह गुनाह बीवी की गर्दन पर पड़ेगा जबकि इस काम का सवाब मर्द को मिल जाएगा।

4- पाकदामनी की हिफ़ाज़त

जब शौहर घर पर न हो तो बीवी को दूसरों के साथ अपना मेल-जोल कम कर लेना चाहिए और अपनी पाकीज़गी व इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करनी चाहिए। कुछ मर्द अच्छी आदतों के नहीं होते इसीलिए औरतों से कहा जाता है कि वह अपना मेल-जोल ना महरमों से न रखें और अपनी इज़्ज़त व पाकीज़गी को ऐसे ख़राब किरदार वाले मर्दों से बचाए रखें।

5- औलाद की परवरिश

माँ अपना ज़्यादा वक़्त बच्चे के साथ गुज़ारती है इसलिए परवरिश की ज़्यादा ज़िम्मेदारी उसी पर होती है यही वजह है कि बच्चे अपनी फ़ीलिंग्स का इज़हार ज़्यादातर माँ से करते हैं लेकिन बच्चे की परवरिश का हक़ शरई, अक़्ली और कानूनी तौर पर माँ और बाप दोनों पर होता है।

6- घरेलू काम-काज

यह हक़ औरतों के अख़्लाक़ी हक़ में गिना जाता है औरतें जो काम शौहर के घर में करती हैं और उसके मुक़ाबले में कुछ नहीं माँगतीं तो ख़ुदा वन्दे आलम उनको इसका बेहद सवाब देता है और अज़ाब से महफ़ूज़ रखता है। रसूले अकरम[सo] फ़रमाते हैं, "वह औरत जो अपने शौहर के घर में अच्छाई की नियत से किसी चीज़ को इधर-उधर करती है तब ख़ुदावन्दे आलम उस पर रहमत की

एक नेचुरल पेड़

■ सफ़ीना अरफ़ात फ़ातिमा

बच्चे नाज़ुक कोंपलों की तरह होते हैं जिन्हें मां की ममता जैसी शबनम भी चाहिए और बाप की मुहब्बतों की गर्मी भी, मां और बाप, दोनों का भरपूर ध्यान और उनकी मुहब्बतों पर मुहब्बतों का एहसान, उनसे हर वक़्त लिपटा रहे तो वह नेचरल तौर पर परवान चढ़ते हैं, उनकी पर्सनॉलिटी निखर कर सामने आती है। लेकिन मां या बाप दोनों में से किसी एक का प्यार अनबैलेंस्ड और बेलचक हो तो उनकी पर्सनॉलिटी में गिरहें पड़ जाती हैं।

बच्चों की परवरिश सही ढंग से न हुई हो और वह बदतमीज़ व बद अख़्लाक़ हो जाएं तो आम तौर पर मां को क़ुसूरवार ठहराया जाता है क्योंकि बाप तो बेचारा रोज़ी-रोटी कमाने में सारा दिन हलकान हुआ करता है, और घर में सिर्फ़ मां ही रहा करती है, वह बाप के मुक़ाबले में बच्चों के ज़्यादा क़रीब होती है इसलिए कहा जाता है कि मां ने ही बच्चों को बिगाड़ कर रख दिया और उनकी सही परवरिश नहीं की।

यह सरासर ग़लत है कि बच्चों की परवरिश की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ मां पर ही होती है और बाप सिर्फ़ उनकी ज़रूरतों का ज़िम्मेदार है। सच तो यह है कि मां और बाप दोनों पर बच्चों की परवरिश, देखभाल और तरबियत की ज़िम्मेदारी लागू होती है। दोनों के आपसी तालमेल और समझदारी से एक दूसरे का साथ निभाते हुए बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए।

बारिश हो रही हो या धूप झुलसा रही हो, तकलीफ़ों की परवाह किए बग़ैर कोई मर्द सारा दिन मेहनत व मज़दूरी करके अपने बीवी-बच्चों के मुंह में कुछ लुक़मे डालता हो तो उसका यह अमल बहुत सवाब रखता है। बीवी बच्चों और दूसरे ख़ानदान के लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए दौड़ धूप अच्छी बात है। लेकिन मर्द की सिर्फ़ इतनी ही ज़िम्मेदारी नहीं है कि वह रुपये कमाए और घर वालों के हवाले कर के चुपचाप चला जाए। उसकी अपने घर में बड़े और बुर्ज़ुग की हैसियत है। उसे अपनी बीवी के अलावा बच्चों की अख़्लाक़ी परवरिश की तरफ़ भी ध्यान देना चाहिए। खाने - पीने, पहनने - ओढ़ने के अलावा भी ख़ानदान के लोगों की दूसरी और ज़रूरतें होती हैं जिनको पूरा करने की ज़िम्मेदारी मर्द ही की है। उसके ऊपर अपने फ़ैमिली के लोगों पर सिर्फ़ पैसा ख़र्च करने की ज़िम्मेदारी ही नहीं है बल्कि उसे समाजी और जज़्बाती तौर पर भी उनको सुकून पहुंचाना और उनका ख़्याल रखना है। बच्चों को अच्छे स्कूल में दाख़िला दिलवा कर हर माह उनकी फ़ीस भरकर यह नहीं सोचना चाहिए कि उनकी तालीम व परवरिश की ज़िम्मेदारी पूरी हो गई। उन्हें स्कूल में कुछ मसाएल का सामना हो सकता है, वह अपने ही घर में जज़्बाती तौर पर अनसिक्योरनेस का शिकार हो सकते हैं, उन्हें अपने ही बहन भाईयों के बर्ताव से शिकायत हो सकती है, बाप की उलझनों और मसाएल को न समझते हों, उनसे दूर हों। उनकी जिस्मानी ज़रूरतों को पूरा करने के साथ-साथ उनकी रूह के सुकून का भी ख़्याल रहे। बच्चों के लिए सिर्फ़ मां की ममता काफ़ी नहीं उन्हें बाप का प्यार और मुहब्बत भी चाहिए। बाप के बर्ताव में लचक न हो और वह हर दम सख़्ती करे तो बच्चे अपने और बाप के बीच एक दीवार महसूस करते हैं।

बाप अपनी हैसियत और वक़ार को बरक़रार रखते हुए बच्चों का दोस्त बन जाए, उनकी उदासियों को अपनी उंगलियों की पोरों पर समेट ले। उनकी ख़ुशियों में आने वाली रुकावटों को दूर कर दे। उन्हें हर दम यह महसूस कराए कि वह अकेले नहीं हैं, वह उनके साथ है हमेशा, दुख में, सुख में, हर हाल में, हर मौसम में। ●

नज़र डालता है और उसे अज़ाब से अमान में रखता है।" (7)

7-शौहर के लिए ख़ुद को संवारना

औरत को घर में अच्छे लिबास पहनने और ख़ुश्बू लगाने को कहा गया है और इसके साथ ही साथ औरत को बाहर सज-संवर के जाने से मना भी किया गया है और कहा गया है वह सिर्फ़ अपने शौहर के लिए मेकअप करे और ख़ुद को तैयार करे, उसको चाहिए कि अच्छे लिबास पहने और इस तरह तैयार रहे जिस तरह उसके शौहर को पसन्द हो। रसूले इस्लाम[सo] फ़रमाते हैं, "औरत को चाहिए कि अपने शौहर के लिए बेहतरीन इत्र लगाए, सबसे बेहतर लिबास पहने और सबसे मुनासिब आराईश व ज़ीनत से अपने आपको सजाए।" (8)

1-सूरए निसा/34, 2-सूरए निसा/19, 3-सूरए बक़रा/233, 4-फ़िक़-ए-रेज़ा, 255, 5-उसूले काफ़ी, 4/11, 6-सूरए निसा/34, 7-वसाएल, चेप्टर/67 हदीस/1, 8-वसाएल, चेप्टर/79 हदीस/2 ●

इस्लाम और बदलती दुनिया

■ शहीद मुरतज़ा मुतह्हरी

मज़हब और तरक़्क़ी ऐसा सब्जेक्ट है जो हम मुसलमानों से पहले और हम से ज़्यादा दूसरे मज़हबों और मज़हब वालों के सामने आता रहा है। दुनिया के बहुत से ओपन माइंडेड लोग इसलिए मज़हब छोड़ बैठे कि उनके ख़्याल में मज़हब और आए दिन बदलती हुई ज़िंदगी में जोड़ नहीं बैठता यानी यह चीज़ें दोनों एक दूसरे का साथ नहीं दे पातीं। उनकी सोच में दीनदारी का मतलब ठहराव और सुकून है और मज़हब मूवमेंट और बदलाव से हमेशा टकराता रहता है।

हिन्दुस्तान के पहले प्राइम मिनिस्टर पंडित नहरू, मज़हब के खिलाफ़ थे और ख़ुद उनके कहने के मुताबिक़ किसी दीन व मज़हब के क़ायल नहीं थे। उनकी बातों से महसूस होता है कि वह मज़हब के ठहराव और उसकी एक जैसी सोच से बेज़ार हो गए थे। पंडित नेहरू ज़िंदगी के आख़िरी दौर में अपने अंदर और पूरी दुनिया में एक ख़ालीपन महसूस करने लगे थे। उनके ख़्याल में यह ख़ालीपन रूहानी ताक़त ही से भर सकता था। इसके बावजूद मज़हब की ठहरी हुई सोच की बिना पर अपने ख़याल में हर मज़हब से घबराते थे।

एक रिपोर्टर करन जीव ने उनकी आख़िरी उम्र में एक इंटरव्यू लिया था। शायद यह उनके आख़िरी नज़रियात थे जो दुनिया के हालात पर उन्होंने ज़ाहिर किए थे। करन जीव, गांधी जी के बारे में उनसे बातें करते हुए कहता है, "कुछ खुली सोच रखने वालों का ख़्याल है कि गांधी जी ने आपके ज़ेहनी और रूहानी एहसासात में तबदीली पैदा की थी और आपकी सोशलिज़्म वाली सोच को कमज़ोर कर दिया था?"

पंडित नेहरू ने कहा, "...रूहानियत से फ़ायदा उठाना ज़रूरी और अच्छा है। मैं इस बारे में गांधी जी के अक़ीदे को मानता था और अब उन चीज़ों से फ़ायदा उठाने को ज़्यादा ज़रूरी समझता हूँ। इस दौर में रूहानी गैप की वजह से नए कल्चर ने अपनी जगह बना ली है। हमें कल के मुक़ाबले में आज रूहानियत से जवाब लेने की ज़रूरत ज़्यादा है।"

करन जीव, मारकेसिज़्म के बारे में सवाल करता है और पंडित नेहरू मारकेसिज़्म की कमियों को गिनाते हुए दोबारा इसी रूहानियत की बात करने लगे। करनजीव ने सवाल किया, पंडित नेहरू! इस वक़्त आपकी बातों से यह लगता है कि आपकी सोच के मुताबिक़ अख़्लाक़ी व रूहानी तरीक़ों से मसाएल का हल निकाला जा सकता है, तो क्या आज के और कल के जवाहर लाल नेहरू में कोई फ़र्क़ नहीं पैदा हुआ? आपकी बातों से अंदाज़ा होता है कि पंडित नेहरू उम्र के सूरज ढलते, ख़ुदा की तलाश में निकल खड़े हुए हैं।"

नेहरू जी ने कहा, "हाँ! बदलाव तो आया है। मुश्किलों को हल करने के बारे में जिस अख़लाक़ी व रूहानी कसौटी की बात कर रहा हूँ वह हवा में नहीं कह रहा हूँ...।"

अब यह सवाल है कि अख़लाक़ व रूहानियत को ऊँचाई पर लाया कैसे जाए।

इसका जवाब उन्होंने ख़ुद ही दिया। "सामने की बात है इस मक़सद के लिए मज़हब मौजूद है। अफ़सोस! मज़हब छोटी सोच और रस्म व रिवाज और एक बेजान जिस्म बन चुका है। जिसमें अब ज़ाहिरी शक्ल व सूरत और ऊपरी ख़ोल बचा है। इसकी रूह और हक़ीक़ी मक़सद तो ख़त्म हो चुका है।"

इस्लाम और वक़्त की ज़रूरतें

दुनिया भर के मज़हबों और दीनों में से किसी मज़हब ने इंसान की ज़िंदगी में इतना दख़ल नहीं दिया जितना इस्लाम ने दख़ल दिया है। इस्लाम ने अपने क़ानून में कुछ इबादतों और दुआओं या सिर्फ़ अख़लाक़ी नसीहतों ही को नहीं रखा है। वह तो जिस तरह अल्लाह और बंदे के रिलेशन पर रोशनी डालता है उसी तरह ख़ुदा के बंदों के आपसी तअल्लुक़ात, इंसानों के आपसी रिश्ते, उनके राइट्स, ज़िम्मेदारियाँ और एक इन्सान के दूसरे इन्सान, एक इन्सान के समाज से तअल्लुक़ात को भी दिखाता और बताता है। इसी वजह से इस्लाम

क्विक कुकिंग टिप्स

रेडी टू कुक

■ राज़िया रिज़्वी

1- सबसे ज़रूरी बात बावर्चीख़ाने में सभी खानों का सामान जैसे दाल, चावल, सिवइयाँ, कस्टर्ड, मिल्क पाउडर, फ़्रोज़न मटर रेडी टू ईट सैशे में होना चाहिए।

2- लहसुन की चटनी को कई दिन तक इस्तेमाल में लाने के लिए लहसुन, नमक, मिर्च, ज़ीरा या भुनी मूँगफली मिक्सर में पीस लें। यह चटनी कई दिनों तक चल सकती है (एयरटाइट डिब्बे में रखें)।

3- बच्चे-बड़े सभी भीगे बादाम खाते हों तो एक बार में ज़्यादा भिगोकर फ़्रिज में रखें और रोज़ छीलकर इस्तेमाल करें।

4- बार-बार पनीर लाना मुश्किल होता है। इसलिए पनीर के छोटे टुकड़े करें और तेल में डीप-फ़्राई कर लें। ज़्यादा लाल करने की ज़रूरत नहीं है। फिर उन्हें डीप-फ़्रीज़र में रख दें। 15-20 दिन पनीर आराम से चल सकता है।

5- घर में अकसर खिचड़ी पकती है। ख़ाली वक़्त में दाल-चावल चुनकर मिलाकर रखें। जब दिल चाहे, खिचड़ी बना लें।

6- दलिया और रवा को भून कर रखा जा सकता है।

7- आलू उबाल कर फ़्रिज़ में रख लें। छीलें उस वक़्त जब बनाना हो। 3-4 दिन ख़राब नहीं होते।

8- इसी तरह लहसुन, प्याज़, अदरक का पेस्ट भी मिक्सर में पीसकर एयर-टाइट डिब्बे में रखें। 8-10 दिन इस्तेमाल में लाया जा सकता है।

9- दालें जैसे मटर, चना, खड़ी मसूर वग़ैरा बनानी हो तो रात में भिगोकर फ़्रिज में रख दें। खाने से आधा घंटा पहले निकाल कर पकाएं। इससे गैस और वक़्त दोनों की बचत होगी। ●

में ''वक़्त'' के साथ चल सकने की ताक़त ज़्यादा मौजूद है।

इस्लाम से बाहर की दुनिया के बहुत से लोगों ने समाजी और शहरी क़ानूनसाज़ी के नज़रिए से इस्लाम को स्टडी किया है। उन लोगों ने इस्लामी क़ानूनों को रिफ़ार्मेस्ट माना है। उनके ख़याल में इसी बुनियाद पर इस्लाम हमेशा ज़िंदा रहने वाला मज़हब है, उसके क़ानूनों में इतनी सलाहियत है कि ज़माने की तरक़्क़ी के साथ उनको जोड़ा जा सके। इसीलिए जार्ज बरनॉड शाह ने कहा है, ''मैं हमेशा दीने मुहम्मद[स०] का एहतेराम इसलिए करता हूँ क्योंकि उसमें ज़िंदा रहने की ताक़त है। मेरी नज़र में सिर्फ़ इस्लाम ही एक ऐसा रास्ता है जो नए-नए हालात व पल-पल बदलने वाली ज़िंदगी में जोड़ पैदा कर सकता है और ऐसा सदियों से होता आ रहा है।''

''मैं पेशिनगोई करता हूँ कि जैसा कि अभी भी दिखाई दे रहा है, आने वाले यूरोप में मोहम्मद[स०] के पैग़ाम को हर तरफ़ क़ुबूल किया जाएगा।''

''*मिडिल एज* के स्कालर्स जिहालत या ताअस्सुब की वजह से मुहम्मदी[स०] क़ानूनों को ग़लत नज़र से देखते रहे। उन्होंने लोगों में नफ़रत और दुश्मनी पैदा करके रसूले इस्लाम को ईसा मसीह[अ०] के ख़िलाफ़ बताया। मैंने मोहम्मद[स०] की शख़्सियत के बारे में स्टडी की तो मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि सिर्फ़ यही नहीं कि वह मसीह[अ०] के ख़िलाफ़ नहीं थे बल्कि इन्सानियत को निजात देने वाला, कहना चाहिए। मेरा अक़ीदा है कि अगर उन जैसा आज की दुनिया में आ जाए तो दुनिया की मुश्किलों और मसलों का हल यूँ निकाल दे कि दुनिया इन्सानी ख़ुशबख़्ती का गहवारा बन जाए।''

डाक्टर शिबली शुमैली लेबनानी अरब स्कॉलर ने पहली बार डारविन की थ्योरी का अरबी में ट्रांसलेशन किया और मज़हबी अक़ाएद पर हमला बताते हुए अरबी ज़बान जानने वालों के सामने पेश किया।

वह मेटीरियालिस्ट होने के बावजूद, इस्लाम की अच्छाईयों और ख़ूबियों की तारीफ़ किए बिना न रह सका। उसने इस्लाम पेश करने वाले रसूल की तारीफ़ की और इस्लाम को हमेशा ज़िंदा रहने वाला क़ानून और ज़माने के मुताबिक़ क़रार देते हुए उसकी बहुत तारीफ़ की।

अपनी किताब 'फ़्लॉस्फ़ी ऑफ़ इवुलूशन पार्ट-2' में उन्होंने एक आर्टिकल छापा है, 'अलक़ुरआन वल उमरान' जिसमें उन्होंने एक ऐसे टूरिस्ट के नज़रिए को ग़लत साबित किया है जो इस्लामी मुल्कों में आया था और वहाँ की बुरी हालत की वजह उसने इस्लाम को बताया था।

शिबली शुमैल ने अपने आर्टिकल में मुसलमानों की बदहाली की वजह उनकी इस्लामी से दूरी को बताया है और कोशिश करके साबित किया है कि इस्लाम के समाजी उसूलों को छोड़ने की वजह से यह बदहाली आई है, इस्लाम से नहीं। उसने कहा कि पश्चिम के लोग जो इस्लाम पर हमला करते हैं वह या तो इस्लाम को नहीं जानते या उनकी नियत अच्छी नहीं है। वह पूर्वी लोगों के दिलों से उन क़ानूनों से दिलचस्पी ख़त्म करना चाहते हैं जो ख़ुद उनकी ज़मीन से उभरे हैं। वह अपनी ग़ुलामी का तौक़ उनकी गर्दन में डालना चाहते हैं। ●

औरतों का नर्म लहजे में बात करना

■ अन्जुम काज़मी

"ऐ नबी की बीवियो! तुम अगर तक़वा इख़्तियार कर लो तो तुम्हारा मर्तबा किसी आम औरत जैसा नहीं है। इसलिए किसी आदमी से लगी-लिपटी बात न करना कि जिसके दिल में बीमारी हो उसे लालच पैदा हो जाए और हमेशा नेक बातें किया करो।" [1]

अल्लाह तआला ने जिस तरह औरत के अंदर मर्द के लिए जिंसी कशिश रखी है, जिसकी हिफ़ाज़त के लिए भी ख़ास हिदायतें दी गई हैं ताकि औरत मर्द के लिए फ़ितने की जड़ें न बनें इसी तरह अल्लाह तआला ने औरतों की आवाज़ में भी फ़ितरी तौर पर दिलकशी, नर्मी और नज़ाकत रखी है जो मर्द को अपनी तरफ़ खींचती है। उसे ऐसी आवाज़ के लिए भी यह हिदायत दी गई है कि मर्दों से बात-चीत करते वक़्त जानबूझ कर ऐसे लहजे में बात करें जिनमें नर्मी और मिठास की जगह कुछ सख़्ती और रूखापन हो। ताकि किसी की बुरी नियत लहजे की नर्मी और मिठास से तुम्हारी तरफ़ मायल न हो और उसके दिल में बुरा ख़्याल पैदा न हो।

यह रूखापन, सिर्फ़ लहजे की हद तक ही हो, ज़बान से ऐसा लफ़्ज़ मत निकालना जो अच्छे क़ायदे और अख़्लाक़ के ख़िलाफ़ हो। 'तक़वा इख़्तियार कर लो' कह कर इशारा कर दिया कि या बात और दूसरी हिदायतें क़ुरआन व हदीस में हैं वह परहेज़गार औरतों के लिए हैं, क्योंकि उन्हें ही यह फ़िक्र होती है कि उनकी आख़िरत बर्बाद न हो जाए। जिनके दिल खुदा के डर से ख़ाली हैं, उनका उन हिदायतों से क्या रिश्ता? और वह कब उन हिदायतों की परवाह करती हैं?

नोटः जैसा कि इंटरनेट एक दुनिया की तरह है, यह भरे बाज़ार की तरह है, अगर आप इसमें दाख़िल होंगी तो आप पर भी हर वह खुदा का हुक्म लागू होगा जो कि बाहर की दुनिया में आप पर नाज़िल होता है, जैसेः

बाहर की दुनिया में पर्दे का हुक्म है तो नेट की दुनिया में भी पर्दे का हुक्म है कि आप अपनी तस्वीर किसी को न भेजें।

बाहर की दुनिया में किसी ना महरम से बात करना मना है तो यही क़ानून नेट की दुनिया में भी लागू होता है।

किसी ना महरम से बात करना या सिर्फ़ उसकी आवाज़ भी सुनना गुनाह है जो हर मर्द व औरत पर ज़रूरी है कि उससे बचे।

ख़ास करके चेटिंग के बारे में सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि अलफ़ाज़ आपकी ज़बान और दिल का हाल बयान करते हैं, अगर आप ना मेहरम से नर्म लहजे में बात करेंगी तो वह आपके दिल का हाल बयान करेगा और उससे फ़ितना पैदा होगा जो कि इस्लाम में बिल्कुल जायज़ नहीं है।

हर वह हुक्म जो बाहर की दुनिया में औरतों पर लागू होता है उसी की बुनियाद पर नेट पर भी लागू होता है।

इंटरनेट एक बाज़ार है वहां पर जाने से पहले बड़ी सावधानी करनी पड़ती है क्योंकि एक ग़लती की वजह से इज़्ज़त जाने का ख़तरा रहता है।

अगर आप बाज़ार में जाएंगी तो आपको इस्लाम के दायरे से मजबूरी की हालत में निकलना पड़ेगा तो उसी तरीक़े से नेट भी एक दुनिया है जहाँ जाने पर आपको दीन की ख़ातिर अपने आपको शरीअत के दायरे में ढांपने की बहुत ज़रूरत है।

मैं उम्मीद करता हूं कि जिस बहन ने भी मेरे इस पैग़ाम को पढ़ा होगा वह कोशिश करेगी कि किसी भी तरह अपने आपको इस्लाम के दायरे से बाहर न करे क्योंकि जवाब देने के लिए तो हर इंसान अल्लाह के सामने ही है।

ना मेहरम मर्द हो या औरत क़ानून सब पर ही लागू होता है। हर अच्छे और अल्लाह से डरने वाले मुसलमान को इन अल्लाह के क़ानूनों पर चलना होगा ताकि आख़िरत में अल्लाह की ज़ात के सामने ख़ुश होने का मौक़ा मिल सके। इंशाअल्लाह।

1- अहज़ाब/32

सै. आले हाशिम रिज़वी
aleyhashim@yahoo.co.in

ख़्वाबों की दुनिया

चंद लम्हों के लिए होता है ख़्वाबों का सफ़र
खुलती है आँख तो सदियों की थकन होती है

नींद और ख़्वाब का बहुत गहरा ताल्लुक़ है। हम सभी सोते वक़्त ख़्वाबों की दुनिया की सैर करते हैं। आमतौर से ख़्वाबों का कनेक्शन हमारी डेली लाइफ़ के वाक़िआत, ख़्वाहिशों और जज़्बात से होता है। किसी सोते हुए इन्सान के पास बैठकर हम उसके चेहरे के एक्सप्रेशन से यह अंदाज़ा लगा सकते हैं कि वह ख़्वाब देख रहा है। एक रिसर्च के मुताबिक़ इन्सान अपनी नींद के दौरान लगभग हर डेढ़ घंटे के बाद एक ख़्वाब देखता है और एक नार्मल नींद में 4 से 7 ख़्वाब आते हैं। ख़्वाब हर कोई देखता है लेकिन जागने के बाद बहुत कम लोग ही उसे ठीक तरह से याद रख पाते हैं। हमें ज़्यादातर वही ख़्वाब याद रहते हैं जिन्हें देखने के दौरान नींद टूट जाती है। एक्सपर्ट्स कहते हैं कि जागने के कुछ मिनटों के बाद ही इन्सान आधे से ज़्यादा ख़्वाब भूल जाता है। ब्लाइंड लोग भी आम इन्सानों की तरह ही सोते वक़्त ख़्वाब देखते हैं लेकिन ख़ास बात यह है कि जो लोग बाइ-बर्थ अंधे होते हैं उन्हें ख़्वाबों में कुछ नज़र नहीं आता बल्कि सिर्फ़ साउंड ही सुनाई देती है। वह ख़्वाबों को सिर्फ़ सुनते और फ़ील करते हैं।

हमारी आँखें रोज़ाना सैकड़ों-हज़ारों रंगों का नज़ारा करती हैं मगर हैरानी की बात यह है कि हमारे ज़्यादातर ख़्वाब ब्लैक एंड वॉइट ही होते हैं। ऐसा नहीं है कि ख़्वाब में काले और सफ़ेद रंग के अलावा और कोई रंग दिखाई नहीं देता लेकिन यह सच है कि ऐसा बहुत कम होता है। जब इन्सान कच्ची नींद के दौरान ख़्वाब देखता है तो उसके आस-पास जो कुछ हो रहा होता है वह उसके ख़्वाब का हिस्सा बन जाता है। मिसाल के तौर पर अगर सोने वाले इन्सान के पास कोई बोल रहा होता है तो ख़्वाब में उसे वह आवाज़ें किसी अलग अंदाज़ में सुनाई देने लगती हैं। दरवाज़े की कॉलबेल या मोबाइल की रिंगटोन जैसे साउंड भी अक्सर ख़्वाब का हिस्सा बन जाते हैं। ख़्वाबों की दुनिया कभी ख़ूबसूरत तो कभी डरावनी और कभी काफ़ी अटपटी सी भी होती है, जिसे बयान करना आसान नहीं होता है। इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने ख़्वाबों की तीन क़िस्में बयान की हैं: (1) मोमिन के लिए ख़ुदा की तरफ़ से किसी ख़ुश्ख़बरी का इशारा (2) शैतानी ख़्वाब जो डरावने और झूठे होते हैं (3) इन्सान के अपने ख़यालात पर बेस्ड ख़्वाब। पहली क़िस्म के ख़्वाबों के सिलसिले में रसूले इस्लाम[स०] फ़रमाते हैं कि मोमिन के लिए नेक ख़्वाब उस ख़ुश्ख़बरी के जैसे हैं जिसे वह अपनी ज़िंदगी में देखता है और ख़ुश होता है। इसके अलावा झूठे और बुरे ख़्वाबों के बारे में रसूल फ़रमाते हैं कि ऐसे ख़्वाबों का कोई असर नहीं होता। यह झूठे ख़्वाब रात के शुरुआती हिस्से में दिखाई देते हैं और शैतानी होते हैं। आख़िरी ज़माने में मोमिन का कोई ख़्वाब झूठा या शैतानी नहीं होगा बल्कि जो शख़्स जितना सच्चा होगा उतने ही उसके ख़्वाब सच्चे होंगे।

ख़्वाब की ताबीर बताना आसान नहीं है। यह एक इल्म है जिसकी नॉलेज हर किसी को नहीं होती है। हमारे नबियों और इमामों के पास इसकी कम्पलीट नॉलेज थी। इसके अलावा वह मोमिन जो दीन-दुनिया दोनों का इल्म रखते हैं और अक़्लमंद होते हैं वह भी काफ़ी हद तक सही ताबीर बता सकते हैं लेकिन उनकी ताबीर भी 100% सही नहीं होती। ख़्वाब और उसकी ताबीर का ज़िक्र क़ुरआन में कई जगह मौजूद है। सूरए यूसुफ़ के मुताबिक़ "हज़रत यूसुफ़[अ०] ने अपने वालिद से कहा कि ऐ बाबा! मैंने एक ख़्वाब में ग्यारह सितारों और चाँद-सूरज को देखा है जो मेरा सजदा कर रहे हैं। इसके अलावा क़ुरआने मजीद में हज़रत इब्राहीम[अ०] के उस ख़्वाब का भी ज़िक्र है जिसमें उन्हें अपने बेटे हज़रत इस्माईल[अ०] को ज़िबह करने का हुक्म मिला था। इस्लामी हिस्ट्री में ऐसे कई

Dream!

ख़्वाब दर्ज हैं जिनको बहुत अहमियत मिली हुई है। हज़रत अली[अ०] ने एक बार ख़्वाब में देखा कि कुछ आदमी आसमान से करबला की ज़मीन पर उतरते हैं। करबला की ज़मीन के जिस हिस्से पर वह उतरते हैं वहाँ पर लगे खजूर के पेड़ ख़ून से तर हैं। उसी ज़मीन पर इमाम हुसैन[अ०] ख़ून में डूबे हुए फ़रियाद करते हुए मदद के लिए आवाज़ बुलंद कर रहे हैं और कोई उनकी मदद के लिए नहीं आ रहा है। हज़रत अली[अ०] के इस ख़्वाब की ताबीर हम सभी जानते हैं। इसी तरह नवीं मोहर्रम को इमाम हुसैन[अ०] ने भी एक ख़्वाब देखा था। उन्होंने देखा कि रसूले इस्लाम[स०] तशरीफ़ लाए हैं और उनसे फ़रमा रहे हैं कि बेटा! कल तुम मेरे पास पहुँच जाओगे। बिहारुल अनवार में जनाबे सकीना[अ०] का भी एक ख़्वाब दर्ज है। उन्होंने ख़्वाब में देखा कि नूर के 5 नाक़े हैं और उन पर 5 लोग सवार हैं। जिनके आसपास फ़रिश्ते मौजूद हैं और हर नूरानी नाक़े के साथ एक ख़ादिम भी है। जनाबे सकीना ने एक ख़ादिम से पूछा, "इन नाक़ों पर कौन लोग सवार हैं?" तो ख़ादिम ने जवाब दिया, "पहले नाक़े पर हज़रत आदम[अ०], दूसरे पर हज़रत इब्राहीम[अ०], तीसरे पर हज़रत मूसा[अ०], चौथे पर हज़रत ईसा[अ०] और आख़िरी नाक़ा रसूले इस्लाम[स०] का है।" जनाबे सकीना[अ०] फिर पूछती हैं कि यह लोग कहाँ जा रहे हैं? ख़ादिम बताता है कि यह लोग आपके बाबा इमाम हुसैन[अ०] के पास करबला जा रहे हैं। तभी जनाबे सकीना को नूर के घेरे में 5 बीबियाँ भी नज़र आईं। उन्होंने जब उनके बारे में पूछा तो जवाब मिला कि वह जनाबे हव्वा, जनाबे आसिया, जनाबे मरयम, जनाबे ख़दीजा और जनाबे फ़ातिमा ज़हरा[स०] हैं। यह सुनकर जनाबे सकीना[अ०] उनके क़रीब जाती हैं और करबला का वाक़िआ सुनाती हैं।

आपने सुना होगा कि अक्सर कुछ लोग ख़्वाब देखकर डर जाते हैं। ज़ाहिर है कि ऐसे ख़्वाब शैतानी होते हैं। इन ख़्वाबों से बचने के तरीक़े हमारे इमामों और नबियों ने बताए हैं। एक बार हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के पास एक शख़्स आया और उसने कहा कि एक डरावनी औरत मेरे ख़्वाबों में आकर मुझे डराती है। यह सुनकर इमाम[अ०] ने फ़रमाया कि शायद तुम ज़कात नहीं देते हो। उस शख़्स ने कहा, "मैं तो बराबर ज़कात देता रहता हूँ।" तब इमाम[अ०] ने फ़रमाया, "इसका मतलब वह ज़कात मुस्तहक़ तक नहीं पहुँचती है।" इसके बाद उस शख़्स ने ज़कात को इमाम[अ०] के ज़रिए ही मुस्तहक़ तक पहुँचवा दिया। उसके इस अमल के साथ ही डरावने ख़्वाबों से निजात मिल गई। हज़रत अली[अ०] ने रात को डरावने ख़्वाबों से बचने के लिए आयतल कुर्सी पढ़ने का भी हुक्म दिया है। इसके साथ ही रात को वुज़ु करके सोने को भी सवाब हासिल करने और शैतानी ख़्वाबों से बचने का तरीक़ा बताया गया है। ख़ैर यह तो बातें थीं उन ख़्वाबों की जो हम बंद आँखों से सोते वक़्त देखते हैं। लेकिन कुछ ख़्वाब ऐसे भी होते हैं जो हम खुली आँखों से देखते हैं। दरअसल ऐसे ख़्वाब हमारी तमन्नाओं, अरमानों और ख़्वाहिशों का आईना होते हैं। उसमें हम वही देखते हैं जो हमारी चाहत होती है। इन ख़्वाबों की ताबीर तब ही पॉज़िटिव होती है जब उसके लिए कोई सही तदबीर की जाए। यहाँ पर तदबीर का मतलब मेहनत, कोशिश और इरादों की मज़बूती है।

(रिफ़रेंसेज़: बिहारुल अनवार, ख़्वाबनामा-ताबीरनामा)

हसद

■ सै. आले हाशिम रिज़वी

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने हसद के बारे में फ़रमाया है, "हसद करने वाला जिससे हसद करता है उसको नुक़सान पहुँचाने के लिए पहले ख़ुद को नुक़सान पहुँचा लेता है।"

दरअसल जलन या हसद इन्सान के चेहरे से मुस्कुराहट, दिल से सुकून और आँखों से नींद छीन लेती है। यही वजह है कि जलने और कुढ़ने वाले की शक्ल अच्छी-भली होते हुए भी बुरी लगने लगती है। हेल्थ एक्सपर्टस की रिसर्च के मुताबिक़ जेलिसी इन्सान की सेहत पर बहुत निगेटिव असर डालती है। इस आदत के शिकार लोग बहुत सी बीमारियों को दावत दे देते हैं। दूसरों के अलावा ऐसे लोग ख़ुद से भी बेज़ार होने लगते हैं। उनकी यह आदत उनमें फ़्रस्ट्रेशन और इन्फ़ीरियारिटी कॉम्प्लेक्स पैदा कर देती है जो ज़िंदगी के लिए बहुत ख़तरनाक है। इसलिए BE POSITIVE, THINK POSITIVE *की पॉलीसी पर अमल करते हुए जेलिसी से दूर रहें और ख़ुश रहें।*

हसद की दूर अगर गंदगी नहीं होगी
यह कामयाब कभी ज़िंदगी नहीं होगी

सिक्के हमेशा आवाज़ करते हैं मगर नोट हमेशा ख़ामोश रहते हैं।
इसलिए जब आपकी क़ीमत बढ़े तो शांत रहिए।
अपनी हैसियत का शोर मचाने का ज़िम्मा आपसे कम क़ीमत वालों के लिए है।

हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा स०

बेसत का पाँचवाँ साल था। पैग़म्बरे इस्लाम[स०] बहुत सख़्त हालात में ज़िंदगी बसर कर रहे थे। इस्लाम की अभी शुरुआत थी और मुसलमान भी कम थे और वह भी इंतेहाई सख़्त हालात में।

शिर्क, बुतपरस्ती, जिहालत, ख़ुराफ़ात, ख़ाना जंगियों, जुल्म व सितम वग़ैरा की वजह से मक्के का माहौल बहुत ख़राब था।

रसूले इस्लाम[स०] आगे के बारे में सोच रहे थे। अंधेरों के उधर एक रौशन मुस्तक़बिल था। ऐसा मुस्तक़बिल जो आम और ज़ाहिरी हालात की वजह से दूर बल्कि नामुमकिन नज़र आ रहा था।

इसी साल पैग़म्बरे इस्लाम[स०] की ज़िंदगी में एक अज़ीम वाक़ेआ हुआ। आप[स०] को आसमानों की सैर के लिए मेराज की दावत दी गई और आप[स०] ने ख़ुदा की अज़ीम आयतों को आसमानों की बुलंदियों पर अपनी आंखों से देखा।

सारी इस्लामी किताबों में यह रिवायत मिलती है कि मेराज की रात पैग़म्बरे इस्लाम[स०] जन्नत से गुज़र रहे थे। जिब्रील[अ०] ने तूबा के पेड़ से एक फल रसूल[स०] को दिया और जब आप वापस तशरीफ़ लाए तो इसी जन्नती फल से हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा[अ०] दुनिया में आईं।

इसीलिए हदीस में मिलता है कि पैग़म्बरे इस्लाम[स०] जनाबे फ़ातिमा ज़ेहरा[अ०] को हमेशा बहुत प्यार करते थे। एक दिन हज़रत आयशा ने कहा, "आप अपनी बेटी को इतना प्यार क्यों करते हैं?"

पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने जवाब में फ़रमाया, "जब भी मैं फ़ातिमा का बोसा लेता हूँ तो जन्नत की ख़ुश्बू सूँघता हूँ।"

जन्नत के फल से वजूद में आने वाली यह मुबारक और अज़ीम बेटी, रसूले ख़ुदा[स०] जैसे अज़ीम बाप और जनाबे ख़दीजा जैसी माँ के घर में 20 जमादिउस्सानी को पैदा हुई थी। वह लोग जो पैग़म्बरे अकरम[स०] को बेऔलाद होने का ताना देते थे, इस बेटी के पैदा होने से उनकी सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया।

जनाबे फ़ातिमा के नौ नाम और लक़ब हैं, जिनमें से हर एक दूसरे से ज़्यादा बा मायने है:-

1- फ़ातिमा, 2- सिद्दीक़ा, 3- ताहिरा, 4- ज़किया, 5- राज़िया, 6- मरज़िया, 7- मुहद्दिसा, 8- ज़ेहरा।

इनमें से हर एक आपकी अलग-अलग सिफ़तों और बाबरकत वुजूद को बयान करता है। इतना ही काफ़ी है कि उनके मशहूर नाम "फ़ातिमा" में उनके मानने वालों के लिए एक बहुत बड़ी बशारत छुपी है क्योंकि फ़ातिमा "फ़तम" से बना है जिसके मायने हैं "जुदा होना"। एक हदीस के मुताबिक़ रसूले इस्लाम[स०] ने हज़रत अली[अ०] से फ़रमाया, "जानते हो मेरी बेटी का नाम फ़ातिमा क्यों रखा गया है?"

कहा, "आप बताईए।"

आपने फ़रमाया, "इसलिए कि वह और उनके पैरवकार जहन्नम की आग से जुदा कर दिए गए हैं।"

आपका एक नाम 'ज़ेहरा' भी बहुत ख़ास है। इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से पूछा गया, "जनाबे फ़ातिमा[अ०] को 'ज़ेहरा' क्यों कहते हैं?" फ़रमाया, "क्योंकि ज़ेहरा के मायने रोशनी के हैं। जनाबे फ़ातिमा ज़ेहरा[अ०] जब इबादत के लिए खड़ी होती थीं तो आपका नूर आसमान वालों को इस तरह नूरानी करता था जिस तरह सितारे ज़मीन वालों को नूर पहुंचाते हैं। इसलिए ज़ेहरा नाम रखा गया।"

जब जनाबे ख़दीजा ने पैग़म्बरे अकरम[स०] से शादी की तो मक्के की औरतों ने उनसे यह कह कर नाता तोड़ लिया कि ख़दीजा ने एक ग़रीब इंसान से शादी करके अपनी शख़्सियत को गिरा लिया है।

इसलिए जब जनाबे ज़ेहरा की विलादत के वक़्त क़ुरैश की औरतों को बुलाया गया तो सब ने

20 जमादिउस्सानी
जनाबे फ़ातिमा ज़ेहरा[अ०] की विलादत के मौक़े पर

यही जवाब दिया कि आपने हमारी बात नहीं मानी और अबू तालिब के यतीम भतीजे से शादी कर ली जिसके पास कोई दौलत नहीं थी। इसलिए हम आपकी मदद नहीं कर सकते।

जनाबे ख़दीजा को इस जवाब से सख़्त तकलीफ़ पहुंची लेकिन उनके दिल में उम्मीद की शमा रौशन थी। विलादत का वक़्त नज़दीक आ रहा था और ख़दीजा अपने घर में अकेली थीं। कोई मदद करने वाला नहीं था। दिल भी डूब रहा था और लोगों की बेरुख़ी भी तकलीफ़ पहुंचा रही थी कि अचानक दिल में उम्मीद की शमा रौशन हुई। आँख खोली तो चार औरतों को अपने पास पाया। जब ताअज्जुब हुआ तो उनमें से एक औरत ने कहा, ''आप परेशान न हों। आपके मेहरबान ख़ुदा ने हमें आपकी मदद के लिए भेजा है। हम आपकी बहने हैं। यह आसिया फ़िरऔन की बीवी हैं। यह जन्नत में आपकी दोस्त होंगी। यह मरयम बिन्ते इमरान हैं। और यह जनाबे मूसा बिन इमरान की बेटी कुलसूम हैं। हम इस वक़्त आपकी मदद करने आए हैं।'' यह औरतें फ़ातिमा ज़ेहरा[अ] की विलादत तक आपके पास रहीं।

जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है, ''वह लोग जो कहते हैं कि हमारा परवरदिगार ख़ुदा है। फिर साबित क़दम भी रहते हैं, उन पर फ़रिश्ते नाज़िल होंगे और उनसे कहेंगे डरो नहीं, ग़मगीन न हो।''

इसलिए जनाबे ख़दीजा के पास फ़रिश्तों के अलावा यह अज़ीम औरतें भी ख़दीजा[अ] जैसी बाईमान और साबित क़दम शख़्सियत की मदद के लिए आईं।

इस बच्ची की विलादत से रसूले इस्लाम[अ] बहुत ख़ुश हुए और ख़ुदा की बेपनाह हम्द व सना की। इस बच्ची की विलादत ने उन दुश्मनों की ज़बानें बंद कर दीं जो पैग़म्बरे अकरम[स] को बेऔलाद होने का ताना देते थे।

ख़ुदावंदे आलम ने सूरए कौसर के ज़रिए इस अज़ीम और बाबरकत बच्ची की बशारत पैग़म्बरे अकरम[स] को दी थी।

''बेशक हमने आपको कौसर अता किया है। इसलिए आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और क़ुर्बानी दीजिए। यक़ीनन आपका दुश्मन बेऔलाद रहेगा।''

आप[अ] की विलादत से न सिर्फ़ यह कि दुश्मनों की ज़बाने बंद हो गईं बल्कि हिस्ट्री में औरत को जो पस्त तरीन दर्जा हासिल था वह इज़्ज़त में तबदील हुआ और जो मुसलमान औरत को अपने लिए ज़िल्लत समझते थे जब उन्होंने देखा कि ख़ुदा ने अपने रसूल को भी बेटी का तोहफ़ा दिया है तो उनके दिल में भी बेटी की इज़्ज़त पैदा हुई और इस्लाम में औरत का हक़ीक़ी मक़ाम साफ़ हुआ। सबसे बढ़कर यह कि इस अज़ीम बीबी की विलादत से रसूले अकरम[स] की नसल आज भी बाक़ी है।

जाँनिसार बेटी

हिस्ट्री और हदीस के तमाम उलमा और स्कॉलर्स ने लिखा है कि पैग़म्बरे अकरम[स] हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा[अ] को बहुत ज़्यादा चाहते थे।

साफ़ है कि यह मुहब्बत सिर्फ़ इस वजह से नहीं थी कि फ़ातिमा ज़ेहरा[अ] रसूले इस्लाम[स] की बेटी थीं (वैसे इस वजह से भी पैग़म्बरे अकरम[स] के दिल में बड़ी मुहब्बत थी) बल्कि पैग़म्बरे अकरम[स] की वह हदीसें जिनमें इस मुहब्बत का तज़किरा किया गया है, उनका लहजा बता रहा है कि इस मुहब्बत की वजह कोई बहुत ऊँचा मेयार है जो बाप होने के अलावा है।

इस सिलसिले में काफ़ी रिवायतें मौजूद हैं। हम सिर्फ़ कुछ रिवायतें बयान कर रहे हैं।

(1) पैग़म्बरे अकरम[स] के लिए मर्दों में सबसे ज़्यादा महबूब हज़रत अली[अ] थे। और औरतों में सबसे ज़्यादा नज़दीक हज़रत फ़ातिमा[अ] थीं।

(2) जब यह आयत नाज़िल हुई, ''जिस तरह तुम एक दूसरे को पुकारते हो, पैग़म्बर[स] को इस तरह न पुकारो।'' तो मुसलमानों ने पैग़म्बरे अकरम[स] को ''या मुहम्मद'' कहना छोड़ दिया और 'या रसूल अल्लाह' या 'या अय्युहन नबी' कहकर पुकारने लगे।

जनाबे फ़ातिमा ज़ेहरा[अ] बयान करती हैं, ''इस आयत के नाज़िल होने के बाद मुझ में हिम्मत न हुई कि बाबा को ''या अबताह'' (बाबा जान) कहकर पुकारूं। इसलिए जब उनके पास जाती थी तो 'या रसूल अल्लाह' कहती थी।

एक दो बार मैंने इसी तरह पुकारा। फिर मुझसे फ़रमाया, ''ऐ फ़ातिमा! यह आयत तुम्हारे बारे में नाज़िल नहीं हुई है और न तुम्हारे घर के बारे में और न तुम्हारी नस्ल के बारे में। तुम मुझसे हो और मैं तुम से हूँ। यह आयत तो क़ुरैश वालों के लिए नाज़िल हुई है।''

फिर उसके बाद बड़े मुहब्बत भरे लहजे में फ़रमाया कि तुम 'बाबा जान' ही कहो क्योंकि इससे मेरा दिल ज़िंदा होता है और ख़ुदा ज़्यादा ख़ुश होता है।

हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा[अ] की ज़बान से 'बाबा जान' सुनना पैग़म्बरे अकरम[स] को इतना सुकून पहुँचाता था और पैग़म्बरे अकरम[स] इतना ज़्यादा

अनमोल मोती

पहली हदीसः रसूले ख़ुदा[स॰] ने हज़रते ज़ेहरा[स॰] से सवाल किया, "औरत के लिए बेहतरीन चीज़ कौन सी है?" आपने फ़रमाया, "औरत के लिए बेहतरीन चीज़ यह है कि वह किसी नामहरम को न देखे और कोई नामहरम उसे न देखे।"

दूसरी हदीसः एक दिन हज़रत अली[अ॰] घर वापस आए। आकर कहा कि ख़ुदा के रसूल[स॰] ने आज मुझसे एक सवाल किया था। जनाबे फ़ातिमा[स॰] ने पूछा कि कौन सा सवाल? आपने फ़रमाया, "रसूले ख़ुदा[स॰] ने सवाल किया था कि औरत किस वक़्त ख़ुदा के सबसे क़रीब होती है?"

हज़रते ज़हेरा[स॰] ने फ़रमाया, "ऐ अली[अ॰]! जाकर कह दीजिए कि जिस वक़्त औरत घर के एक गोशे में होती है उस वक़्त ख़ुदा से बहुत क़रीब होती है।"

हज़रत अली[अ॰] वापस गए और वैसा ही जाकर कह दिया लेकिन रसूले ख़ुदा[स॰] ने फ़रमाया, "यह तुम्हारा जवाब नहीं है।" हज़रत अली[अ॰] ने कहा, "हाँ! यह फ़ातिमा[स॰] ने कहा है।" इसके बाद रसूल[स॰] ने कहा, "फ़ातिमा ने सही कहा है, बेशक वह मेरे बदन का टुकड़ा है।"

तीसरी हदीसः इमाम सादिक़[अ॰] अपने वालिद इमाम बाक़िर[अ॰] से नक़ल करते हैं, "हज़रत अली[अ॰] और हज़रते ज़ेहरा[स॰] ने रसूले ख़ुदा[स॰] से घरेलू कामों को बांटने की दरख़्वास्त की। रसूले ख़ुदा[स॰] ने घरेलू काम हज़रते ज़ेहरा[स॰] के ज़िम्मे कर दिए और घर के बाहर के कामों को हज़रत अली[अ॰] के ज़िम्मे।"

इमाम बाक़िर[अ॰] फ़रमाते हैं कि उस वक़्त हज़रते ज़ेहरा[स॰] ने फ़रमाया, "सिर्फ़ ख़ुदा जानता है कि इस बंटवारे से मैं कितनी ख़ुश हूँ कि रसूल[स॰] ने मर्दों से रिलेटेड काम मेरे ज़िम्मे नहीं किए।"

चौथी हदीसः एक दिन हज़रत अली[अ॰] को भूख लगी थी। आपने हज़रते ज़ेहरा[स॰] से पूछा, "क्या कोई खाने की चीज़ है?" हज़रते ज़हरा[स॰] ने जवाब में कहा, "मेरे पास इस वक़्त खाने की कोई चीज़ नहीं है। बीते दो दिनों में जो कुछ मेरे पास था वह आप को और हसन और हुसैन को दे चुकी हूं और मैंने ख़ुद कुछ नहीं खाया है।" इसके बाद हज़रत अली[अ॰] ने फ़रमाया, "ऐ फ़ातिमा! तुमने मुझे क्यों नहीं बताया ताकि किसी चीज़ का इंतेज़ाम कर लेता।" हज़रते ज़हरा[स॰] ने फ़रमाया, "मैं ख़ुदा से हया करती हूँ कि आपसे कोई चीज़ माँगूं और आप उसका इंतेज़ाम न कर सकें।"

(सै. अमीन हैदर हुसैनी, बनारस)

ख़ुश होते थे कि जिस तरह बहार के मौसम में सुबह की हवा से फूल खिल उठते हैं।

(3) एक रिवायत में है कि पैग़म्बरे अकरम[स॰] हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा[अ॰] को इतना ज़्यादा चाहते थे कि जब कभी सफ़र पर जाते थे तो सबसे आख़िर में जनाबे फ़ातिमा ज़ेहरा[अ॰] से रुख़सत होते थे और जब वापस आते थे तो सबसे पहले जनाबे फ़ातिमा ज़ेहरा[अ॰] से मिलते थे ताकि फ़ातिमा ज़ेहरा[अ॰] से जुदाई कम से कम रहे।

(4) यह हदीस भी तमाम मुसलमान उलमा ने ज़िक्र की है कि पैग़म्बरे अकरम[स॰] ने फ़रमाया, "जिसने उनको तकलीफ़ दी उसने मुझे तकलीफ़ दी जिस ने उनको नाराज़ किया उसने मुझे नाराज़ किया जिसने उनको ख़ुश किया उसने मुझे ख़ुश किया जिसने उनको रंजीदा किया उसने मुझे रंजीदा किया।"

यक़ीनन हज़रते फ़ातिमा ज़ेहरा[अ॰] की अज़ीम शख़्सियत, ईमान व इबादत में उनकी बुलंदी और अज़मत की वजह से ज़रूरी था कि उनके एहतेराम और इज़्ज़त का पूरा-पूरा हक़ अदा किया जाए क्योंकि इस्लाम के आने वाले रहबर उन्हीं के बेटे होंगे और इमामत उन्हीं की नसल में रहेगी। इसके अलावा इस्लाम की अज़ीम तरीन शख़्सियत हज़रत अली[अ॰] आपके शौहर हैं।

लेकिन पैग़म्बरे अकरम[स॰] अपने इस अमल से एक और बात लोगों को बताना चाहते हैं, इस बारे में इस्लाम के नज़रिए पेश करना चाहते हैं, एक कल्चरल इंक़ेलाब की बुनियाद रखना चाहते हैं यानी यह कहना चाहते हैं, "लड़की ऐसी चीज़ नहीं है जिसको ज़िंदा दफ़न कर दिया जाए।"

देखो! मैं अपनी लड़की के हाथों का बोसा लेता हूं। उसको अपनी जगह बिठाता हूं। मैं इतना ज़्यादा एहतेराम करता हूं, उसकी इज़्ज़त करता हूँ।

दूसरे इंसानों की तरह औरत भी एक इंसान है। ख़ुदा की नेमतों में से एक नेमत है। ख़ुदा का एक तोहफ़ा है। औरत भी ऊँचे मुक़ाम तक पहुंच सकती है। वह भी ख़ुदा की बारगाह में क़ुरबत हासिल कर सकती है। इस तरह उस अंधेरे माहौल में औरत की खोई हुई शख़्सियत को ज़िंदा किया, उसको इज़्ज़त दी और उसको उसके असली मुक़ाम तक पहुँचा दिया।

OSTEOPOROSIS

यह मर्ज़ मर्दों से ज़्यादा औरतों में आम है

■ डॉ. सैय्यदा ज़िया फ़ातिमा

आस्टियोपोरोसिस (Osteoporosis) को आम तौर पर हड्डियों के खोखला होने का मर्ज़ कहा जाता है। यह बीमारी आम तौर पर औरतों में 45 साल की उम्र से 50 साल की उम्र के बीच होती है। यह एक ख़ामोश बीमारी कहलाती है क्योंकि इस बीमारी में कोई ख़ास निशानी ज़ाहिर नहीं होतीं। यह एक तकलीफ़देह बीमारी है जिसमें कैल्शियम की कमी की वजह से हड्डियां कमज़ोर हो जाती हैं। हड्डियों में कभी-कभी कैल्शियम की इतनी कमी हो जाती है कि वह साफ़ दिखाई देने लगती हैं। हड्डियों की मोटाई जितनी होना चाहिए उसे से कम हो जाती है। हड्डियों की बनावट भी बुरी तरह असर अंदाज़ होती है जिसके नतीजे में वह नाज़ुक हो जाती हैं। उनके टूटने के चांसेज़ ज़्यादा हो जाते हैं। औरतों का वज़न बढ़ जाने की वजह से भी जिस्म की हड्डियों में उनको संभालने की सलाहियत नहीं रहती। इस मर्ज़ में रीढ़ की हड्डी पर ज़्यादा असर पड़ता है। जिस्म के वज़न से वह और दूसरी हड्डियां भी चूंकि कमज़ोर हो जाती हैं इसलिए रीढ़ की हड्डी में Compression Fracture आम है।

रीढ़ की हड्डी के अलावा Osteoporosis की वजह से कूल्हों और कलाई की हड्डियों में भी फ्रेक्चर देखे जाते हैं। 50 से 60 साल की उम्र में हड्डियों का टूटना एक ख़तरनाक मसला होता है और ख़ास तौर पर कूल्हे की हड्डी का टूटना तो बहुत ही संगीन मसला है।

Osteoporosis का मर्ज़ आम तौर पर औरतों में क़ुदरती तौर पर पीरियड्स के बंद होने के वक़्त या ढलती उम्र की वजह से होता है। कई बार दूसरी बीमारियों या दवाओं के रिएक्शन की वजह से भी ऐसा होता है। औरतों में पीरियड्स के बंद होने के दौरान हार्मोंस का बैलेंस बिगड़ जाता है। हाज़मे की ख़राबी, गुर्दे के मर्ज़, जोड़ों में दर्द के अलावा दवाओं का ज़्यादा इस्तेमाल भी इस मर्ज़ की वजह बनता है। नशे की आदत और पॉलूशन भी इस मर्ज़ की एक वजह है। इसके अलावा हम जो रोज़मर्रा ग़िज़ा इस्तेमाल कर रहे हैं उसमें कैल्शियम की मिक़दार कम हो तो यह भी आगे चल कर इस बीमारी में घिरने की वजह बनते हैं। Osteoporosis की आम निशानियों में बिना किसी वजह के जिस्म में दर्द, जोड़ों में दर्द, थकावट, उम्र से पहले कमर में ज़्यादा झुकाव, छोटी-छोटी चोटों में हड्डियों का टूटना भी शामिल है।

Osteoporosis में इलाज से ज़्यादा एहतियात की ज़रूरत है। इसके लिए शुरू ही में औरतों के लिए कैल्शियम की सही मिक़दार लेते रहना ज़रूरी है। औरतें अगर हल्की एक्सर्साइज़ और घरेलू काम काज करती रहें तो वज़न पर भी क़ाबू पाया जा सकता है। औरतों को एक्सर्साइज़ में ब्रिस्क-वाकिंग यानी तेज़-तेज़ चलना, जागिंग या खुली हवा में एक्सर्साइज़ करना चाहिए ताकि वह अपना वज़न भी कम कर सकें और बैलेंस भरी ज़िंदगी गुज़ार सकें। सही मिक़दार में कैल्शियम यूँ भी ज़रूरी है क्योंकि किसी भी उम्र में कैल्शियम की कमी ख़तरनाक ही होती है जैसे यायसा होने यानी पीरियड्स बंद हो जाने के बाद की उम्र हड्डियों के लिए एक मुश्किल घड़ी होती है लेकिन इस ज़माने में कैल्शियम में कमी होना शुरू हो जाती है। इसके लिए आप किसी गेनॉकोलोजिस्ट से हार्मोन के ज़रिए भी इलाज कर सकती हैं या ग़िज़ा में कैल्शियम की मिक़दार भी बढ़ाई जा सकती है और मामूली एक्सर्साइज़ की जा सकती है ताकि Osteoporosis का मर्ज़ आगे न बढ़ने पाए। औरतों की हड्डियां बुढ़ापे के दिनों तक पहुंचते-पहुंचते जितनी मज़बूत बनेंगी उतना ही औरत उस ज़माने में Osteoporosis से बची रहेगी। इसलिए बेहतर है कि हड्डियां बनने के ज़माने में बचपन से जवानी तक और फिर जवानी की उम्र से 35 साल की उम्र तक सही मिक़दार में कैल्शियम वाली ग़िज़ा इस्तेमाल करें या फिर गोलियों की शक्ल में कैल्शियम इस्तेमाल करें तो बुढ़ापे में फ़ायदा होगा।

आम तौर पर देखा गया है कि गोरी रंगत और सुनहरे बालों वाली औरतें, जिनकी हड्डियां छोटी होती हैं और नाज़ुक और आरामदेह ज़िंदगी गुज़ारती हैं और दूध की बनी हुई चीज़ों या दूध से एलर्जी महसूस करती हैं, उनमें Osteoporosis का शिकार होने के चांसेज़ दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा होते हैं।

आज कल औरतें खाने में चर्बी से मिलने वाली कैलोरीज़ की वजह से दूध और दूध से तैयार की हुई चीज़ें इस्तेमाल नहीं कर रही हैं। जिसके नतीजे में वह कैल्शियम से दूर होती जा रही हैं और उसकी कमी से पैदा होने वाले ख़तरे मोल ले रही हैं। जब लड़कियां जवानी की उम्र में दाख़िल होती हैं तो उनके जिस्म को ज़्यादा मिक़दार में कैल्शियम की ज़रूरत होती है। अगर वह कैल्शियम इस्तेमाल नहीं करतीं तो वह आगे चलकर कमज़ोर हो जाती हैं।

प्रेग्नेंट औरतें या दूध पिलाने वाली माएं भी जिनको कैल्शियम की ज़्यादा मिक़दार की ज़रूरत होती है अगर उनके जिस्म में इसकी कमी हो तो बच्चे पर इसका असर पड़ता है।

एक सर्वे के मुताबिक़ खाते-पीते घरानों में बालिग़ औरतों की ग़िज़ा में शामिल कैल्शियम की मिक़दार अलग-अलग वजहों की बिना पर उनकी मामूल की ज़रूरतों से 50% से ज़्यादा नहीं होती। कैल्शियम की ज़रूरत इस बात पर डिपेंड करती है कि वह किस उम्र और किस हालत में है यानी वह जवान है या बड़ी उम्र वाली प्रेग्नेंट औरत है या बच्चे को दूध पिलाने वाली माँ या फिर क्या वह बुढ़ापे के दिनों से गुज़र रही है। इस बुनियाद पर कहा जा सकता है कि कैल्शियम की मिक़दार जवानी के शुरू में 1200 mg, बालिग़ यानी 25 से 45 साल तक 800 mg, प्रेग्नेंट या दूध पिलाने वाली औरतों में 1200 mg, बुढ़ापे के दिनों में 1500 mg होती है।

आख़िर में औरतों को मशवेरा दूंगी कि वह अपनी ग़िज़ा में हरे पत्ते वाली सब्ज़ियां, मछली, दूध, दही, पनीर, आइसक्रीम वग़ैरा को बराबर इस्तेमाल करें ताकि कैल्शियम की कमी न हो। अगर आप यह ग़िज़ा इस्तेमाल नहीं कर रही हैं तो कम से कम कैल्शियम की गोलियों का इस्तेमाल करें। इस मर्ज़ से बचने के लिए रोज़ाना सुबह की धूप में कुछ वक़्त गुज़ारना चाहिए। बैलेंस्ड ग़िज़ाएं रोज़ाना खाना चाहिए। हर रोज़ हल्की एक्सर्साइज़ करें। ढलती उम्र के साथ कैल्शियम की सही मिक़दार लेती रहें। डाक्टर के मशवरे के बिना दवाओं के इस्तेमाल से बचें और साफ़-सुथरी हवा लें ताकि Osteoporosis से बच सकें। ●

(सोर्सः एतेमाद)

BREAST FEEDING

■ डॉ. आले मोहम्मद अलीग

ख़ुदा ने जब इन्सानी नस्ल की शुरूआत की तो उसको बाक़ी रखने के लिए उसूल भी बनाए और वह सारी चीज़ें भी इन्सान को दे दीं जो इन्सानी नस्ल के लिए ज़रूरी थीं। जहाँ वालदैन की अज़मत बताई गई है वहीं औलाद की परवरिश के लिए उनके हक़ों को पूरा करने के लिए भी कहा गया। यह इन्सान काफ़ी दिनों तक अपने नेचर पर बाक़ी भी रहा लेकिन दुनिया की चमक-दमक, फ़ैशन की बाढ़, हुस्न परस्ती और ऐश व आराम ने कहीं किसी के हक़ को छीना तो कहीं नेचर के क़ानूनों को तोड़ बैठा। नतीजा यह हुआ कि इन्सान ने अपने नेचर से दूर होना शुरु कर दिया जिसकी वजह से परेशानियों, बीमारियों और दूसरी आफ़तों का दौर शुरु हुआ।

नस्ल का दारोमदार औलाद पर होता है और हर इन्सान चाहता है कि उसकी नस्ल बाक़ी रहे। यही नहीं बल्कि वह चाहता है कि उसकी नस्ल में अच्छे कैरेक्टर वाली और हुनरमंद औलाद का सिलसिला बाक़ी रहे। ताकि एक अच्छा समाज बन सके। लेकिन जहाँ एक तरफ़ यह ख़यालात होते हैं वहीं दूसरी तरफ़ इन्सान जज़्बात के धारे में इतना बह चुका होता है कि उसका ख़्वाब कभी पूरा नहीं हो पाता।

दुनिया में बच्चे के आने के बाद ही अक्सर उसे उसके सबसे पहले हक़ यानी माँ के दूध से दूर कर दिया जाता है। जिसकी वजह से न उसकी परवरिश अच्छी होती है और न ही उसमें वालदैन की ख़ासियतें ठीक तरह से आ पाती हैं क्योंकि यह नेचर का क़ानून है कि जो बोया जाता है वही उगता है। इसलिए क़ुरआन व हदीस और साइंस ने भी इस बात पर ज़ोर दिया है कि बच्चे को माँ का दूध ज़रूर पिलाया जाए ताकि इन्सानियत फल-फूल सके। इसलिए बच्चे की पैदाईश के बाद पाँच बातों का ख़याल ज़रूर रखना चाहिए:-

1- नार्मल पैदाइश के आधे घंटे या एक घंटे के अंदर बच्चे को माँ का दूध पिलाना चाहिए और अगर आप्रेशन से पैदाइश हुई हो तो 4 से 6 घंटे के बाद माँ का दूध बच्चे को देना चाहिए।

2-ऐसी हालत में माँ का दूध ख़ुश्क नहीं होता

3-पैदाईश के बाद माँ का दूध उतरने लगता है

4- Demand of Feeding: जब बच्चे को तलब हो तब उसे दूध पिलाएं। किसी वक़्त की पाबंदी नहीं है कि फ़ुलाँ वक़्त तक एक ब्रेस्ट से दूध पिलाएं और फ़ुलाँ वक़्त तक दूसरे ब्रेस्ट से। बल्कि बारी-बारी दोनों ब्रेस्ट से दूध पिलाएं। वैसे बच्चा ख़ुद ही अपनी ख़ूराक पूरी कर लेता है।

5- Exclusive Breast Feeding: बच्चे को 4 से 6 माह तक सिर्फ़ माँ का दूध दें और उसके बाद ही दूसरी ग़िज़ा देनी शुरु करें और दो साल तक बराबर माँ का दूध दें।

अगर यह पाँच बातें नहीं पाई जाती हैं तो माँ को दूध नहीं उतरता है, जिसे Lactation Failure कहते हैं।

दूध पिलाने के फ़ाएदे

जब तक माँ बच्चे को दूध पिलाती रहती है उस वक़्त तक दोबारा प्रेग्नेंट नहीं होती।

दूध पिलाने से माँ का रहम (Womb) असल हालत में जल्दी लौट आता है।

जो औरतें बच्चों को अपना दूध पिलाती हैं वह सीने के कैंसर जैसी ख़तरनाक बीमारी से बची रहती हैं।

ब्रेस्ट से वालदैन की क्वालिटीज़ औलाद में हू-बहू ट्रांसफ़र हो जाती हैं।

बच्चे को आराम मिलता है और माँ से मानूस हो जाता है।

BREAST FEEDING

माँ के दूध के फ़ाएदे

1- माँ के दूध से परवरिश पाने वाले बच्चों में Immunity Power ज़्यादा होती है।

2- माँ की जिस्मानी और ज़ेहनी सलाहियतें निखर जाती हैं।

3- ऐसे बच्चे हैज़ा, पेचिश और पेट की दूसरी बीमारियों से भी बचे रहते हैं जबकि बाज़ारी दूध से परवरिश पाने वाले बच्चे ज़्यादा बीमारियों का शिकार होते हैं और उनमें वालदैन की क्वालिटीज़ कम पाई जाती हैं।

4- एक अमेरिकन रिसर्च स्कॉलर के मुताबिक़ माँ का पहला पतला माद्दा 'अलबा' Colostral में बचाव के माद्दे होते हैं जो पूरी उम्र उस बच्चे के फलने-फूलने में मदद करते हैं।

5- कुछ एक्सपर्ट्स ने यह भी कहा है कि जिन बच्चों की परवरिश माँ के दूध से होती है उनमें माँ-बाप की मोहब्बत भी उन बच्चों के मुक़ाबले में ज़्यादा होती है जिनकी परवरिश माँ के दूध के अलावा किसी दूसरी चीज़ से होती है।

6- पैदाईश से पहले की पेट पर जमी हुई चर्बी दूध पिलाने से घुल जाती है जिस से पेट बढ़ता नहीं है।

7- माँ के दूध से परवरिश पाए हुए बच्चे ख़राब और बुरी आदतों से बचे रहते हैं और कम बाग़ी होते हैं।

इसलिए- आज भी हमारे मुल्क में 60% से ज़्यादा बच्चों की पैदाइश Traditional Birth Attendant (T.B.A.) के ज़रिए होती है यानी रिवायती तौर से होती है। समाज के अपने रीति-रिवाज की वजह से माँ का दूध बच्चे को देर से पिलाया जाता है, उन्हें Colostral की जगह Prelacteal Feed जैसे जानवर यानी गाय, भैंस, बकरी का दूध, शहद का पानी, घुट्टी, ग्लूकोज़ का पानी दिया जाता है। ऐसे बच्चों में हैज़ा और दूसरी बीमारियाँ हो जाती हैं और उनकी मौत का ख़तरा बढ़ जाता है हमारे मुल्क में बच्चों की मौत की शरह (IMR) 2007 में 55/हज़ार थी और अब धीरे-धीरे कम होने के बजाए बढ़ रही है।

इसलिए इन सारे हालात से नतीजा यह निकलता है कि पैदाईश के आधे घंटे के अंदर अगर बच्चे को माँ का दूध दिया जाए तो बच्चों की मौत की शरह में 22% की कमी हो सकती है। इस एक काम से हमारे मुल्क के 2.5 लाख नए पैदा होने वाले बच्चों को बचाया जा सकता है।

जबकि आज हमारे मुल्क के सिर्फ़ 24.5% बच्चों को एक घंटे के अंदर माँ का दूध मिलता है और उसको जितनी जल्दी हो सके 80% करने की ज़रूरत है। ●

बच्चों को ज़िम्मेदारियां दीजिए

अक्सर देखा जाता है कि बच्चे माओं के सर में दर्द कर देते हैं। ख़ासकर खिलौने फैलाना तो बच्चों का पसंदीदा काम होता है। जॉब करने वाली औरतों के लिए तो यह एक बड़ा मसला होता है कि घर आते ही उन्हें सारा सामान समेटना पड़ता है। इसके साथ-साथ घरेलू औरतें भी इस मसले से परेशान देखी जाती हैं। इधर बच्चे स्कूल से आए और उधर सब कुछ बिखर गया। आखिर इस मसले का हल क्या निकाला जाए ?

मसले का हल वही अच्छा होता है जिसका हल बुनियादी हल हो जो कि बच्चों की परवरिश में छिपा है। अब सवाल यह है कि परवरिश इस बारे में कैसी होनी चाहिए ?

अगर दिन रात बच्चों को लेकर समझाते रहें तो बच्चे इससे उकता जाएंगे और आपकी बात बेअसर जो जाएगी। इसका बेहतरीन हल यह है कि बच्चों को ज़िम्मेदारियां दें। बच्चों में एक को इंचार्ज बनाएं और बाक़ी सबको भी अपने-अपने काम दें। जो अपने काम ध्यान से करे उसकी ख़ूब हौसला अफज़ाई करें। जो न करे उसकी भी हिम्मत बढ़ाएं। इससे बच्चों में यह भरोसा पैदा होगा कि आप उन पर भरोसा कर रही हैं। इससे कम्प्टीशन का माहौल पैदा होगा। वह बढ़-चढ़ कर अपना हुनर दिखाने की कोशिश करेंगे और ज़िम्मेदारियां उठाना सीख जाएंगे। यह चीज़ न सिर्फ़ आपके काम का बोझ घटाने में मददगार होगी बल्कि बच्चों की शख़्सियत बनाने में भी अहम रोल अदा करेगी और फ़्युचर में उनके बहुत काम आएगी।

आज़मा कर देखिए! कामयाबी 90% यक़ीनी है। मैंने टीचिंग के ज़माने में यह तरीक़ा आज़माया है कि जो बच्चा सबसे ज़्यादा शरारती होता था उसे मानीटर बना देती थी। वह बच्चा ज़िम्मेदारी का मुज़ाहेरा करने लगता था और कोशिश करता था कि वह मानीटर बना रहे। इस तरह उसकी पढ़ने की ख़्वाहिश भी बढ़ जाती थी और वह अच्छा रिज़ल्ट देने लगता था। ●

सदक़ा

■ हुज्जतुल इस्लाम मीसम ज़ैदी

हज़रत दाऊद[अ०] के पास एक नौजवान उस वक़्त पहुँचा जब मौत का फ़रिश्ता उस जगह मौजूद था। फ़रिश्ते ने हज़रत दाऊद[अ०] को ख़बर दी कि यह नौजवान सात दिनों से ज़्यादा ज़िंदा नहीं रहेगा। मुझे हुक्म दिया गया है कि सातवें दिन इसकी रूह क़ब्ज़ कर लूँ। कुछ देर बाद वह नौजवान उठकर वहाँ से चला गया और रास्ते में उसकी एक ज़रूरतमंद शख़्स से मुलाक़ात हो गई। उस मोहताज इन्सान ने नौजवान से मदद मांगी। नौजवान ने उसके साथ नेकी और एहसान किया और उसे कुछ सदक़ा दे दिया। जब सातवाँ दिन आया तो दोबारा वह नौजवान फिर उसी जगह हज़रत दाऊद[अ०] के पास पहुँचा और सलाम किया। हज़रत दाऊद[अ०] ने ताज्जुब के साथ मौत के फ़रिश्ते इज़राईल से पूछा कि क्या तुम ने नहीं कहा था कि यह नौजवान सातवें दिन मर जाएगा? इज़राईल ने जवाब दिया बेशक ऐसा ही था लेकिन उस शख़्स ने क्योंकि किसी ज़रूरतमंद को सदक़ा दे दिया इसलिए ख़ुदावंदे आलम ने उसकी उम्र को सत्तर साल तक बढ़ा दिया है।

सदक़ा इन्सान की ज़िंदगी का ज़ामिन है जिसके नमूने हमारी और आपकी ज़िंदगी में बहुत ज़्यादा पाए जाते हैं। साथ ही हमारे बीच एक ग़लत ख़याल यह भी पाया जाता है कि सदक़े पर निकाली जाने वाली रक़म या ग़ल्ला उस बीमारी को अपने अंदर समेट लेता है और फिर बला इस तरह दूसरे इन्सान में ट्रांस्फ़र हो जाती है। इसीलिए सदक़े में निकाली हुई चीज़ को छूना भी गवारा नहीं किया जाता है। यह नज़रिया बिल्कुल ग़लत है बल्कि ख़ुदा नेक अमल के मुक़ाबले में नेकी करने वाले की बलाओं को दूर कर देता है।

रसूले अकरम[स०] का क़ौल है, "सदक़ा सत्तर बलाओं को दूर करता है।" इसी तरह क़ुरआन मजीद में है, "ख़ुदा सूद को बर्बाद कर देता है और सदक़ात में इज़ाफ़ा कर देता है और ख़ुदा किसी भी नाशुक्रे गुनाहगार को दोस्त नहीं रखता है।" (1)

हां! सदक़ा देने के बाद अपने एहसान को जताने के लिए सख़्ती से मना किया गया है। क़ुरआन में है, "ऐ ईमान वालो! अपने सदक़ात को एहसान जताकर और परेशान करके बर्बाद न करो।" (2)

इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] फ़रमाते हैं, "सदक़ा देना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है। सुबह सवेरे सदक़ा दो, यह काम शैतान को रूसियाह कर देता है"।

सदक़े के बारे में इमाम सज्जाद[अ०] फ़रमाते हैं, "सदक़ा, ज़रूरतमंद के हाथ में पहुँचने से पहले ख़ुदा के हाथ में जाता है।"

इमाम मूसा काज़िम[अ०] फ़रमाते हैं, "कमज़ोरों की मदद करना सबसे बेहतरीन सदक़ा है।"

दरहक़ीक़त सदक़े का सिस्टम बेहतरीन सिस्टम है जिसके ज़रिए पैसे वाले और फ़क़ीर दोनों का काम पूरा हो जाता है। लेकिन सिर्फ़ उसी सदक़े को अहमियत दी गई है जो ख़ुदा के लिए दिया जाए। सदक़ा देने के सिलसिले में कहा गया है कि अपने हाथों से सदक़ा दो, सदक़ा देने में अपने ज़िंदगी का बीमा है। हां! अल्लाह की राह में सदक़े के लिए निकाली जाने वाली रक़म हमारी मिलकियत नहीं रह जाती बल्कि अब उस रक़म को सिर्फ़ उस जगह ख़र्च करना चाहिए जहाँ सदक़े को ख़र्च करने की इजाज़त दी गई है और सदक़े का बेहतरीन मसरफ़ ज़रूरतमंद मोमिन की ज़रूरत को पूरा करना है। ग़ैर मोमिन की ज़रूरतों को पूरा करने को मना भी नहीं किया गया है बल्कि यह भी एक अच्छा अमल है लेकिन सदक़ा सिर्फ़ मोमिनीन की ज़रूरत पर ख़र्च किया जा सकता है, ग़ैर मोमिन की किसी और फ़ंड से मदद की जा सकती है।

हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया है, "सदक़ा देना और वक़्फ़ करना दो ऐसे ख़ज़ाने हैं जिन्हें अपने दिन (क़यामत) के लिए महफ़ूज़ कर लो।"

1-सूरए बक़रा/276, 2-बक़रा/264

सदक़े के बारे में इमाम सज्जाद[अ०] फ़रमाते हैं, "सदक़ा, ज़रूरतमंद के हाथ में पहुँचने से पहले ख़ुदा के हाथ में जाता है।"

इमाम मूसा काज़िम[अ०] फ़रमाते हैं, "कमज़ोरों की मदद करना सबसे बेहतरीन सदक़ा है।"

दरहक़ीक़त सदक़े का सिस्टम बेहतरीन सिस्टम है जिसके ज़रिए पैसे वाले और फ़क़ीर दोनों का काम पूरा हो जाता है। लेकिन सिर्फ़ उसी सदक़े को अहमियत दी गई है जो ख़ुदा के लिए दिया जाए। सदक़ा देने के सिलसिले में कहा गया है कि अपने हाथों से सदक़ा दो, सदक़ा देने में अपने ज़िंदगी का बीमा है। हां! अल्लाह की राह में सदक़े के लिए निकाली जाने वाली रक़म हमारी मिलकियत नहीं रह जाती बल्कि अब उस रक़म को सिर्फ़ उस जगह ख़र्च करना चाहिए जहाँ सदक़े को ख़र्च करने की इजाज़त दी गई है और सदक़े का बेहतरीन मसरफ़ ज़रूरतमंद मोमिन की ज़रूरत को पूरा करना है। ग़ैर मोमिन की ज़रूरतों को पूरा करने को मना भी नहीं किया गया है बल्कि यह भी एक अच्छा अमल है लेकिन सदक़ा सिर्फ़ मोमिनीन की ज़रूरत पर ख़र्च किया जा सकता है, ग़ैर मोमिन की किसी और फ़ंड से मदद की जा सकती है।

हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया है, "सदक़ा देना और वक़्फ़ करना दो ऐसे ख़ज़ाने हैं जिन्हें अपने दिन (क़यामत) के लिए महफ़ूज़ कर लो।"

1-सूरए बक़रा/276, 2-बक़रा/264

फ़ार्म कैसे भरें?

■ इंजीनियर हसन रज़ा नक़वी

EXAMS के ख़त्म होने के बाद आमतौर से बच्चे बिल्कुल Relaxed महसूस करने लगते हैं। दूसरे किसी इम्तेहान के बाद तो इसमें कोई हरज नहीं मगर बारहवीं के इम्तेहान के बाद यह ठीक नहीं है। दो चार दिन तो आराम कर लिया जाए मगर फिर फ़ौरन ही ध्यान देना चाहिए कि Admission का नया दौर अब कैसे शुरु हो। चाहे वह Test के ज़रिए Admission हो या Merit-Base पर, दोनों में यह बहुत ज़रूरी है कि Admission form कैसे भरा जाए, कौन-कौन से Documents साथ में Attach किए जाएं? क्या-क्या माँगा गया है वग़ैरा।

पिछले इशू में तो यह बात हुई थी कि कहाँ-कहाँ Apply करें मगर इस बार सबसे ख़ास बात यह है कि Form कैसे भरें। आजकल जो Forms आ रहे हैं उनमें Box-system होता है जो सीधे-सीधे Computer के ज़रिए देखा जाता है यानी System पर डाल दिया जाता है यानी जिस फ़ार्म को वह चाहे Accept कर ले, जिसे चाहे Reject कर दे। अब सवाल यह है कि वह किसी का रिश्तेदार या दुश्मन तो है नहीं, फिर इस जुमले का क्या मतलब! देखिए जितने भी इस तरह के काम हैं जो Highly Personal होते हैं उनके लिए इतने सख़्त इंतेज़ाम किए जाते हैं और System को इतना समझ-बूझकर Set किया जाता है कि कोई भी Data अगर ग़लत हुआ तो वह फ़ौरन उसे Reject कर देता है। आप यह बातें Bank, ATMs और बहुत से Internet के कामों में देखा करते हैं। यहाँ तक कि Form में अगर हलकी सी भी काट-पीट हुई तो कम्प्युटर Reject कर देगा। आपको कहाँ Space देना है, यानी जब भी नाम वग़ैरा भर रहे हों तो हर Word के बाद Space दीजिए, जैसे मेरा ही नाम हसन रज़ा है तो हसन के बाद Space, फिर रज़ा, फिर Space और नक़वी। यही तारीख़, Date of Birth वग़ैरा में भी ज़रूरी है।

दूसरे यह कि फ़ार्म हमेशा Capital Letters में भरें। Box के Centre में साफ़-साफ़ Alphabets के साथ पूरे इत्मिनान से फ़ार्म भरें। तमाम Letters का size बराबर होना चाहिए। Pen ऐसा हो कि Ink न फैले, न छोड़-छोड़ कर लिखता हो कि आप ने 'O' लिखा और 'C' लगने लगा या 'P' लिखा और 'F' लगने लगा। एक ही Color का Pen इस्तेमाल हो। जो माँगा है वही लिखिए, वही भरिए और वही साथ में Attach कीजिए। हर Document को उलट-पलट कर ज़रूर देख लें। यानी कभी-कभी ऐसा भी होता है कि Paper के दोनों तरफ़ लिखा होता है और Photostate कराते वक़्त बच्चे यह भूल जाते हैं कि दूसरी साइड भी कराना थी। इस तरह एक Document की वजह से फ़ार्म Reject हो जाता है। अब इतनी सारी पाबंदियाँ जब लगेंगी तो ग़लती ज़रूर होगी। इसका भी इलाज है। आप फ़ार्म की ही दो-तीन कापी करा लीजिए और फ़ार्म को पहले Photocopies पर भरिए।

अब यहाँ एक अहम बात ख़ास तौर से बुज़ुर्गों से कहना है।

बच्चे के Father को चाहिए कि पहला फ़ार्म अपने सामने बिठाकर बच्चे से उसी की Hand Writing में भरवाएं। फिर उसकी ग़लती को ग़ौर से देखें, उसे ठीक करें और दूसरी Photocopy पर फिर से अपने बच्चे से अकेले भरने को कहें। अब Finally जो फ़ार्म वह भरेगा वह बिल्कुल सही और Perfect होगा। इसके बाद एक काम और ज़रूरी है कि जब आप Final फ़ार्म भरने की तैयारी वाला फ़ार्म भर चुकें तो किसी Expert को ज़रूर दिखा दें यानी ऐसे बच्चों या Teachers को जो उस दौर से कामयाबी के साथ गुज़र चुके हों।

एक और बहुत अहम बात जो इसी साल मैंने Notice की है वह यह है कि कुछ दुकानदार Universities और Colleges के फ़ार्म बेचते हैं। अब वह कैसे और क्या करते हैं, यह तो नहीं पता मगर हम ने यह देखा है कि कुछ Universities के फ़ार्म्स पर उनके Monogram बने होते हैं जो फ़ार्म के हर Page पर होते हैं मगर इसी तरह की एक University का जो फ़ार्म यहाँ ख़रीदा गया उस पर वह Monogram बना हुआ नहीं था।

हमें नहीं पता कि ऐसे फ़ार्म Accept होंगे या

नहीं लेकिन यह यक़ीनी है कि जो फ़ार्म Reliable Outlets से लिया गया है और उसकी वही शक्ल है जो University या कालेज ने Release किया था तो वह ज़रूर Accept हो जाएगा। तो फिर क्यों किसी के कहने पर इधर-उधर से फ़ार्म ख़रीदा जाए। बहतर है कि Reliable Outlets से ही फ़ार्म ख़रीदें।

अक्सर जान-पहचान के और रिश्तेदारों के घर से शिकायतें आती हैं कि साहब फ़ुलाँ जगह Apply किया था मगर न जाने क्यों Form Reject हो गया। इसकी वजह यही छोटी-छोटी ग़लतियाँ हैं जिन्हें हम Overlook कर जाते हैं।

अब आप खुद सोचें कि इतनी मेहनत करने के बाद और दसियों साल पढ़ कर आप एक फ़ार्म ग़लत भर कर क्यों अपने एक साल का या एक ख़्वाब का नुक़सान करें? और अक्सर ऐसा होता है कि यह ख़्वाब टूट जाए तो बच्चा बिल्कुल ही Divert हो जाता है और कॅरियर इधर से उधर हो जाता है। बाद में उस कालेज को दोश देने लगते हैं और दूसरे लोगों से भी बताते हैं कि 'न जाने कैसा बेकार कालेज है फ़ार्म Reject कर देता है दो साल से यही हो रहा है' या यह भी कहा जाता है 'अरे साहब! वहाँ तास्सुब पाया जाता है वरना मेरा इतना अच्छा Result और उसके बाद भी फ़ार्म वापस आ गया...।''

जबकि वह फ़ार्म आपकी अपनी ग़लतियों से वापस आया है। आज भी दुनिया के तमाम मुल्कों में हिन्दुस्तान की यह ख़ास हैसियत है कि यहाँ सबसे कम तास्सुब पाया जाता है जबकि यहाँ सैकड़ों क़ौमें और पचासों मज़हब राएज हैं। कुछ जगहों पर सिर्फ़ मुसलमान हैं मगर हर महल्ला दूसरे महल्ले का दुश्मन है और सब एक दूसरे को बेदीन साबित करने में लगे रहते हैं।

आप Apply कीजिए और ज़रूर कीजिए। यह हमारी बहुत बड़ी बदनसीबी है कि हम सुनी-सुनाई बातों में आकर Apply भी नहीं करते और अच्छे Admission और फिर अच्छी नौकरियाँ तकते रह जाते हैं। हमारे यहाँ चाय के होटल में बैठकर फ़तवे देना बहुत आम है। एक दूसरे की सुनकर पूरे Confidence से ग़लत-सलत बातें फैला देते हैं और थोड़ी देर के Hero बन जाते हैं। यह बहुत बुरी वबाई बीमारी है जो ज़िंदगियाँ बरबाद कर देती है और सुन्ने वालों को भी चाहिए कि यक़ीन करने से पहले ग़ौर कर लिया करें। यह नहीं होना चाहिए कि जो सुना उसे आंख बंद करके मान लिया और फ़ैसला कर लिया। मेरे एक दोस्त बहुत बड़ी युनिवर्सिटी में Selection Committee के चेयरमेन बनाकर पूरे हिन्दुस्तान में एक ख़ास कोर्स के Interview के लिए बुलाए गए हैं। उन्होंने बताया कि क़रीब चालीस सीटों के लिए 650 लोगों ने Apply किया है जिसमें सिर्फ़ एक मुस्लिम Application आई है। उसने भी साथ में कोई Paper नहीं लगाया है... इस तरह की रोज़ की एक कहानी है।

जो लोग ऊँची पोस्ट पर बैठकर Interview लेते हैं वह ही हालात की सही जानकारी रखते हैं, उस पर बेचारे हमारी नाराज़गी का शिकार भी रहते हैं।

दोस्तो! ज़िंदगी सच्चाई है...इसे सच की तरह जिओ और जीने दो, ख़्वाबों की दुनिया सुबह होते ही उजड़ जाती है...। ●

रिश्वत

■ मिनहाज फ़ातिमा
जामेअतुज़्ज़ेहरा, लखनऊ

''ख़बरदार! एक दूसरे का माल नाजाएज़ तरीक़े से न खाना और न हाकिमों को देना कि रिश्वत देकर हराम तरीक़े से लोगों का माल खा जाओ जबकि तुम जानते हो कि यह तुम्हारा माल नहीं है।'' (सूरए बक़रा/188)

इस आयत में हमें एक बहुत बुरे काम से रोका गया है। हम से कहा गया कि एक दूसरे के माल पर क़ब्ज़ा न करें और दूसरों के माल को हड़प न करें। ऐसा न हो कि दूसरों के माल को हड़प करने और उसे नाहक़ खाने से उन्हें क़ाज़ियों के रूबरू जाना पड़े और फिर उन्हें भी रिश्वत के तौर पर तोहफ़े पेश किए जाने लगें ताकि लोगों का माल ज़ुल्म से अपनी मिलकियत बन सके। अगर ऐसा होता है तो इस काम में दो बड़ी ग़लतियाँ होंगी।

एक तो दूसरों का हक़ मारना और दूसरे रिश्वत देना। रिश्वत का मसला दीन की नज़र में इतना अहम है कि इमाम सादिक़ फ़रमाते हैं, ''फ़ैसले करने में रिश्वत लेना ख़ुदा से कुफ़्र है।''

ऊपर वाली आयत साफ़-साफ़ कह रही है:-

अगर कुछ लोग रिश्वत के सहारे अदालत में कामयाब हो जाएं तो नाजाएज़ माल उन पर हराम ही रहेगा और ज़ाहिरी तौर पर अपने हक़ में अदालत के हुक्म से वह माल का हक़ीक़ी मालिक नहीं बन सकता।

रसूल[स०] फ़रमाते हैं, ''मैं तुम्हारी तरह ही एक इन्सान हूँ और मुझे हुक्म दिया गया है कि तुम्हारे बीच ज़ाहिरी तरीक़े से फ़ैसले करूँ। हो सकता है कि कुछ लोग दलील और सुबूत देने में ज़्यादा क़ाबिल हों और मैं ज़ाहिरी दलील की वजह से उनके हक़ में फ़ैसला कर दूँ लेकिन यह जान लो कि अगर मैं किसी के का हक़ होते हुए दूसरे के हक़ में फ़ैसला कर भी दूँ तब भी वह जहन्नम का एक हिस्सा है...।''

अगर समाज में रिश्वत फैल जाएगी तो समाजी ज़िंदगी की चूलें हिल जाएंगी और ज़ुल्म, फ़साद व नाइंसाफ़ी समाज पर छा जाएगी, साथ ही क़ानून व इंसाफ़ सिर्फ़ नाम के बाक़ी रह जाएंगे। इसीलिए दीन ने रिश्वतख़ोरी को सख़्ती से मना किया है और इसको गुनाहे कबीरा बताया है। रिश्वत जैसी बुराई दूसरे पुरफ़रेब नामों से भी की जाती है लेकिन नामों की तबदीली किसी भी तरह उसकी असलियत को नहीं बदल सकती। ●

क़ोरमा मटन बिरयानी

बकरे का गोश्तः एक किलो
(रान का गोश्त ठीक रहेगा)
चावल बासमतीः एक किलो
(बीस मिनट के लिए भिगो दें) बिरयानी या पुलाव में चावल और गोश्त हमेशा बराबर होने चाहिए)
दहीः एक प्याली
प्याज़ः कटी हुई
बारीक कटी हुई अदरकः 2
लहसुनः पिसा हुआ एक खाने का चम्मच
पिसा हुआ धनियाः दो खाने के चमचे
साबुत हरी मिर्चः 2
छोटी इलाइचीः आधा टी स्पून
बड़ी इलाइचीः ज़ायक़े के हिसाब से
काला ज़ीराः ज़ायक़े के हिसाब से
नमकः आधा टी स्पून
ज़रदाः दूध में भिगो दें
सिरकाः 1 खाने का चम्मच
घीः 2 प्याली

तरकीबः

सबसे पहले एक बर्तन में गोश्त, दही और सब मसाले अच्छी तरह मिला लें। इसके बाद एक देग़ची में घी डाल कर प्याज़ डाल दें, प्याज़ ब्राउन हो जाए तो गोश्त डाल दें। हल्की आंच में पकने दें। जब गोश्त गल जाए तो भून कर उतार लें। शोरबा थोड़ा गाढ़ा होना चाहिए। एक बड़ी देग़ची में दस प्याली पानी डाल कर उबालने के लिए रख दें, साथ ही इसमें तीन छोटी इलाइची, साबुत हरी मिर्चे और एक खाने का चमचा सिरका भी डाल दें। जब पानी ब्वायल हो जाए तो चावल और नमक डाल दें। चमचा चलाती रहें। जब दोगुनी हो जाएं तो छान लें। फिर एक देग़ची में नीचे थोड़े चावलों की तह, फिर गोश्त की, इसी तरह दो तीन तह निकालें, आख़िरी तह चावलों की होनी चाहिए। फिर दूध में भिगोया हुआ ज़र्दे का रंग डाल दें।

ढक्कन पर अख़बार या कपड़ा ढांक दें। तेज़ आंच में तवे पर रख दें। थोड़ी देर बाद आंच हल्की कर दें। क़रीब बीस मिनट तक दम पर रख दें।

डिश तैयार है, सर्व कीजिए।

नए बच्चे नई परवरिश

■ फ़ातिमा कुम्मी

अगर माली अपने बाग़ में एक बीज बोए और कुछ दिनों बाद उसमें पौधे और कलियां निकल आएं तो क्या आप माली की ख़ुशियों का अंदाज़ा लगा सकती हैं? वह बहुत ज़्यादा ख़ुश होगा और अब वह उसे हर नुक़सान देने वाली चीज़ से बचा कर रखेगा। अब उसकी एक ही फ़िक्र होगी, कोई इन्सान, जानवर या कीड़े-मकोड़े उसके पौधे को किसी भी तरह का कोई नुक़सान न पहुंचा सकें। लेकिन जब कलियां खिलने को तैयार हों और वह उनकी हिफ़ाज़त के लिए ख़ुद ही कांटेदार झाड़ियों का झुंड लाकर उसके ऊपर डाल दे तो बताईए क्या ऐसे उसकी हिफ़ाज़त हो सकती है।

बिल्कुल ठीक यही हाल हमारे आंगन में खिलने वाले नन्हे-मुन्ने फूलों का भी है। इनकी कंडीशन भी ऐसी ही है। हम ख़ुद ही उन्हें ऐसी चीज़ें लाकर दे देते हैं जो उनके लिए नुक़सानदेह होती हैं। जैसे ढेरों खिलौने, चाकलेट्स, तरह-तरह की टाफ़ियां, टीवी, कार्टून्स सी.डी., कम्प्यूटर वग़ैरा। बेशक यह सब चीज़ें आज के लिए बहुत ज़रुरी हैं मगर एक लिमिट के अंदर, इस तरह कि इन सब की वजह से बच्चे की पर्सनॉलिटि और कैरेक्टर पर बुरा असर न पड़ रहा हो।

दरअस्ल यह सब इस तरह की बातें हैं जिन्हें मां-बाप बनने से पहले ही मियां-बीवी को सीखना चाहिए। परवरिश की प्लानिंग भी पैरेंटस को पहले ही से कर लेनी चाहिए। बच्चे मां-बाप की ज़िंदगी में किस हद तक ख़ुशहाली ला सकते हैं, यह सब कुछ इस बात पर डिपेंड करता है कि मां-बाप का बिहेवियर उनके साथ किस तरह का है। एक्सपर्टस के मुताबिक़ मां-बाप का ग़लत सुलूक ही बच्चे के बिगड़ने में अहम रोल प्ले करता है। मां-बाप को अपने बारे में सीरियसली ग़ौर करना चाहिए।

साइंस की दुनिया रोज़ हमारे सामने नई-नई आसानियं पैदा कर रही है। जिसकी वजह से कोई भी काम बड़ी आसानी से हो जाता है। आज हमारे लिए किचन की सफ़ाई-सुथराई और धुलाई बल्कि घर का कोई काम मुश्किल चीज़ नहीं रह गया है बल्कि चुटकियों में हो जाता है। औरतों के पास टाईम की काफ़ी बचत हो जाती है जिसकी वजह से उनका ज़ेहन इधर-उधर भटकने लगा है और दूसरी एक्टिविटीज़ में उनकी दिलचस्पियां काफ़ी बढ़ रही हैं। उनके पास काफ़ी ख़ाली टाईम होने की वजह से जो हॉबीज़ बन रही हैं उसके जहां दूसरे और फ़ायदे हैं वहीं नुक़सान भी हैं। जो बच्चा मां के साए में पलने की जगह दिन रात कम्प्यूटर, टीवी, कार्टून, मोबाईल वग़ैरा के कंट्रोल में रहेगा, वह दीनी और अख़लाक़ी टीचिंग्स को कभी नहीं जान सकता। मां ही है जो बच्चे को वह सब चीज़ें सिखा सकती है जो वह चाहती है। इसलिए जब बच्चा मां से दूर रहेगा तो कुछ नहीं सीख पाएगा और जिसके पास या सामने बैठा रहेगा उसी से उसी के जैसा सीख लेगा। अक्सर देखा गया है कि मां अपने काम में लगी हुई है और बच्चा घंटों-घंटों कार्टून देख रहा है। जिसका असर यह होगा कि वह टी.वी. के कहने पर चलना सीखने लगेगा। यही रास्ता बच्चे के बिगड़ने का है।

टी.वी. और ख़ास कर कार्टून्स देखते-देखते बच्चे की अपनी एक अलग दुनिया बन जाती है। इसके ज़रिए बच्चे को शुरु से ही एजुकेशन का मक़सद हाई-फ़ाई स्टेटस, गाड़ी, बंगला वग़ैरा समझाया जाता है और समाज से कट कर रहने को स्टेटस-सिम्बल के तौर पर उसमें घोला जाता है। ऐसी सोच में पलने वाले बच्चे इसी उम्मीद के बारे

में सोचते हुए आगे बढ़ते हैं। उनसे ऐसी उम्मीद करना कि यह आगे चलकर हमारे ही जैसे सीधे-सच्चे और नेक निकलेंगे, बिल्कुल ग़लत है। आख़िर वह रोबोट तो नहीं हैं कि जो आप सोचें वह वही करें बल्कि वह तो इस बात पर डिपेंड करते हैं कि आप उन्हें क्या दे रही हैं और क्या नहीं। अगर आप उन्हें टी.वी. दिखाना ही चाहती हैं जो आज की ज़रूरत भी है तो अपनी पूरी निगरानी में दिखाईए, चाहे वह कार्टून ही क्यों न हों क्योंकि बच्चों के कार्टून भी गंदे-गंदे एडर्वटाइज़मेंट्स से भरे पड़े होते हैं। और अब तो सिर्फ़ एडर्वटाइज़मेंट्स ही नहीं बल्कि कार्टून के थीम्स भी ऐसे नहीं रह गए हैं कि आप अपने बच्चों को देखने दें।

उधर एक नई मुश्किल अब यह भी सामने आ रही है कि आज की माओं के पास इतना ज़्यादा वक़्त होने के बावजूद भी वक़्त नहीं है, सब यही कहती हैं कि क्या करें टाईम ही नहीं मिलता। इसलिए वह अपने बच्चों को बस स्कूल और ट्यूशन के भरोसे छोड़ देती हैं। यह काफ़ी नहीं है बल्कि ख़ुद भी बच्चे पर घर में और घर से बाहर नज़र रखना पड़ेगी कि वह क्या कर रहे हैं और कहां हैं? बच्चों को उठते-बैठते ऐसे क़िस्से और कहानियां सुनाईए जिनसे उनकी अख़लाक़ी और ज़हनी इस्लाह हो सकती हो।

रिलायंस ग्रुप के मालिक मुकेश अम्बानी की वाईफ़ टीना अम्बानी जो ख़ुद भी एक सोशल वर्कर हैं, बहुत से इंस्टीट्यूशन चलाती हैं और न जाने क्या-क्या करती हैं यानी बिज़ी होना किसे कहते हैं यह वही बता सकती हैं, वह अपने एक इंटरव्यू में कहती हैं, "ज़िंदगी में इतनी सारी भाग-दौड़ और इतना ज़्यादा बिज़ी होने के बावजूद भी मुझे पता होता है कि मेरा बेटा किस वक़्त कहां हैं।"

यह सिर्फ़ एक मिसाल थी यानी कहने का मक़सद यह है कि हम यह नहीं कह सकते कि हमारे पास टाईम ही नहीं है। इन्सान चाहे तो हर चीज़ को मैनेज कर सकता है।

न्यूयार्क में एक आदमी अपने घोड़े से तंग आ गया था। जबकि घोड़ा बहुत ही तेज़, तंदरुस्त और अच्छी नस्ल से था लेकिन ज़िद्दी और अड़यल था। उसका मालिक उसके ऊपर ख़ूब चाबुक बरसाता था मगर घोड़े ने अपनी हटधर्मी नहीं छोड़ी। आख़िर उस आदमी ने मजबूर होकर अपने घोड़े को सस्ते दामों में बेच डाला। पांच साल बाद एक नुमाईश में लोग फिर उसी घोड़े को देखकर हैरान रह गए। घोड़े के नए मालिक ने बताया, "इन पांच सालों में मैंने कभी इस घोड़े को एक चाबुक भी नहीं लगाया, हमेशा प्यार-पुचकार कर ही काम लिया है।"

इस मिसाल से दो बातें सामने आती हैं। पहली यह कि प्यार-मोहब्बत जानवरों तक को बस में कर लेने की ताक़त रखती है, इंसान तो फिर इंसान है। तभी तो दीन ने कहा है कि जब अपने किसी दीनी भाई से मिलो तो सलाम किया करो, सलाम करने से सामने वाले के दिल में प्यार पैदा होता है।

दूसरी बात यह कि प्यार के लिए वक़्त चाहिए मगर फ़ैशनेबिल, बेहिजाब, आफ़िस-गोयर्स, शानो-शोकत वाली आज की लड़कियों के पास बच्चों के लिए वक़्त कहां है। उन्हें मीटिंग्स, दावतों, दोस्तों, बातों, शापिंग और फ़ैशन वग़ैरा से फ़ुरसत ही कहां है?

कुछ औरतें यह कहते हुए भी मिलेंगी कि मैंने अपने बेटे को चार दिन से फूल की छड़ी भी नहीं लगाई है लेकिन उसकी आदत में ज़रा सा भी फ़र्क़ नहीं आया है। उनसे अगर यह पूछा जाए कि चार महीने से जो आप ने बच्चे को मारा-पीटा है, उससे भी कौन सा फ़र्क़ आया? तो उनके पास इसका कोई जवाब नहीं होता। दरअस्ल वह जिस फल की उम्मीद चार दिन बाद करती हैं वह चार महीने बाद मिलता है। इसलिए इसमें सब्र से काम लेना बहुत ज़रुरी होता है।

आज अक्सर पेरेंटस नई नस्ल की बदलती हुई ज़िंदगी से बहुत परेशान हैं। वह कभी मीडिया पर तो कभी इंटरनेट पर इल्ज़ाम लगाते हुए नज़र आते हैं मगर अपनी ज़िम्मेदारियों में पीछे दिखते हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि आज का ज़माना पैरेंट्स से चाहता है कि वह परवरिश का अपना अंदाज़ और तरीक़ा बदल दें। 'हमारे टाईम में यह होता था और वह होता था' अब इन सब बातों से कोई फ़ायदा नहीं है। पहले वाला रोब और डांट-डपट से भी अब काम नहीं चल सकता। इसके अलावा बच्चों के साथ मां-बाप का ऐसा बिहेवियर ख़ुद उनके कांफ़िडेंस पर डायरेक्ट असर करता है और रिज़ल्ट, बिगाड़ के सिवा कुछ नहीं निकलता। यह भी सच है कि कम पढ़े-लिखे और भोले-भाले मां-बाप आज की ज़रुरतों पर पूरे नहीं उतर रहे हैं। इसके बावजूद हालात से निपटना बेहरहाल बहुत ज़रुरी है। इसलिए पैरेंटस को चाहिए कि अपने बच्चों की सोच और उनके लेवल तक पहुंचने की कोशिश करें। तभी तो इमाम अली[अ०] ने कहा है, "अपने बच्चों की परवरिश उनके ज़माने के एतेबार से करो, न कि अपने ज़माने के एतेबार से।"

सबसे ख़ास बात यह है कि बच्चों को पालने में पैरेंटस को अपना बिहेवियर अच्छा करना होगा क्योंकि जिस्मानी कमज़ोरी का तो इलाज हो सकता है लेकिन अगर बचपने के कमज़ोर ज़ेहन की दिमाग़ी ग्रोथ ग़लत रास्ते की तरफ़ चल पड़े तो आगे चलकर यक़ीनन पैरेंटस के लिए बहुत सख़्त मसला बन जाएगा।

झूठे दावे

असली चीज़ की कापी बनाना बहुत आम सी बात है। जब भी कोई सामान मशहूर हो जाता है तो बहुत से लोग उसकी नक़ल बना के बेचने लगते हैं और इस तरह असली चीज़ के नाम का फ़ाएदा उठाते हैं। घरेलू इस्तेमाल के छोटे सामान से लेकर दवाएं, सोने-चाँदी और इलेक्ट्रानिक सामान...हर जगह यह गोरख धंधा देखा जा सकता है। ज़्यादा तर लोग सिर्फ़ नाम की वजह से सामान इस्तेमाल करते हैं उनकी नज़र क्वालिटी पर नहीं होती, इसलिए वह नाम से ही धोखा खा जाते हैं।

सामान की दुनिया से बाहर निकलें तो हमें हर जगह यह डुप्लीकेसी मिल जाएगी। असली और सच्चे दीन की जगह पर झूठे और नक़ली दीन और असली नबियों की जगह झूठे-नक़ली नबी। जिनकी नज़र क्वालिटी के बजाए सिर्फ़ नाम पर होती है वह झूठे दीन और झूठे नबियों से भी धोखा खा जाते हैं।

रसूले इस्लाम[स०] की हदीसों की वजह से मुसलमानों के बीच यह अक़ीदा फैल चुका था कि उनका आख़िरी वारिस और ख़लीफ़ा आएगा जिसका नाम मेहदी होगा। वह ज़ालिमों का मुक़ाबला करेगा और मज़लूमों को निजात दिलाएगा। बहुत से लोगों ने इस अक़ीदे से फ़ाएदा उठाने की कोशिश की और अपने आपको "मेहदी" या उनका नुमाइंदा और वकील कहा।

कुछ लोगों ने लीडरशिप और हुकूमत हासिल करने के लिए मेहदी होने का दावा किया। इसके अलावा बहुत सी जगहों पर दुश्मनों ने मुसलमनों के बीच नए फ़िरक़े बनाने, उनमें फूट डालने और लोगों के बीच इस अक़ीदे को कमज़ोर बनाने के लिए लोगों को तैयार किया कि वह मेहदी होने का दावा करें।

इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने ख़ुद "मेहदी" होने का दावा नहीं किया बल्कि उनके मानने वालों ने उन्हें यह टाइटिल दे दिया। जैसे इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०] के बेटे ज़ैद ने जब हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत और जंग की तो उनके मानने वाले उन्हें मेहदी कहने लगे ताकि इस तरह ज़्यादा लोगों को अपनी तरफ़ बुलाएं और अपना लश्कर मज़बूत करें। इन्हीं लोगों की वजह से "ज़ैदिया" मज़हब बना जिसके मानने वाले आज भी यमन के कुछ शहरों में हैं।

"बहाई" मज़हब के असली फ़ाउण्डर अली मोहम्मद बाब ने भी इमाम मेहदी होने का दावा किया और कुछ जगहों पर अपने मानने वाले पैदा कर लिए।

उनके मज़हब को ''बाबिया'' कहा जाता है जो बाद में जाकर दो फ़िरक़ों में बंटा। अली मोहम्मद के बेटे हुसैन अली और मिर्ज़ा यह्या के बीच लीडरशिप के लिए झगड़ा हो गया। हुसैन अली जो बहाउल्लाह के नाम से मशहूर था उसके मानने वाले बहाई कहलाए और मिर्ज़ा यह्या के मानने वालों को ''अज़लिया'' कहा गया।

इसी तरह गुलाम अहमद क़ादयानी ने भी 'मेहदी' होने का दावा किया। गुलाम अहमद ने इसके साथ-साथ ईसा मसीह होने का भी दावा किया। बाद में अपने को नबी कहा और यह भी कहा कि मुझ पर आसमान से ''वही'' नाज़िल होती है और ख़ुदा मुझ से बातें करता है।

इनके अलावा हिन्दुस्तान में सैय्यद अहमद, सूडान में मोहम्मद अहमद और दूसरे बहुत से ऐसे लोग हैं जिन्होंने यह झूठा दावा किया है। यह दावा करने वालों के साथ-साथ उन लोगों की भी ग़लती है जो उनके दावे को मान लेते हैं और आँख बंद करके कुछ सोचे-समझे बग़ैर उनके पीछे चल देते हैं। इन मानने वालों के दरमियान एक चीज़ कॉमन है और वह यह कि यह नहीं जानते कि इमाम और ख़ुदा का नुमाइंदा कैसा होता है। शायद इसीलिए रिवायतों में इमाम को पहचानने और उसकी ''मारफ़त'' हासिल करने पर इतना ज़ोर दिया गया है जिसका एक फ़ाएदा यह भी है कि लोग ग़लत लोगों को अपना इमाम और लीडर न मान बैठें।

इमामे ज़माना[अ॰] की ग़ैबत के ज़माने में यह ख़तरा ज़्यादा था शायद इस वजह से भी रिवायतों में यह बात तफ़सील से बयान की गई है कि इमामे ज़माना[अ॰] किसकी नस्ल से हैं, किस तरह के होंगे, उनके आने से पहले कैसी निशानियाँ सामने आएंगी और वह आने के बाद दुनिया में क्या करेंगे। लेकिन जिन लोगों को अपने दीन और ईमान के बारे में कुछ भी नहीं मालूम है वह सिर्फ़ जज़्बात और अंधी मोहब्बत के बहाव में बह कर ऐसे लोगों का दावा मान लेते हैं।

इसी तरह से बहुत से ऐसे लोग हैं जो यह कहते हैं या अपनी बातों से समझाने की कोशिश करते हैं कि वह इमामे ज़माना[अ॰] से मिलते हैं, लोग उनके पास आकर अपना हाल और अपनी मुश्किलें कहते हैं और वह उनको इमामे ज़माना[अ॰] से बयान करते हैं और फिर इमाम लोगों की मुश्किलें दूर करने के लिए कुछ चीज़ें बताते हैं या उनके सवालों के जवाब देते हैं। लेकिन ज़्यादा तर ऐसे लोग आम लोगों के जज़्बात का फ़ाएदा उठाकर उन से माल-दौलत या शोहरत और हैसियत कमाते हैं।

यह भी देखा गया है कि कुछ लोग हमेशा यह पूछते रहते हैं कि किस तरह इमामे ज़माना[अ॰] को देखा जा सकता है और उन से मिला जा सकता है। शायद ऐसी कुछ दुआएं और अमल भी लोगों के पास हैं लेकिन यह मोतबर नहीं हैं। वैसे भी ग़ैबत के दौर में रहने वालों की ज़िम्मेदारी यह नहीं है कि वह इमाम से मिलने की कोशिश करें बल्कि उनका काम उस रास्ते पर चलना है जो ख़ुदा ने अपने बनाए हुए नुमाइंदों और इमामों के ज़रिए हम तक पहुँचाया है। इमामों की ज़िंदगी में बहुत से ऐसे लोग थे जो इमाम से आकर मिलते थे, इमाम के आसपास रहते थे लेकिन फिर भी उन से कोई फ़ाएदा नहीं उठा सके और वह गुमराह ही रहे जबकि बहुत से ऐसे लोग थे जिन्होंने इमाम को कभी देखा भी नहीं था उन तक सिर्फ़ इमाम की बातें और हुक्म पहुँचते थे और वह उन पर अमल करके अपना किरदार और अपनी शख़्सियत संवारते थे।

यहाँ पर यह कहना ज़रूरी है कि इमामे ज़माना[अ॰] ने ग़ैबत के वक़्त यह फ़रमा दिया था कि ग़ैबत के ज़माने में आने वाली नई-नई मुश्किलों और मसलों का हल इन्हीं लोगों से लेना जो हमारी हदीसें जानते हैं यानी जो दीन को अच्छी तरह पहचानते हैं और हमारी हदीसों की रौशनी में हर ज़माने के नये-नये मसलों को हल कर सकते हैं। इस हदीस का मतलब है कि हर ज़माने में ऐसे लोग पैदा होते रहेंगे। लेकिन ऐसे उलमा और मुजतहिदों ने कभी यह दावा नहीं किया है कि वह इमाम से मिलते हैं और इमाम से हुक्म लेते हैं और न ही वह इमाम के नाम पर अपने लिए दौलत और शोहरत कमाते हैं बल्कि ऐसे लोग सच्चाई और पाकीज़गी के साथ लोगों तक दीन को पहुँचाते रहते हैं और नये ज़माने की नई-नई मुश्किलें और उनको हल करने का तरीक़ा बताते रहते हैं। इमामे ज़माना[अ॰] ने ऐसे ही लोगों से अपना दीन लेने और उनकी बातों पर अमल करने का हुक्म दिया है। ●

آج ہی ممبر بنئے
زر سالانہ
Rs.150

دوماہی
مؤمل
لکھنؤ

द्विमासिक
लखनऊ
मुअम्मल
MUAMMAL

उमदा तबाअत	عمدہ طباعت
आसान ज़बान	آسان زبان
क़ुर्आनी मालूमात	قرآنی معلومات
अख़्लाक़ी बातें	اخلاقی باتیں
आर्ट गैलरी	آرٹ گیلری
इस्लामिक पज़ल	اسلامک پزل
कामिक्स	کامکس

AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION
546/203 Near Era's Lucknow Medical College
Sarfarazganj, Hardoi Road, Lucknow-3 U.P. (India)
Ph.: 0522-2405646, 9839459672
email: muammal@al-muammal.org

صلوات اللہ علیہ

علی نقی

5

Rajab

विलादते

इमाम

अली नक़ी अ०

मुबारक हो

क़ुरआन के क़िस्से

STORIES OF QURAN

■ फ़साहत हुसैन

क़िस्से और कहानियों का चलन हर ज़माने और हर ज़बान में है। उनमें से बहुत से क़िस्से सच्चे तो नहीं होते हैं लेकिन उनके ज़रिए कोई अच्छी बात पेश की जाती है यानी एक आदमी या शायर इस तरह के क़िस्से इसलिए कहता है ताकि उस क़िस्से के ज़रिए अपनी बात कह सके। इस तरह के कुछ क़िस्से इतने मशहूर हो जाते हैं कि लोग समझते हैं कि ऐसे वाक़िए पिछले ज़माने में हुए होंगे। इन कहानियों के कैरेक्टर से लोगों को मोहब्बत हो जाती है, लोग अपनी बोलचाल में उनका नाम लेते हैं और अपने बच्चों के नाम उन ख़याली कैरेक्टर्स के नाम पर रखते हैं।

कभी-कभी यह कहानियाँ बिल्कुल ग़लत भी नहीं होती हैं यानी गुज़रे हुए ज़माने में कोई ऐसी बात होती है लेकिन लोग उसे बढ़ा-चढ़ा कर और नमक-मिर्च लगाकर बताते हैं और जैसे-जैसे ज़माना आगे बढ़ता जाता है यह कहानियाँ बड़ी होती जाती हैं।

जिस ज़माने और मुल्क में क़ुरआन नाज़िल हुआ वहाँ क़िस्सों और कहानियों का बहुत रिवाज था। 'अल्फ़ लैलतुन' जिसे हमारे यहाँ 'अलिफ़ लैला' कहा जाता है यह अरब मुल्क की कहानियाँ हैं। अल्फ़ का मतलब हज़ार और लैलतुन के मायने रात के हैं यानी "हज़ार रातों की कहानियाँ"।

उस ज़माने में पिछले नबियों के क़िस्से भी लोगों के दरमियान सुनाए जाते थे। बाईबिल में इनमें से बहुत से क़िस्से मौजूद थे लेकिन उनकी सबसे बड़ी मुश्किल यह थी कि या तो यह कहानियाँ और क़िस्से बिल्कुल गढ़े हुए थे और उनमें बिल्कुल सच्चाई नहीं पाई जाती थी और लोगों ने वक़्त गुज़ारने या किसी शायर ने शेर कहने के लिए उन्हें गढ़ लिया था या नाबियों के बारे में कुछ ऐसे क़िस्से थे जो सच्चे थे तो लेकिन लोगों ने बाईबिल की बहुत सी बातों को बदल दिया था और उसमें ऐसे क़िस्से लिख दिए थे जो नबियों की शान के ख़िलाफ़ थे।

ऐसे ज़माने में क़ुरआन नाज़िल हुआ और उसने भी लोगों की हिदायत के लिए गुज़रे हुए नबियों और लोगों के कुछ क़िस्से बयान किए। इन क़िस्सों के ज़रिए क़ुरआन ने नबियों और गुज़री हुई क़ौमों के वाक़िआत को उनके सही अंदाज़ में पेश किया और बाईबिल के वाक़िआत में उनके लिए जो ग़लत बातें कही गई थीं उनका इनकार करते हुए सच्चे वाक़िआत बयान किए। इसीलिए क़ुरआन ने कहीं भी गढ़ी हुई कहानियाँ नहीं पेश कीं। क़ुरआन लोगों की हिदायत के लिए नाज़िल हुआ था इसलिए उसके क़िस्सों का मक़सद भी लोगों की हिदायत थी न कि उनका इंटरटेनमेंट करना, इसी वजह से उसने सिर्फ़ उन्हीं क़िस्सों को चुना जिनके ज़रिए वह कोई मैसेज दे सकता था।

सबसे ज़्यादा दिलचस्प और अहम बात क़ुरआन का क़िस्से बयान करने का अंदाज़ है। क़िस्से बयान करने का मक़सद लोगों को मैसेज देना था, इस वजह से वह बहुत सी चीज़ें जो दूसरे क़िस्सों और कहानियों में पाई जाती हैं क़ुरआन उन्हें बयान नहीं करता है या बयान तो करता है लेकिन सारा ज़ोर इसी पर नहीं देता है। हम यहाँ पर उनमें से कुछ चीज़ें पेश कर रहे हैं:

1- हर कहानी का एक कैरेक्टर होता है जिसके आस-पास पूरी कहानी घूमती है। कभी-कभी लोगों के ज़ेहन में सिर्फ़ यही कैरेक्टर

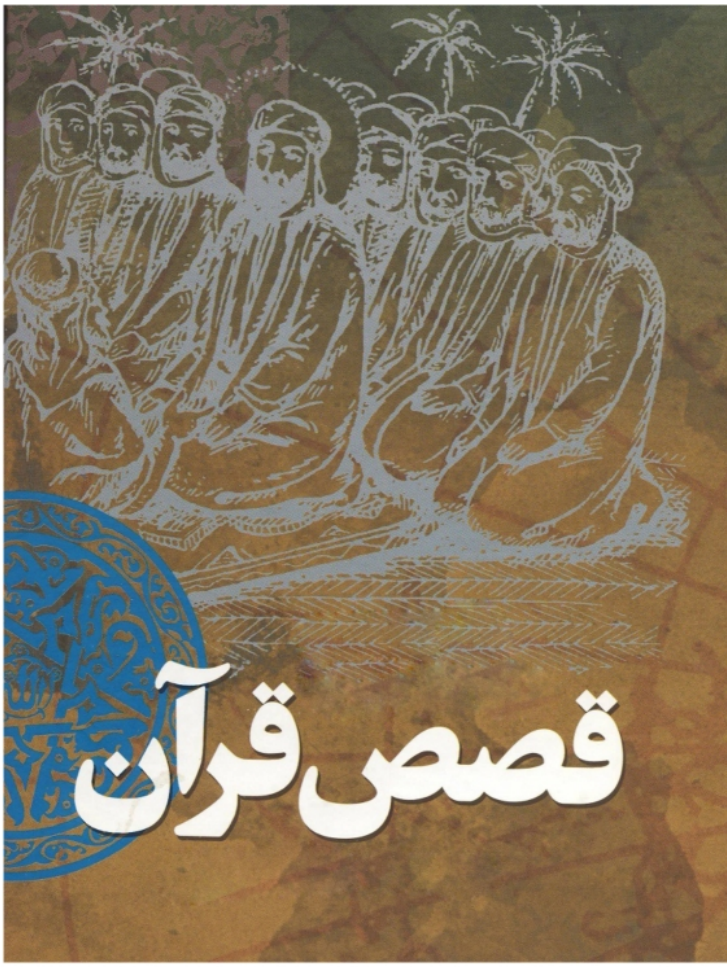

रह जाता है। क़ुरआन के जिस क़िस्से में कैरेक्टर अहम होते हैं और उनका नाम लेना ज़रूरी होता है वहाँ क़ुरआन उनका नाम लेता है जैसे बहुत से नबियों या दूसरे लोगों का नाम। लेकिन क़ुरआन उन कैरेक्टर को आईडियल बनाकर सबके सामने पेश करता है जैसे हज़रत यूसुफ़[अ॰] के गुनाह से बचने का वाक़िआ है। क़ुरआन सिर्फ़ यह नहीं बताना चाहता है कि एक यूसुफ़ थे जो इतने बुरे माहोल में गुनाह से बच गए थे बल्कि वह यह कहना चाहता है कि हर आदमी की ज़िम्मेदारी है कि अगर माहोल उतना ज़्यादा भी ख़राब हो जाए तब भी वह अपने आपको बचाए और अगर वह अपने आप को बचाना चाहेगा तो ख़ुदा ज़रूर उसकी मदद करेगा। या जैसे हज़रत मूसा[अ॰] का फ़िरऔन से मुक़ाबले के लिए जाना। क़ुरआन सिर्फ़ जनाबे मूसा का क़िस्सा नहीं बयान करना चाहता है बल्कि उसे बयान करने का मक़सद यह है कि हर ज़माने में फ़िरऔन पाए जाते हैं जो अपनी ज़बान से या अपने अमल से ख़ुदा होने का दावा करते हैं इसलिए उनसे मुक़ाबला करना चाहिए।

क़ुरआन में बहुत से ऐसे क़िस्से मिलते हैं जिनमें उनके कैरेक्टर का नाम नहीं लिया गया है क्योंकि उनके कैरेक्टर अहम नहीं थे ताकि लोगों का ज़ेहन उनके नाम में न उलझे।

2- दूसरे क़िस्सों और क़ुरआन के क़िस्सों में एक फ़र्क़ यह भी है कि किसी भी किताब में अगर क़िस्सा बयान किया जाता है तो पूरा बयान किया जाता है लेकिन क़ुरआन हिस्ट्री या क़िस्सों की किताब नहीं है इसलिए वह पूरा क़िस्सा नहीं बयान करता है बल्कि जिस हिस्से में असली मैसेज होता है या जो हिस्से असली मैसेज को पहुँचाने में मदद करते हैं सिर्फ़ उनको बयान करता है। आप क़ुरआन का कोई भी क़िस्सा उठाकर देख लें उसमें आपको सिर्फ़ कुछ सिलेक्टेड बातें ही मिलेंगी क्योंकि क़ुरआन कोई भी ऐसी चीज़ नहीं बयान करना चाहता जिससे उसके मैसेज पर असर पड़े।

3- क़ुरआन ने आमतौर से साल, महीना और गिन्ती बयान नहीं की है ताकि लोगों का ज़ेहन तारीख़ों में उलझकर न रह जाए लेकिन जहाँ पर ज़रूरत होती है वहाँ उनको भी बयान किया है जैसे अस्हाबे कहफ़ के बारे में है कि वह "ग़ार में 309 साल तक रहे।" (18/25)

यहाँ पर क़ुरआन ने साल बताए ताकि वह ख़ुदा की क़ुदरत और रहमत को पेश करे कि जब कुछ लोग ख़ुदा को मानने की वजह से अपना शहर और बादशाह का महल छोड़कर चले गए तो ख़ुदा ने उन्हें एक ग़ार में पनाह दे दी। ऐसा ख़ुदा जो एक ग़ार में अपने बंदों को इतने सालों तक ज़िंदा रख सकता है वह लोगों को मरने के बाद ज़िंदा भी कर सकता है।

इसी तरह क़ुरआन सिर्फ़ उस वक़्त जगह का नाम लेता है जब वह ख़ास हो वरना क़ुरआन हर शहर और मुल्क का नाम नहीं लेता। जैसे रसूल[स॰] की मेराज के वक़्त वह बयान करता है कि ख़ुदा अपने बंदे को मस्जिदुल हराम से मस्जिदुल अक़्सा तक ले गया क्योंकि इन जगहों का नाम लिए बग़ैर यह वाक़िआ अधूरा था।

इस तरह हम देखते हैं कि क़ुरआन ने सिर्फ़ रूखी-सूखी ज़बान में लोगों तक मैसेज नहीं पहुँचाया है बल्कि ख़ूबसूरत क़िस्सों का भी सहारा लिया है इसके बावजूद उसका असली मक़सद मैसेज और पैग़ाम है।

इसी वजह से जब क़ुरआन पढ़ने वाला गुज़री हुई क़ौमों के बारे में पढ़ता है तो उसे यह नहीं लगता है कि वह हज़ारों साल पहले मरने वाले कुछ लोगों की कहानी पढ़ रहा है बल्कि उसे लगता है कि यह हमारे आस-पास की ही कोई बात है जिसका हम से कोई न कोई रिलेशन ज़रूर है। और इस तरह वह यह सोचने पर मजबूर हो जाएगा कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि जो ग़लतियाँ उन क़ौमों ने की थीं वही हम भी कर रहे हों। क़ुरआन उन ग़लतियों को ज़िक्र करता है ताकि हम उनको न दोहराएं।

क़ुरआन कुछ ऐसे क़िस्से भी बयान करता है जिनमें ख़ुदा ने अपने नबी को मुर्दे ज़िंदा करके दिखलाए हैं ताकि लोगों को क़यामत का यक़ीन हो जाए।

कहीं-कहीं पर क़ुरआन ने ऐसे क़िस्से भी बयान किए हैं जिनसे मोमिनों के दिल हमेशा मज़बूत रहें और वह ख़ुदा की राह में मुश्किलें और सख़्तियाँ बरदाश्त करने के लिए तैयार रहें या अपनी मदद का ज़िक्र करता है कि अगर वह दीन पर चलेंगे तो ख़ुदा दुश्मनों के मुक़ाबले में उनकी मदद करेगा और आख़िर में उनकी ही जीत होगी जैसे जंगे बद्र में मुसलमानों की मदद का वाक़िआ।

इन सारी बातों को ज़हन में रखने के बाद यह बात समझ में आ जाती है कि क़ुरआन ने कुछ क़िस्सों को क्यों बार-बार दोहराया है। क्योंकि यह क़िस्से इतने ख़ास थे कि यह बार-बार क़ुरआन पढ़ने वाले के सामने आएं और इनका मैसेज उसके सामने रहे। ●

ग़ीबत

■ आयतुल्लाह मकारिम शीराज़ी

कमज़ोर लोगों का ख़तरनाक हथियार

ज़बान से जुड़ा हुआ एक बहुत ख़तरनाक और अहम साथ ही हर तरफ़ फैला हुआ गुनाह "ग़ीबत" है।

ग़ीबत यानी यह कि दूसरे लोगों के ऐसे छुपे ऐबों और कमज़ोरियों को बयान करना कि जिनका ज़ाहिर होना उन्हें पसंद न हो चाहे यह ऐब दीनी व अख़लाक़ी हों या रूही व समाजी या जिस्मानी कमी और शक्ल व सूरत वग़ैरा के बारे में हों या फिर जुड़े हुए लोगों जैसे बीवी, बच्चों, वालदैन वग़ैरा के लिबास, तर्ज़े लिबास, तर्ज़े ज़िंदगी वग़ैरा के बारे में हों।

ग़ीबत की ख़ास वजहें

ग़ीबत की अहम वजहें यह हैं:

1- कीना और इंतेक़ाम का जज़्बा: कुछ लोगों को अपने सीने में दहकती हुई आग और इंतेक़ाम के जज़्बे को ख़ामोश करने का आसान और सस्ता रास्ता सामने वाले शख़्स की ग़ीबत, उसकी बेइज़्ज़ती और समाजी हैसियत को बरबाद करने के अलावा कुछ और नहीं दिखता।

2- हसद: हासिद हमेशा यही चाहता है कि सामने वाले की तमाम बुलंदियाँ और अच्छाईयाँ सिरे से ख़त्म हो जाएं और जब उसको ऐसा होता नज़र आता है तो वह उसकी ग़ीबत करके अपना मक़सद हासिल करना और अपने हसद की आग को किसी क़द्र बुझाना चाहता है।

3- ग़लती को छुपाना: दूसरों के ऐबों को ज़ाहिर करके इन्सान अपनी ग़लती और ऐबों को छुपाना और उनको हल्का बनाकर पेश करना चाहता है।

4- दूसरों का मज़ाक़ उड़ाना: हक़ीक़त यह है कि दूसरों का मज़ाक़ उड़ाने के बहुत से फ़ैक्टर होते हैं लेकिन अगर किसी शख़्स में यह सिफ़त पैदा हो जाए तो वह शख़्स अपनी इस सिफ़त को ग़ीबत के ज़रिए ही अमल में लेकर आता है।

5- तफ़रीह और टाइम-पास: बहुत से लोग ऐसे भी होते हैं जिनमें ऊपर बयान किए गए फ़ैक्टर्स में से कोई भी नहीं पाया जाता लेकिन यह लोग सिर्फ़ वक़्ती तफ़रीह और हंसी मज़ाक़ के लिए दूसरों के ऐबों और कमियों को बयान करते रहते हैं क्योंकि लोगों की नज़र में ग़ीबत की तरह मज़ेदार गुनाह बहुत ही कम पाया जाता है।

यह बात भी ख़ास है कि लोग न सिर्फ़ यह कि तफ़रीह और वक़्त गुज़ारी से बल्कि दूसरों को हंसाने और अपनी तफ़रीह में शरीक होने पर भी लुत्फ़अंदोज़ होते हैं।

6- खोजबीन: यह सिफ़त जो कि इन्सान की एक अहम सिफ़त है, उसको इस बात पर उभारती है कि वह दूसरे लोगों को ज़बरदस्ती कुछ लोगों के ऐबों और कमियों को ज़ाहिर करने पर मजबूर करे और शायद कुछ लोगों को ग़ीबत से हासिल होने वाला मज़ा इस सिफ़त के ग़लत तरीक़े से पूरा किए जाने से हासिल होता है। यह लोग दूसरे लोगों के राज़ और ऐबों को जानकर एक क़िस्म का मज़ा हासिल करते हैं।

यह बात भी बहुत ज़रूरी है कि इस पर ध्यान दिया जाए कि बहुत से मौक़ों पर यह फ़ैक्टर्स इन्सान के अंदर बहुत सादा और नेचरल तौर पर पैदा होते हैं क्योंकि इन्सानी फ़ितरत और उसकी शख़्सियत उसको इस बात की इजाज़त नहीं देती है कि यह फ़ैक्टर्स उसके अंदर आसानी से फल-फूल सकें। इसलिए वह उन फ़ैक्टर्स की शक्ल व सूरत बदलकर और उन्हें नही अनिल मुन्कर का लिबास पहनाकर लोगों की ग़ीबत करने लगता है और यह सोचता है कि एक बहुत मुक़द्दस अमल अंजाम दे दिया है जबकि इस तरह की ग़ीबत की असल वजह ऊपर बयान किए गए फ़ैक्टर्स में से ही कोई फ़ैक्टर होता है कि रूहे इन्सानी विजदाने इन्सानी को फ़रेब देने के लिए और अज़ाब व सज़ा के ख़ौफ़ से उस ग़ीबत की शक्ल व सूरत तबदील कर देती है और एक दूसरे अंदाज़ से पेश कर देती है। इस तरह की ग़ीबत दूसरी तमाम ग़ीबतों से ज़्यादा ख़तरनाक होती है और इसका इलाज भी मुश्किल हो जाता है क्योंकि इस तरह की ग़ीबत में ग़ीबत करने वाला शख़्स यही समझता रहता है कि वह एक मुक़द्दस अमल अंजाम दे रहा है जबकि हक़ीक़त में वह ग़ीबत ही कर रहा होता है।

ग़ीबत का असर और नुक़सान

आयतों और हदीसों में इस अहम मसले की तरफ़ बहुत ज़ोर दिया गया है जबकि इसके उलट आमतौर पर लोग इस रोज़मर्रा मसले से आँखें बंद

कर लेते हैं। क़ुरआन मजीद और रिवायतों में ग़ीबत के बारे में बहुत सख़्त अलफ़ाज़ इस्तेमाल किए गए हैं कि उनमें से यहाँ सिर्फ़ दस ही पेश किए जा रहे हैं। शायद यह दस बातें ही इस गुनाह की अहमियत को समझने के लिए काफ़ी होंगी।

1- ग़ीबत क़ुरआन की रौशनी में

क़ुरआन मजीद ने ग़ीबत को एक ग़ैर इन्सानी अमल माना है यहाँ तक कि इस अमल को अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाने के बराबर बताया है, आदमख़ोरी और वह भी मरे हुए की जिसको शायद ही कोई अंजाम दे। क़ुरआन मजीद ने 'आदमख़ोरी' का लफ़्ज़ सिर्फ़ ग़ीबत करने वाले शख़्स के ही लिए कहा है और इस तश्बीह की वजह साफ़ है क्योंकि इस्लाम में किसी मुसलमान की इज़्ज़त व आबरू उसके ख़ून ही की तरह एहतेराम के लाएक़ है जैसा कि हदीस में भी है, "एक मुसलमान की हर चीज़ दूसरे मुसलमान पर हराम है उसका ख़ून, उसका माल और उसकी इज़्ज़त।" [1]

ज़ाहिर है कि ग़ीबत एक मुसलमान की इज़्ज़त व आबरू को ख़त्म कर देती है। ध्यान देने की बात यह है कि क़ुरआने मजीद में पहले सूए-ज़न, उसके बाद तजस्सुस और उसके बाद ग़ीबत से रोका गया है,

"ऐ ईमान वालो! अक्सर गुमानों से बचो कि कुछ गुमान गुनाह का दर्जा रखते हैं और ख़बरदार एक दूसरे के ऐब तलाश न करो और एक दूसरे की ग़ीबत भी न करो कि क्या तुम में से कोई यह बात पसंद करेगा कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए। यक़ीनन तुम इसे बुरा समझोगे तो अल्लाह से डरो कि बेशक अल्लाह तौबा का क़ुबूल करने वाला और मेहरबान है।" [2]

शायद ऐसा इसलिए हो कि इन्सान पहले बदगुमानी का शिकार होता है और बदगुमानी उसको खोजबीन पर उभारती है। खोजबीन का नतीजा यह होता है कि इन्सान दूसरों के छुपे ऐबों को जान जाए जिसका रिज़ल्ट ग़ीबत है।

2- ग़ीबत और ईमान एक जगह जमा नहीं हो सकते

एक हदीस में है, "बरा कहते हैं कि रसूले ख़ुदा(स) हम लोगों को ख़िताब कर रहे थे और इतनी बुलंद आवाज़ में ख़ुतबा दे रहे थे कि घरों में औरतें भी सुन रही थीं। आप ने फ़रमाया कि ऐ लोगो! ज़बानी ईमान लाए हो न कि क़लबी! दूसरे मुसलमानों की ग़ीबत न करो और उनके छुपे ऐबों को मत ढूँढो क्योंकि अगर कोई अपने मज़हबी भाईयों की छुपी बातों को ढूँढता है तो ख़ुदा उसकी छुपी बातों को सामने ले आता है और उसको ख़ुद उसके घर ही में रुसवा कर देता है।" [3]

3-ग़ीबत बुराईयों को फैलाने के बराबर है

इमाम जाफ़र सादिक़(अ) फ़रमाते हैं, "ऐसा शख़्स जो किसी मोमिन के बारे में वह कहे जो उसने देखा या सुना है वह उन लोगों में गिना जाता है जिनके बारे में ख़ुदावंदे आलम ने फ़रमाया है, "जो लोग यह चाहते हैं कि ईमान वालों में बदकारी का चर्चा फैल जाए उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।" [4]

इसकी वजह भी साफ़ है क्योंकि दूसरे लोगों के छुपे ऐबों का तज़किरा करना, इस बात की वजह बन जाता है कि दूसरे लोगों के अंदर भी गुनाह करने की हिम्मत पैदा हो जाती है जिसका नतीजा बदकारी का रिवाज होगा।

4- ग़ीबत, पाकीज़गी के मुख़ालिफ़ आमाल से ज़्यादा नुक़सानदेह है

हदीस में है, "ग़ीबत ज़िना से ज़्यादा बदतर है।" [5]

इस शिद्दत की वजह इसी हदीस के साथ बयान की गई है कि ज़िनाकार हो सकता है कि तौबा कर ले लेकिन ग़ीबत करने वाला तौबा के ज़रिए उस वक़्त तक माफ़ नहीं किया जा सकता जब तक कि वह शख़्स उसको माफ़ न कर दे जिसकी ग़ीबत की गई है।

हो सकता है कि यह बात भी ज़िना के मुक़ाबले में ग़ीबत को बड़ा गुनाह होने को साबित करती हो कि ग़ीबत समाजी मेल मोहब्बत, रवादारी, आपस में मेलजोल, मोहब्बत वग़ैरा को ख़त्म कर देती है जिसकी वजह से समाज को भारी नुक़सान उठाना पड़ता है। लेकिन इफ़्फ़त व पाकीज़गी के ख़िलाफ़ उठाए जाने वाले क़दम अपनी सारी अहमियत और असर के बावजूद समाज पर इतना असरअंदाज़ नहीं होते।

5-ग़ीबत आमाल और इबादत को क़ुबूल होने से रोकती है

हदीस है कि कभी-कभी बंदों के आमाल सूरज की किरनों की तरह रौशन होते हैं और आसमान की तरफ़ परवाज़ करते हैं लेकिन उन्हें ज़मीन की तरफ़ पलटा कर बंदों के चेहरों पर मार दिया जाता है। इसी बीच एक फ़रिश्ता कहता है, "मेरे रब ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं ग़ीबत करने वाले के नेक आमाल को ख़ुदा की तरफ़ न जाने दूँ।"

इसकी वजह यह हो सकती है कि बहुत सी हदीसों में कहा गया है कि ऐसे लोगों के आमाल ख़ुदा की बारगाह में बिल्कुल क़ुबूल नहीं होंगे जिनकी गर्दनों पर दूसरों के हक़ बाक़ी होंगे और जैसा कि बयान किया जा चुका है, ग़ीबत यानी

दूसरों की इज़्ज़त व आबरू पर हमला करना है।

6- ग़ीबत इस्लामी भाईचारे के ख़िलाफ़ है

पैग़म्बरे अकरम[स॰] फ़रमाते हैं, ''एक दूसरे के साथ हसद और कीने से काम मत लो, एक दूसरे की ग़ीबत मत करो और ख़ुदा के बंदो! आपस में भाईयों की तरह रहो।'' [6]

आख़िरी जुमले से यह नतीजा मिलता है कि हसद, कीना, अदावत और ग़ीबत का अपोज़िट, ख़ुदा की बंदगी और इस्लामी भाईचारा है। ज़ाहिर है कि भाईचारे की पहली पहचान उलफ़त व मोहब्बत है जो ग़ीबत के बिल्कुल मुख़ालिफ़ है।

इस रिवायत में दूसरी दो सिफ़तों का ज़िक्र शायद इसलिए किया गया है कि इनकी वजह से ही ग़ीबत शुरु होती है क्योंकि आमतौर पर हसद, अदावत और कीने की वजह बनता है और अदावत व कीना ग़ीबत की वजह बनता है।

7-ग़ीबत, नेक आमाल को तबाह कर देती है

इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] ने फ़रमाया है, ''ग़ीबत हर मुसलमान पर हराम है... ग़ीबत, नेक आमाल को इस तरह ख़त्म कर देती है जिस तरह आग लकड़ी को।'' [7]

एक दूसरी हदीस में रसूले ख़ुदा फ़रमाते हैं, ''अगर किसी की गर्दन पर किसी दीनी भाई की इज़्ज़त या माल से मुताल्लिक़ कोई हक़ हो तो ज़रूरी है कि वह उस शख़्स से माफ़ कर देने के लिए कहे, इस से पहले कि वह दिन आ जाए कि जिस दिन दिरहम व दीनार की कोई हैसियत नहीं होगी। उस दिन उसके नेक आमाल ले लिए जाएंगे और अगर उसके पास नेक आमाल नहीं होंगे तो सामने वाले शख़्स के बुरे आमाल उसके हिस्से में डाल दिए जाएंगे।'' [8]

ग़ीबत, नेक आमाल को ख़त्म कर देती है, ऐसा इस वजह से भी हो सकता है कि ग़ीबत उस शख़्स की एक अहम तरीन रूहानी दौलत को बरबाद कर देती है जिसकी ग़ीबत की जाती है यह बरबाद होने वाली दौलत उसकी समाजी हैसियत और इज़्ज़त व आबरू होती है इसीलिए हदीस में कहा गया है कि जो शख़्स ग़ीबत करता है उसके नेक आमाल उस शख़्स के नाम-ए-आमाल में डाल दिए जाते हैं जिसकी ग़ीबत की जाती है और इस तरह उस शख़्स को अपनी होने वाली ग़ीबत के ज़रिए जितना नुक़सान पहुँचता है उतना ही बुरे आमाल के नेक आमाल में तबदील होने से बराबर हो जाता है।

8-ग़ीबत, इबादात की अहमियत को कम कर देती है

कुछ रिवायतों से पता चलता है कि ग़ीबत वुज़ू और रोज़े को बातिल कर देती है।

रसूले इस्लाम[स॰] फ़रमाते हैं, ''मस्जिद में नमाज़ का इन्तेज़ार करते हुए बैठना इबादत है जब तक कि कोई हदस सरज़द न जो जाए।'' सवाल किया गया कि ऐ रसूले ख़ुदा[स॰] हदस क्या है? फ़रमाया, ''ग़ीबत।'' [9]

एक दूसरी जगह आप[स॰] फ़रमाते हैं, ''अगर कोई किसी मुसलमान की ग़ीबत करता है तो उसका रोज़ा और वुज़ू बातिल हो जाता है।'' [10]

इसकी वजह यह हो सकती है कि इससे इबादत और दिल की नूरानियत का एक बड़ा हिस्सा बरबाद हो जाता है साथ ही ग़ीबत करने वाला ख़ुदा के क़रीब होने के बजाए ख़ुदा से दूर हो

لا يَغْتَبْ بَعْضُكُم بَعْضاً
أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتاً فَكَرِهْتُمُوهُ
وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَحِيم

एक दूसरे की ग़ीबत भी न करो कि क्या तुम में से कोई इस बात को पसंद करेगा कि अपने मुरदार भाई का गोश्त खाए। यक़ीनन तुम इसे बुरा समझोगे तो अल्लाह से डरो कि अल्लाह बहुत बड़ा तौबा का क़ुबूल करने वाला और महरबान है।

(सूरए हुजरात/12)

जाता है।

9- ग़ीबत का कुछ असर तौबा के बाद भी बाक़ी रह जाता है

हदीसों में है, ''ख़ुदावंदे आलम ने जनाबे मूसा को 'वही' की कि ग़ीबत करने वाला अगर तौबा कर ले तो जन्नत में दाख़िल होने वालों में सबसे आख़िर में दाख़िल होगा और अगर तौबा न करे तो जहन्नम में दाख़िल होने वालों में सबसे पहले दाख़िल होगा।''[11]

इस हदीस का मतलब यह हो सकता है कि ग़ीबत के ज़रिए इन्सान की इज़्ज़त व आबरू ख़त्म हो जाती है यानी ऐसा सरमाया जो किसी भी दुनियावी सरमाए के मुक़ाबले में कहीं बड़ा है और यही वजह है कि ग़ीबत करने वाला दूसरे लोगों के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा सख़्तियाँ बर्दाश्त करेगा और देर में जन्नत में जाएगा। यही वजह है कि कुछ रिवायतों में है कि किसी मुसलमान की इज़्ज़त पर उंगली उठाना सबसे बड़ा सूद है जैसा कि अनस रसूले ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि आप[अ०] फ़रमाते हैं, ''सबसे बड़ा सूद किसी मुसलमान की बेइज़्ज़ती है।''[12]

1-मुहज्जतुल बैज़ा, 5/251 2-सूरए हुजरात/12, 3-मुहज्जतुल बैज़ा, 5/252, 4-बिहार, 75/240, 5-बिहार, 75/222, 6-मुस्तदरकुल वसाएल, 9/118, 7-बिहार, 75/257, 8-मुहज्जतुल बैज़ा, 5/273, 9-मुहज्जतुल बैज़ा, 5/255, 10-मुहज्जतुल बैज़ा, 5/254, 11-बिहार, 75/222, 12-बिहार 75/222

ज़बान का रोल

■ समीना फ़ातिमा

ख़ुदा की नेमतों में से एक अज़ीम नेमत ज़बान भी है। इन्सान अपनी ज़बान के पीछे छिपा होता है। जब इन्सान ख़ामोश रहता है तो उसे कोई पहचान नहीं सकता कि वह मोमिन है या मुनाफ़िक़, शरीर है या शरीफ़। अगर यह ज़बान ख़ुदा की इबादत में खुले तो इन्सान को नेक, मोमिन और मुत्तक़ी बना देती है। अल्लाह ने सूरए रहमान आयत-2 में ज़बान की अज़मत की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया है, ''अल्लाह ने इन्सान को पैदा किया, बोलना सिखाया।'' बयान के मायने हैं किसी चीज़ से पर्दा हटाना।

ज़बान इन्सान के लिए सारे पर्दों को हटाकर उसमें छिपे हुए सीक्रेट को खोल देती है। अगर ज़बान न हो तो इन्सान जानवरों की तरह गूँगा हो जाए। गाय-भैंस की तरह न किसी की बात समझ पाए और न अपनी बात समझा पाए। रसूले ख़ुदा[स०] ने फ़रमाया है, ''जाहिल का दिल उसकी ज़बान में होता है और अक़्लमंद की ज़बान उसके दिल में।'' क़ुरआन करीम में है, ''तुम अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करो किसी का दिल न दुखाओ।'' हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया, ''ज़बान एक दरिंदे की तरह है। इसे खुला छोड़ दिया तो यह एक दिन तुम्हें ही चबा जाएगी।'' ज़बान से एक गुनाह ग़ीबत भी होता है। हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, ''ग़ीबत जहन्नुम की जगह बनाती है।'' एक दूसरी जगह पर फ़रमाया, ''जिसकी ज़बान मीठी होगी उसके दोस्त ज़्यादा होंगे।'' ग़ीबत मुनाफ़िक़ की पहचान है। कोई भी इन्सान बुराई करे तो मोमिन नहीं बनता बल्कि बुराई को ख़त्म करने से मोमिन बनता है। बुराई ख़त्म करने का तरीक़ा यह है कि बुराई करते वक़्त यह सोचे कि ख़ुदा हमें देख रहा है और एक दिन ख़ुदा इसका हिसाब लेगा, इन्सान ऐसा सोचे तो गुनाह कभी नहीं होंगे। ज़बान इन्सान को इज़्ज़त भी दिला सकती है और ज़िल्लत भी। ज़बान ज़िक्रे ख़ुदा में खुले तो गुनाहों से निजात दिला देती है और ज़बान शैतानी रास्ते पर चले तो वह गुमराह भी कर सकती है। इसलिए ज़बान के फ़ायदे भी हैं नुक़्सान भी। ज़बान माहौल बिगाड़ने और बनाने में जितना आगे-आगे रहती है शायद ही कोई और जिस्म का हिस्सा इतना अहम रोल अदा कर पाए।

आज इन्सान ज़बान के ज़रिए झूठ को सच, सच को झूठ बनाकर इन्सानियत को धोखा दे रहा है जिसकी वजह से यह पता नहीं चलता कि क़ुसूरवार कौन है और बेक़सूर कौन? तबाही और बर्बादी में भी सबसे अहम रोल ज़बान ही का होता है।

इमामों ने इससे होने वाले गुनाहों से बचने की बहुत ताकीद की है। उलमा ने भी बताया है कि ज़बान को फ़ुज़ूल, ज़रूरत से ज़्यादा और झूठ बोलना, कड़वी बातें करना, झूठे वादे, ग़ीबत, किसी का राज़ फ़ाश करना और गाली-गलौज से महफ़ूज़ रखना बहुत ज़रूरी है। ज़बान को अच्छी और नेक बातों का आदी बनाना चाहिए और जब ज़रूरत हो तब ही बोलना चाहिए। इसलिए शायद रसूल[अ०] फ़रमाते हैं, ''जब अक़्ल कामिल हो जाती है तो बातें कम हो जाती हैं।'' ख़ुदा हमें झूठ, ग़ीबत, जैसी हर बुराई से महफ़ूज़ रखे और जब भी हमारी ज़बान खुले नेक बातें, इस्तग़फ़ार और ज़िक्रे इलाही के लिए खुले!

GULSHAN

MEHANDI & HERBALS

IRFAN ALI PRADHAN
403 & 404, A Block
REGALIA HEIGHTS
Ahmadabad Palace Road
KOHE-FIZA
BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.
+919893030792, +917554220261

MOHTARMA "GULSHAN"
G-1, Krishna Apartment
Plot No. 2, Firdaus Nagar
Bairasia Road, BHOPAL
+91-755-2739111

RNI No: Title Code: UPHIN41897

मरयम

का एक साल पूरा होने के मौक़े पर

हम आपके घर लेकर आए हैं **ख़ूबसूरत** और **क़ीमती**

तोहफ़े

पहला इनाम	:	उमरा
दूसरा इनाम	:	फ़्रिज
तीसरा इनाम	:	माइक्रोवेव
चौथा इनाम	:	मोबाईल सेट
पांचवां इनाम	:	डिनर सेट
छटा इनाम	:	ज्वैलरी
सातवां इनाम	:	मिक्सर
आठवां इनाम	:	पंखा
नवां इनाम	:	लेमन सेट
दसवां इनाम	:	घड़ी

दिसम्बर 2011 से मरयम में हर महीने एक कूपन छपेगा।
10 कूपन जमा करके मरयम की तरफ़ से दी जाने वाली आख़िरी तारीख़ तक कूपन भेजने वालों में से ड्रॉ के ज़रिए 10 लोगों को सिलेक्ट करके इनाम दिए जाएंगे।
अगर आप मरयम के सब्सक्राईबर नहीं हैं तो जल्दी कीजिए।
ख़ुद भी सब्सक्राईब कीजिए और अपने रिश्तेदारों व दोस्तों को भी सब्सक्राईब कराईए और इस स्कीम से फ़ाएदा उठाने का मौक़ा हाथ से मत जाने दीजिए!

नियम व शर्तें:

1. मरयम में हर महीने अलग-अलग तरह के कूपन छापे जाएंगे। दिसम्बर 2011 से नवम्बर 2012 तक 10 कूपन जमा करके भेजने वालों को ही इस ड्रॉ में शामिल किया जाएगा।
2. मरयम की टीम का फ़ैसला ही आख़िरी होगा और इस बारे में किसी को कोई एतेराज़ का हक़ नहीं होगा।
3. इस सिलसिले में किसी भी तरह की अदालती कार्यवाई सिर्फ़ लखनऊ की अदालत में ही की जा सकेगी।

Contact No.:
+91-522-4009558
+91-9956620017 (Lucknow)
+91-9892393414 (Mumbai)
maryammonthly@gmail.com